प्रश्न बैंक-सह-उत्तर पुस्तक

Question Bank–Cum–Answer Book

2023

Class-12

अर्थशास्त्र
(ECONOMICS)

- ✓ व्यष्टि अर्थशास्त्र
- ✓ समष्टि अर्थशास्त्र

झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi

Jharkhandlab.com

प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक
Question Bank-Cum-Answer Book

Class - 12

अर्थशास्त्र
Economics

Jharkhandlab.com

झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
नवोन्मेष शोध नेतृत्व
JCERT

2023

झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi

प्रथम संस्करण : माह अगस्त 2023, श्रावण विक्रम संवत् 2080

© झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड

jharkhandlab.com

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, छायाप्रतिलिपि अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण या जिल्द के साथ अथवा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।

- **क्रय–विक्रय दण्डनीय अपराध**

झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड द्वारा प्रकाशित

प्राक्कथन

बच्चों के लिए निर्धारित अधिगम प्रतिफल प्राप्त करने का मार्ग सरल एवं सुगम होना आवश्यक है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड के द्वारा कक्षा 12 के सभी विषयों के लिए प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक का निर्माण बच्चों के अधिगम कौशल को सुगमतापूर्वक विकसित करने एवं झारखंड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा के लिए उन्हें तैयार करने के उद्देश्य से किया गया है। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में सरल भाषा एवं रुचिकर ढंग से विषय–वस्तु को स्पष्ट करते हुए प्रश्नोत्तर दिए गए हैं। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के माध्यम से बच्चों में न केवल ज्ञानजन्य प्रतिभा का विकास होगा बल्कि आज के इस प्रतियोगिता के दौर में भी वे अनुकूल सफलता पाएंगे। हमारे प्रयत्न की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि विद्यालय के शिक्षकवृन्द बच्चों की कल्पनाओं के साथ कितना जुड़ पाते हैं और विभिन्न प्रकार के प्रश्नोत्तरों को सीखने–सिखाने के दौरान अपने अनुभवों के साथ–साथ बच्चों के विचारों के साथ कैसे सामंजस्य बनाते हैं।

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में झारखंड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों के विविध प्रकारों यथा– बहुवैकल्पिक, अतिलघु उत्तरीय, लघु उत्तरीय एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न आदि के अंतर्गत पर्याप्त मात्रा में प्रश्नोत्तर समाहित किए गए हैं ताकि इसके अध्ययन से छात्रों में ना केवल विषय–वस्तु की समझ विकसित हो बल्कि उन्हें सीखने के प्रतिफल की भी प्राप्ति हो, साथ ही वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा के लिए उनकी अच्छी तैयारी हो सके और वे परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करते हुए सफलता प्राप्त कर सकें।

अंत में मैं इन पुस्तकों के लेखकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ।

के० रवि कुमार भा.प्र.से.
सचिव
स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड

Jharkhandlab.com

भूमिका

प्रिय शिक्षक एवं विद्यार्थी,

जोहार !

हमें कक्षा 12 के विभिन्न विषयों के प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक से आपका परिचय कराने में प्रसन्नता हो रही है। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों के विषयवार एवं अध्यायवार अधिगम बिन्दुओं को समायोजित करते हुए झारखण्ड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा में पूछे जानेवाले प्रश्नों के विविध प्रकारों के अंतर्गत पर्याप्त मात्रा में प्रश्नों का समावेश किया गया है। इस विषय आधारित प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के निर्माण का उद्देश्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को और अधिक रुचिकर, सरल एवं प्रभावशाली बनाना तथा विद्यार्थियों को वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा की तैयारियों में सहयोग प्रदान करना है, जिससे सकारात्मक रूप से छात्रों को सीखने के प्रतिफल प्राप्त हों और वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा में वे बेहतर प्रदर्शन कर सकें। राज्य के विभिन्न जिलों से चयनित अनुभवी शिक्षकों के द्वारा इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक का निर्माण किया गया है।

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ यह है कि इनमें प्रश्नों के उत्तर को सरल भाषा में प्रस्तुत करते हुए वैचारिक समझ (Conceptual Understanding) विकसित करने पर जोर दिया गया है। साथ ही इन पुस्तकों में झारखण्ड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा – 2023 के प्रश्नोत्तर को भी समाहित किया गया है। इन पुस्तकों के माध्यम से न केवल विद्यार्थियों की प्रतिभा में निखार आएगा बल्कि वर्तमान समय के प्रतियोगिताओं के इस दौर में वे अनुकूल एवं अपेक्षित सफलता प्राप्त करने में भी सक्षम हो सकेंगे। आशा है कि यह प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक आपको पसंद आएगी एवं आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं के साथ।

किरण कुमारी पासी भा.प्र.से.
निदेशक
झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
राँची, झारखण्ड

jharkhandlab.com

पाठकों से अनुरोध

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के निर्माण में काफी सावधानियाँ बरती गई है। इसके बावजूद यदि किसी प्रकार की अशुद्धियाँ मिले या कोई सुझाव हो तो इस email ID :- jcertquestionbank@gmail.com पर सूचित करें, ताकि अगले मुद्रण में इसे शुद्ध रूप से प्रस्तुत किया जा सके।

Jharkhandlab.com

प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक निर्माण समिति

मुख्य संरक्षक

श्री के० रवि कुमार (भा.प्र.से.)
सचिव
स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड

संरक्षक

श्रीमती किरण कुमारी पासी (भा.प्र.से.)
निदेशक
झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

अवधारणा एवं मार्गदर्शन

श्री मुकुंद दास उपनिदेशक (प्र.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची	**श्री बाँके बिहारी सिंह** सहायक निदेशक (अ.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची	**श्री मसुदी टुडू** सहायक निदेशक (अ.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

समन्वय एवं निर्देशन

डॉ0 नीलम रानी
संकाय सदस्य, जे.सी.ई.आर.टी., राँची
(टी.जी.टी., सामाजिक विज्ञान, राजकीयकृत उत्क्रमित उच्च विद्यालय पैतानो, जलडेगा, सिमडेगा)

सहयोग

श्री मणिलाल साव
संकाय सदस्य, जे.सी.ई.आर.टी., राँची
(पी.जी.टी. जीव विज्ञान, के. एन. +2 उच्च विद्यालय हरनाद, कसमार, बोकारो)

Jharkhandlab.com

प्रश्न बैंक निर्माण कार्य समिति

डॉ. वीणा कुमारी जायसवाल
PGT (अर्थशास्त्र)
राजकीयकृत हंसराज वाधवा +2 उच्च विद्यालय, नामकुम, राँची

श्री उज्जवल कुमार जायसवाल
PGT (अर्थशास्त्र)
एस0एस0 +2 उच्च विद्यालय सिल्ली, राँची

श्री रतन लाल महतो
PGT (अर्थशास्त्र)
राजकीयकृत +2 उच्च विद्यालय राहे, सोनाहातू, राँची

सुश्री प्रियंका नीलिमा खेस्स
PGT (अर्थशास्त्र)
राजकीयकृत +2 उच्च विद्यालय पिस्का नगड़ी, राँची

Jharkhandlab.com

Jharkhandlab.com

विषय सूची

व्यष्टि अर्थशास्त्र		पृष्ठ संख्या
अध्याय 1	परिचय	3–5
अध्याय 2	उपभोक्ता के व्यवहार का सिद्धांत	6–14
अध्याय 3	उत्पादन तथा लागत	15–17
अध्याय 4	पूर्ण प्रतिस्पर्धा की स्थिति में फर्म का सिद्धांत	18–23
अध्याय 5	बाज़ार संतुलन	24–27
अध्याय 6	प्रतिस्पर्धारहित बाज़ार	28–30
समष्टि अर्थशास्त्र		
अध्याय 1	परिचय	33–34
अध्याय 2	राष्ट्रीय आय का लेखांकन	35–39
अध्याय 3	मुद्रा और बैंकिंग	40–45
अध्याय 4	आय और रोजगार का निर्धारण	46–51
अध्याय 5	सरकारी बजट एवं अर्थव्यवस्था	52–55
अध्याय 6	खुली अर्थव्यवस्था	56–58
	Solved Paper of JAC Annual Intermediate Examination - 2023	**59–71**

jharkhandlab.com

Jharkhandlab.com

व्यष्टि अर्थशास्त्र

Jharkhandlab.com

Jharkhandlab.com

अध्याय 1 परिचय

बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Question)

1. निम्न में से कौन अर्थव्यवस्था की केंद्रीय समस्या है?
a. साधनों का आवंटन
b. साधनों का कुशलतम उपयोग
c. आर्थिक विकास
d. उपर्युक्त सभी

2. अर्थशास्त्र की धन संबंधी परिभाषा किसने दी है?
a. एडम स्मिथ b. मार्शल
c. रॉबिंस d. पीगू

3. सबसे पहले माइक्रो शब्द का प्रयोग किसने किया?
a. मार्शल b. केन्स
c. रैगनर फ्रिश d. बोल्डिंग

4. निम्न में से कौन आर्थिक क्रिया का प्रकार है?
a. उत्पादन b. उपभोग
c. विनिमय d. उपर्युक्त सभी

5. आर्थिक समस्या को दर्शाने वाले वक्र को कहते हैं?
a. उत्पादन वक्र b. मांग वक्र
c. उदासीनता वक्र d. उत्पादन संभावना वक्र

6. उत्पादन संभावना वक्र का ढाल गिरता है-
a. बाएं से दाएं b. दाएं से बाएं
c. नीचे से ऊपर d. ऊपर से नीचे

7. अवसर लागत का वैकल्पिक नाम क्या है?
a. औसत लागत b. सीमांत लागत
c. मौद्रिक लागत d. आर्थिक लागत

8. आर्थिक समस्या मूल रूप से किस तथ्य की समस्या है?
a. उत्पादन की b. उपभोग की
c. चुनाव की d. इनमें से कोई नहीं

9. निम्न में से कौन उत्पादन के साधन हैं?
a. भूमि b. पूंजी
c. श्रम d. उपर्युक्त सभी

10. मिश्रित अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण निर्णय किसके द्वारा लिए जाते हैं?
a. बाजार द्वारा b. जनता द्वारा
c. सरकार द्वारा d. संस्था द्वारा

उत्तर - 1-d 2-a 3-c 4-d 5-d 6-a 7-d 8-c 9-d 10-c

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Very Short Question Answer)

प्रश्न 1. अर्थव्यवस्था की किन्ही दो केंद्रीय समस्याओं को लिखें?

उत्तर - किसी अर्थव्यवस्था की दो केंद्रीय समस्याएँ निम्न है -
i. किन वस्तुओं का उत्पादन किया जाए और कितनी मात्रा में?
ii. कैसे उत्पादन किया जाए?

प्रश्न 2. एक केंद्रीयकृत योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था के अंतर्गत योजना का निर्माण कौन करता है?

उत्तर - एक केंद्रीयकृत योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था में योजना का निर्माण सरकार या केंद्रीय सत्ता द्वारा किया जाता है।

प्रश्न 3. अर्थशास्त्र की दो व्यापक शाखाओं का नाम बताएं?

उत्तर - अर्थशास्त्र की दो व्यापक शाखाएं निम्न है-
i . व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा
ii. समष्टि अर्थशास्त्र।

प्रश्न 4. किस अर्थशास्त्री के अनुसार अर्थशास्त्र मानव कल्याण का शास्त्र है?

उत्तर - अल्फ्रेड मार्शल।

प्रश्न 5. व्यष्टि चर के दो उदाहरण दें।

उत्तर - व्याष्टि चर के दो उदाहरण निम्न है-
i. व्यक्तिगत फ़र्म तथा ii. एक उपभोक्ता का व्यवहार।

प्रश्न 6. समष्टि चर के दो उदाहरण दें।

उत्तर - समष्टि चर के दो उदाहरण निम्न हैं -
i. राष्ट्रीय आय तथा ii. कीमत स्तर।

प्रश्न 7. किस अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र एवं सार्वजनिक क्षेत्र का अस्तित्व होता है?

उत्तर - मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र एवं सार्वजनिक क्षेत्र का अस्तित्व होता है।

प्रश्न 8. एडम स्मिथ द्वारा रचित पुस्तक का नाम लिखें।

उत्तर - An Enquiry into the Nature and Causes of Wealth of Nations

प्रश्न 9. उस वक्र का नाम बताएं जो 2 वस्तुओं या सेवाओं के अधिकतम संभव उत्पादन संयोगों को दर्शाता है?

उत्तर - उत्पादन संभावना वक्र।

प्रश्न 10. आर्थिक क्रिया को स्पष्ट करें।

उत्तर - आर्थिक क्रियाओं का संबंध उन सभी क्रियाओं से है जो मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए सीमित साधनों जिनका वैकल्पिक प्रयोग हो सकता है का उपयोग करते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Short Question Answer)

प्रश्न 1. उत्पादन संभावना वक्र से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - एक अर्थव्यवस्था में उपलब्ध संसाधनों एवं उत्पादन की दी गई तकनीक द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओं के विभिन्न संयोंगो का उत्पादन किया जा सकता है। इन्हीं संयोंगो को दर्शाने वाली रेखा को उत्पादन संभावना वक्र कहते हैं। अर्थव्यवस्था में एक वस्तु के उत्पादन की मात्रा को बढ़ाने के लिए दूसरी वस्तु की उत्पादन की मात्रा को कम करना पड़ता है, यही कारण है कि उत्पादन संभावना

jharkhandlab.com

वक्र का झुकाव ऊपर से नीचे दाहिनी ओर होता है।

उदाहरण तालिका

उत्पादन संभावना	X वस्तु	Y वस्तु	MRTS
A	0	15	-
B	1	14	1:1
C	2	12	1:2
D	3	9	1:3
E	4	5	1:4
F	5	0	1:5

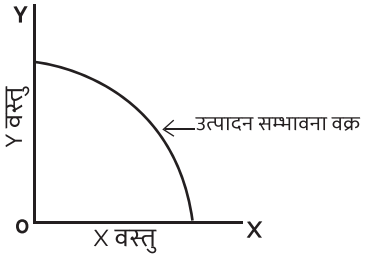

प्रश्न 2. एक अर्थव्यवस्था की तीन मुख्य केंद्रीय समस्याएं क्या है?

उत्तर - अर्थव्यस्था की तीन केन्द्रीय समस्याएँ इस प्रकार हैं-

(i) किन वस्तुओं का उत्पादन किया जाए और कितनी मात्रा में? - इस समस्या का संबंध विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन के बीच चुनाव की है, एक अर्थव्यवस्था में यह निश्चित करना होता है कि वह किन वस्तुओं का उत्पादन करें। जैसे उपभोग वस्तु या पूंजीगत वस्तु, युद्ध की वस्तु या सार्वजनिक वस्तु, शिक्षा पर व्यय या सैन्य सेवाओं पर व्यय।

(ii) वस्तुओं का उत्पादन कैसे करें ? - इस समस्या का संबंध उत्पादन की तकनीक के चुनाव से है। एक अर्थव्यवस्था को यह तय करना होता है कि वह उत्पादन की किस विधि का चुनाव करें - पूंजीगत तकनीक या श्रमगहन तकनीक। यहां तक कि कृषि कार्यों में भी तकनीक के चुनाव की समस्या आती है - विस्तृत खेती करें या गहन खेती करें। एक उत्पादक उसी उत्पादन विधि का चुनाव करता है जिसमें उसे न्यूनतम औसत उत्पादन लागत वहन करना पड़ता है।

(iii) उत्पादन किसके लिए करें ? – अर्थव्यवस्था में उत्पादित वस्तुओं की कितनी मात्रा किसे प्राप्त होगी, अर्थव्यवस्था के उत्पादन को व्यक्ति विशेष में किस प्रकार विभाजित किया जाए। यह आय के वितरण पर निर्भर करता है। यदि आय समान रूप से विभाजित होगी, तो वस्तुएँ और सेवायें भी समान रूप से विभाजित होंगी। निर्णायक सिद्धान्त यह है कि वस्तुओं और सेवाओं को इस प्रकार वितरित करें कि बिना किसी को बदतर बनाये किसी अन्य को बेहतर बनाया जा सके।

प्रश्न 3. सीमांत उत्पादन संभावना क्या है?

उत्तर- सीमान्त उत्पादन संभावना दो वस्तुओं के उन संयोगों को दर्शाती है, जिनका उत्पादन अर्थव्यवस्था के संसाधनों का पूर्ण रूप से उपयोग करने पर किया जाता है। यह एक वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई प्राप्त करने की अवसर लागत है।

प्रश्न 4. व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र में अंतर स्पष्ट करें।

उत्तर -

व्यष्टि अर्थशास्त्र	समष्टि अर्थशास्त्र
i. व्यष्टि अर्थशास्त्र में व्यक्तिगत स्तर पर आर्थिक समस्या का अध्ययन किया जाता है, जैसे- एक उपभोक्ता, एक उत्पादक तथा एक फर्म आदि।	i. समष्टि अर्थशास्त्र में संपूर्ण अर्थव्यवस्था की आर्थिक इकाइयों का अध्ययन होता है, जैसे- राष्ट्रीय आय, कीमत स्तर, समग्र मांग तथा समग्र पूर्ति आदि।
ii. व्यष्टि अर्थशास्त्र में व्यक्ति और व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन होता है।	ii. समष्टि अर्थशास्त्र में समाज और समाज के व्यवहार का अध्ययन होता है।
iii. इसका उद्देश्य साधनों के कुशल बंटवारे से संबंधित सिद्धांतों, समस्याओं एवं नीतियों का अध्ययन करना है।	iii. इसका उद्देश्य साधनों के पूर्ण रोजगार तथा उनके विकास से संबंधित सिद्धांतों, समस्याओं तथा नीतियों का अध्ययन करना है।
iv. इसे कीमत सिद्धांत के नाम से भी जाना जाता है।	iv. इसे आय एवं रोजगार सिद्धांत के नाम से भी जाना जाता है।

प्रश्न 5. केंद्रीयकृत योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था तथा बाजार अर्थव्यवस्था के भेद को स्पष्ट करें।

उत्तर -

बाजार अर्थव्यवस्था	केन्द्रीकृत योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था
1. इस अर्थव्यवस्था में माँग और पूर्ति की शक्तियों की स्वतन्त्र अन्तः क्रिया का पूर्ण वर्चस्व होता है।	इस अर्थव्यवस्था में माँग और पूर्ति की शक्तियों की स्वतन्त्र अन्तः क्रिया का अभाव होता है।
2. इसमें उत्पादन कारकों पर निजी स्वामित्व होता है।	इसमें उत्पादन कारकों पर सरकारी स्वामित्व होता है।
3. इसमें उत्पादन लाभ के उद्देश्य से किया जाता है।	इसमें उत्पादन समाज कल्याण के उद्देश्य से किया जाता है।
4. इसमें सरकार उत्पादकों और परिवारों के आर्थिक क्रियाविधि में कोई हस्तक्षेप नहीं करती।	इसमें सरकार उत्पादकों और परिवारों के आर्थिक क्रियाविधि में हस्तक्षेप करती है।

jharkhandlab.com

5. इसमें उपभोक्ता का प्रभुत्व होता है।	इसमें उपभोक्ता की प्रभुता बाधित होती है।
6. अधिकारों के कारण पूँजी के संचय की अनुमति दी गई है।	यहाँ पूँजी के संचय की अनुमति नहीं दी गई है।
7 संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, फ्रांस, जापान आदि।	चीन, रूस आदि

प्रश्न 6. अवसर लागत से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - किसी साधन की अवसर लागत का अर्थ उसके दूसरे सर्वश्रेष्ठ वैकल्पिक प्रयोग से है। इसका अर्थ यह है कि साधन सीमित होते हैं जिनके वैकल्पिक प्रयोग हो सकते हैं। जब साधन का प्रयोग किसी एक वस्तु के उत्पादन में बढ़ाया जाता है तो दूसरी वस्तु का उत्पादन कम करना पड़ता है। इस प्रकार किसी एक वस्तु की अवसर लागत दूसरी वस्तु की वह मात्रा होती है जिसका त्याग करना पड़ता है। अवसर लागत को आर्थिक लागत भी कहते हैं।

प्रश्न 7. आर्थिक समस्या क्या है ? यह क्यों उत्पन्न होती है?

उत्तर - आर्थिक समस्या मूल रूप से चुनाव की समस्या है। आर्थिक समस्या उत्पन्न होने के कारण -

i. **असीमित आवश्यकताएं-** मानवीय आवश्यकताएं असीमित होती है। एक आवश्यकता को पूर्ण करते ही दूसरी आवश्यकताएं उत्पन्न हो जाती हैं। एक समय में मनुष्य की सभी आवश्यकताओं को संतुष्ट नहीं किया जा सकता है।

ii. **आवश्यकताओं की तीव्रता में अंतर** - मानव की सभी आवश्यकताओं की तीव्रता एक सी नहीं होती है, अर्थात कुछ अधिक महत्वपूर्ण एवं कुछ कम महत्वपूर्ण होती है। अधिक महत्व वाले आवश्यकताओं की तीव्रता अधिक होती है

iii. **साधन सीमित होते हैं** - साधन सीमित होते हैं का अर्थ है कि साधनों की पूर्ति इनकी मांग की तुलना में कम होती है।

iv. **सीमित साधनों के वैकल्पिक प्रयोग** - साधन सीमित होते हैं और इनके वैकल्पिक प्रयोग हो सकते हैं। जैसे- यदि किसी के पास ₹ 500 हैं तो वह इससे एक शर्ट या एक जोड़ी जूता या एक किताब खरीद सकता है।

v. **चुनाव की समस्या-** सीमित साधनों से सभी आवश्यकताओं को पूरा नहीं किया जा सकता है। अतः साधन को किस आवश्यकता की पूर्ति में कितनी मात्रा में प्रयोग किया जाए यह समस्या उत्पन्न होती है, इसे ही चुनाव की समस्या कहते हैं।

jharkhandlab.com

अध्याय 2 उपभोक्ता के व्यवहार का सिद्धांत

बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Question)

1. उपभोक्ता व्यवहार का अध्ययन किया जाता है -

a. व्यष्टि अर्थशास्त्र में b. समष्टि अर्थशास्त्र में
c. आय विश्लेषण में d. इनमे से कोई नहीं

2. किसी वस्तु के अंदर छुपा वह गुण जो मानवीय आवश्यकता को संतुष्ट करता है, कहते हैं ?

a. उपभोग b. उत्पादन
c. उपयोगिता d. गुण

3. जब कुल उपयोगिता अधिकतम होती है, तब सीमांत उपयोगिता होती है -

a. धनात्मक b. शून्य
c. ऋणात्मक d. इनमें से कोई नहीं

4. निम्न में से किसे गोसेन का प्रथम नियम कहा जाता है?

a. मांग का नियम
b. उपभोक्ता बचत
c. सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम
d. सम सीमांत उपयोगिता नियम

5. सीमांत उपयोगिता को ज्ञात किया जा सकता है?

a. $\Delta TU/\Delta Q$ b. $\Delta MU/\Delta Q$
c. $\Delta Q/\Delta MU$ d. $\Delta Q/\Delta TU$

6. उपयोगिता की मुख्य विशेषताएं कौन सी हैं?

a. उपयोगिता एक मनोवैज्ञानिक धारणा है
b. उपयोगिता का विचार सापेक्षिक है
c. उपयोगिता व्यक्तिपरक होती है
d. उपर्युक्त सभी

7. उपयोगिता का क्रमवाचक सिद्धांत के प्रतिपादक कौन है?

a. पीगू b. हिक्स एवं ऐलन
c. मार्शल d. रिकार्डो

8. किसी एक वस्तु की सभी इकाइयों से प्राप्त होने वाली उपयोगिता की योग को क्या कहते हैं?

a. सीमांत उपयोगिता b. औसत उपयोगिता
c. उपभोक्ता बचत d. कुल उपयोगिता

9. जब कुल उपयोगिता घटने लगती है तो सीमांत उपयोगिता होती है-

a. धनात्मक b. ऋणात्मक
c. शून्य d. इनमें से कोई नहीं

10. अधिमान वक्र होता है

a. मूल बिंदु की ओर उन्नतोदर
b. मूल बिंदु की ओर अवनतोदर
c. दोनों सत्य
d. इनमें से कोई नहीं

11. अधिमान वक्र मूल बिंदु की ओर उन्नतोदर होती है क्योंकि-

a. सीमांत प्रतिस्थापन की दर घटती हुई होती है
b. सीमांत प्रतिस्थापन की दर बढ़ती हुई होती है
c. सीमांत प्रतिस्थापन की दर स्थिर होती है
d. इनमें से कोई नहीं

12. अधिमान वक्र एक सीधी रेखा होगी यदि -

a. सीमांत प्रतिस्थापन की दर घटती हुई होगी
b. सीमांत प्रतिस्थापन की दर बढ़ती हुई होगी
c. सीमांत प्रतिस्थापन की दर स्थिर होगी
d. सीमांत प्रतिस्थापन की दर शून्य होगी

13. बजट रेखा की ढाल कैसी होती है?

a. शुन्य b. धनात्मक
c. ऋणात्मक d. अनंत

14. बजट रेखा की ढाल होती है-

a. $-P_x/P_y$ b. $-P_y/P_x$
c. $+P_x/P_y$ d. $+P_y/P_x$

15. बजट रेखा का समीकरण होता है?

a. $M = P_1X_1 + P_1X_2$ b. $M = P_1X_1 + P_2X_2$
c. $M = P_1P_2 + X_1X_2$ d. इनमें से कोई नहीं

16. बजट रेखा अपनी बायीं ओर विवर्तित होगी जब- -

a. X वस्तु की कीमत में कमी होगी
b. Y वस्तु की कीमत में कमी होगी
c. उपभोक्ता की आय में कमी होगी
d. उपभोक्ता की आय में वृद्धि होगी

17. अधिमान वक्र के अनुसार उपभोक्ता संतुलन उस बिंदु पर होगा जहां-

a. $MRS_{xy} = P_x / P_y$
b. अधिमान वक्र मूल बिंदु की ओर उन्नतोदर होती है
c. a तथा b दोनों
d. इनमें से कोई नहीं

18. एक उपभोक्ता के पास दो वस्तु आम तथा केला के दो संयोग A (5 आम 2 केला) तथा B (5 आम 3 केला) है। उपभोक्ता दोनों संयोगो के बीच तटस्थ होगा यह कथन -

a. सही है b. गलत है
c. मालूम नहीं d. इनमे से कोई नहीं

19. मांग को प्रभावित करने वाले तत्व निम्नलिखित में कौन से हैं?

a. कीमत b. आय में परिवर्तन
c. उपभोक्ता की रूचि d. उपर्युक्त सभी

20. यदि किसी वस्तु की मांग वक्र D=10-5P है, तो वस्तु की कीमत एक रुपए प्रति इकाई होने पर वस्तु की मांग क्या होगी?

a. 0 b. 10
c. 15 d. 5

21. कॉफी के मूल्य में वृद्धि होने से चाय की मांग क्या होगी?

a. बढ़ती है b. घटती है
c. स्थिर रहती है d. इनमें से कोई नहीं

22. ऐसी वस्तु जिनका एक - दुसरे के स्थान पर उपयोग किया जाता है, कहलाती है ?

a. स्थानापन्न वस्तु b. पूरक वस्तु
c. आरामदायक वस्तु d. घटिया वस्तु

23. स्थानापन्न वस्तु के उदाहरण हैं?

a. चाय तथा कॉफी b. चाय तथा चीनी
c. दाल तथा ब्रेड d. इनमें से कोई नहीं

Jharkhandlab.com

24. पूरक वस्तु के उदाहरण है ?

a. चाय तथा चीनी b. जूते तथा जुराब
c. कलम तथा स्याही d. उपर्युक्त सभी

25. मांग में संकुचन होगा जब -

a. कीमत बढती है और मांग घटती है
b. कीमत बढती है और मांग बढती है
c. कीमत स्थिर रहती है और मांग घटती है
d. कीमत घटती है और मांग स्थिर रहती है

26. मांग की कीमत लोच का अर्थ है?

a. कीमत में परिवर्तन के कारण मांग में परिवर्तन
b. वास्तविक आय में परिवर्तन
c. कीमत में परिवर्तन
d. मांग में परिवर्तन

27. मांग की लोच कितने प्रकार की होती है?

a. तीन b. चार
c. पांच d. छः

28. यदि मांग वक्र कीमत अक्ष (Y अक्ष) के समानांतर है तो मांग की लोच होगी?

a. शुन्य b. एक
c. एक से अधिक d. अनंत

29. यदि किसी वस्तु की कीमत में 5% की वृद्धि होने से वस्तु की मांगी गई मात्रा में 12% की कमी होती है, तो मांग की लोच का मान होगा?

a. 0.416 b. 2.4
c. 2.8 d. 0.9

30. एक वस्तु का मांग फलन D = 1/P है तो मांग वक्र के प्रत्येक बिंदु पर मांग की लोच होगी ?

a. इकाई के बराबर b. शून्य के बराबर
c. इकाई से कम d. इकाई से अधिक

31. आवश्यक वस्तु की मांग की लोच होती है?

a. 0 b. 1
c. एक से अधिक d. एक से कम

32. रेखा चित्र में मांग की लोच है?

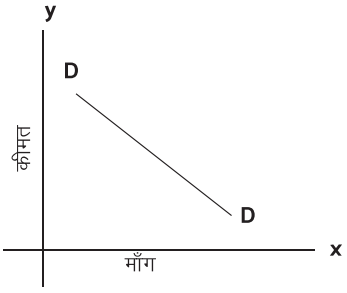

a. अधिक लोचदार b. इकाई लोचदार
c. कम लोचदार d. पूर्ण लोचदार

उत्तर -

1-a	2-c	3-b	4-c	5-a	6-d	7-b
8-d	9-b	10-a	11-a	12-c	13-c	14-a
15-b	16-c	17-c	18-b	19-d	20-d	21- a
22-a	23-a	24-d	25-a	26- a	27-a	28-a
29-b	30-a	31-a	32-b			

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Very Short Question Answer)

प्रश्न 1. उपयोगिता क्या है?

उत्तर - किसी वस्तु में छुपा वह गुण जिससे किसी आवश्यकता की पूर्ति होती है उपयोगिता कहलाती है। अलग-अलग वस्तु में उपयोगिता का स्तर अलग अलग होता है जो उनके उपभोग की तीव्रता पर निर्भर करती है।

प्रश्न 2. कुल उपयोगिता से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - किसी वस्तु की उपयोग की गई समस्त इकाइयों से प्राप्त उपयोगिता के योग को कुल उपयोगिता कहते हैं।

अर्थात,

$$TU = \Sigma MU$$

जहां, TU= कुल उपयोगिता
MU = सीमांत उपयोगिता तथा
Σ = योग

प्रश्न 3. सीमांत उपयोगिता को स्पष्ट करें।

उत्तर - किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उपयोग करने पर कुल उपयोगिता में जो वृद्धि होती है, उसे सीमांत उपयोगिता कहते हैं।

अर्थात, $MU = TUn - TUn-1$

या, $MU = \Delta TU/\Delta N$

जहां, TU= कुल उपयोगिता
MU= सीमांत उपयोगिता
N= वस्तु की संख्या

प्रश्न 4. उपयोगिता की गणना वाचक विश्लेषण के प्रतिपादक कौन है?

उत्तर - उपयोगिता की गणना वाचक विश्लेषण के प्रतिपादक अलफ्रेड मार्शल है।

प्रश्न 5. एक उपभोक्ता दो वस्तुओं का उपयोग करने का इच्छुक है दोनों वस्तुओं की कीमत क्रमशः रु० 4 तथा रु०5 प्रति इकाई है तथा उपभोक्ता की आय रु० 20 है बजट रेखा के समीकरण को लिखें

उत्तर - बजट रेखा निम्न होगी

$4X + 5Y = 20$

प्रश्न 6. मांग क्या है?

उत्तर - प्रभावपूर्ण इच्छा को मांग कहते हैं। अर्थात किसी वस्तु की मांग तब होगी जब उपभोक्ता को उस वस्तु को पाने की इच्छा हो, इच्छा को पूरा करने की योग्यता या साधन हो तथा साधनों को व्यय करने की तत्परता हो।

प्रश्न 7. मांग का फलन क्या है?

उत्तर - मांग का फलन किसी वस्तु की मांगी गई मात्रा तथा उसके विभिन्न निर्धारक तत्वों के बीच के फलनात्मक संबंध को व्यक्त करता है, अर्थात किसी वस्तु की मांग को प्रभावित करने वाले तत्वों को व्यक्त करता है।

अर्थात, Dx = f(Px, Po, Y, G, Pexp, Pn, etc.)

जहां, Dx- X वस्तु की मांगी गई मात्रा

Px- X वस्तु की प्रति इकाई कीमत

Po- अन्य वस्तु की कीमत

Y- उपभोक्ता की आय

G- सरकार की नीति

Pexp- भविष्य में कीमत संबंधी आशा

Pn- जनसंख्या

प्रश्न 8. सामान्य वस्तु से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - जब उपभोक्ता की आय में वृद्धि होने पर वस्तु की मांग में वृद्धि होती है एवं उपभोक्ता की आय में कमी से वस्तु की मांग में कमी होती है तो ऐसी वस्तुएं सामान्य वस्तु कहलाती हैं। इस प्रकार यदि वस्तु सामान्य हो तो उपभोक्ता की आय एवं वस्तु की मांग के बीच धनात्मक संबंध पाया जाता है। उदाहरण- चावल, गेहूँ आदि।

Jharkhandlab.com

प्रश्न 9. घटिया या निम्न कोटि की वस्तु को परिभाषित करें।

उत्तर - जब उपभोक्ता की आय में वृद्धि होने पर वस्तु की मांग में कमी होती है तथा उपभोक्ता की आय में कमी होने पर वस्तु की मांग में वृद्धि होती है तो ऐसी वस्तु को घटिया वस्तु कहते हैं। उदाहरण- मोटा कपड़ा, मोटा अनाज आदि।

प्रश्न 10. मांग की कीमत लोच का सूत्र लिखें।

उत्तर- मांग की कीमत लोच,

$$ed = (-)\frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P_o}{Q_o}$$

या

$$ed = \frac{\text{वस्तु की मांगी गई मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन}}{\text{कीमत में आनुपातिक परिवर्तन}}$$

जहाँ,

Q - मांगी गयी मात्रा

P - वस्तु की कीमत

Δ- परिवर्तन

Q_o - वस्तु की प्रारंभिक मात्रा

P_o - वस्तु की प्रारंभिक कीमत

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Short Question Answer)

प्रश्न 1. सीमांत उपयोगिता एवं कुल उपयोगिता के बीच संबंध को स्पष्ट करें।

उत्तर - सीमांत उपयोगिता एवं कुल उपयोगिता के बीच के संबंध को निम्न रेखा चित्र की सहायता से स्पष्ट किया जा सकता है।

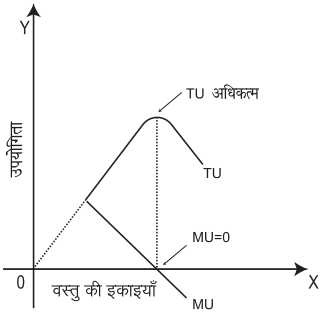

ऊपर के रेखा चित्र से स्पष्ट है-

1. जब कुल उपयोगिता बढ़ती है तब सीमांत उपयोगिता घटती है।

2. जब कुल उपयोगिता अपनी अधिकतम बिंदु पर होती है तब सीमांत उपयोगिता शून्य होती है।

3. जब कुल उपयोगिता घटने लगती है तब सीमांत उपयोगिता ऋणात्मक हो जाती है।

प्रश्न 2. घटती सीमांत उपयोगिता के नियम की व्याख्या करें।

उत्तर- घटती सीमांत उपयोगिता का नियम यह बताता है कि किसी एक दिए गए समय में जब उपभोक्ता किसी वस्तु की अतिरिक्त इकाइयों का उपभोग करता है तो प्रत्येक अगली इकाई से प्राप्त होने वाली सीमांत उपयोगिता घटती जाती है। इस नियम को गोसेन का प्रथम नियम भी कहते हैं। यह उपभोग का सार्वभौमिक नियम है।

मान्यताएं

i. वस्तु का उपभोग निरंतर होना चाहिए।

ii. वस्तु के उपभोग की इकाइयों का आकार बहुत छोटा या बहुत बड़ा नहीं होना चाहिए।

iii. वस्तु की सभी इकाइयां समरूप हो।

iv. स्थानापन्न वस्तु का मूल्य स्थिर हो।

v. उपभोक्ता के रुचि एवं फैशन में कोई परिवर्तन ना हो।

vi. उपभोक्ता की आय में कोई परिवर्तन ना हो।

नियम का तालिका एवं रेखाचित्र द्वारा निरूपण-

तालिका:

वस्तु की इकाइयाँ	सीमांत उपयोगिता
1	50
2	40
3	30
4	20
5	10
6	0
7	-10

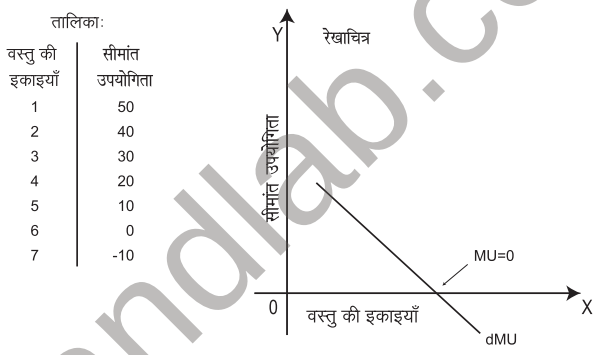

प्रश्न 3. सम सीमांत उपयोगिता नियम की व्याख्या करें।

उत्तर - सम सीमांत उपयोगिता नियम के अनुसार जब एक उपभोक्ता एक से अधिक वस्तुओं का उपभोग करता है तो उसे अपनी सीमित आय से अधिकतम संतुष्टि उस बिंदु पर प्राप्त होगी जहां वह अपनी आय को विभिन्न वस्तुओं पर इस प्रकार व्यय करे कि प्रत्येक वस्तु से प्राप्त सीमांत उपयोगिता एवं उनके कीमत का अनुपात आपस में बराबर हो जाए। इसे गोसेन का द्वितीय नियम भी कहते हैं। अतः कुल संतुष्टि अधिकतम होगी, यदि प्रत्येक वस्तु से प्राप्त सीमांत उपयोगिता एवं उनके कीमत का अनुपात एक दूसरे के बराबर हो।

अर्थात

$$\frac{Mu_x}{Px} = \frac{Mu_y}{Py} = \frac{Mu_z}{Pz} = \cdots\cdots\cdots = \frac{Mu_n}{Pn}$$

उदाहरण: माना कि x वस्तु की प्रति इकाई कीमत रु0 2 है

माना कि y वस्तु की प्रति इकाई कीमत रु0 3 है

माना कि z वस्तु की प्रति इकाई कीमत रु0 4

तथा उपभोक्ता की आय रु0 25

वस्तु की ईकाईयाँ	Mu_x	Mu_y	Mu_z	$\frac{Mu_x}{Px}$	$\frac{Mu_y}{Py}$	$\frac{Mu_z}{Pz}$
1	32	39	48	16	13	12
2	28	33	40	14	11	(10)
3	24	30	36	12	(10)	9
4	20	24	32	(10)	8	8
5	16	21	28	8	7	7

स्पष्ट है कि जब उपभोक्ता x की चार इकाइयों y की 3 इकाइयों तथा z की दो इकाइयों का उपभोग करेगा तो उसे अपनी आय रु0 25 से अधिकतम संतुष्टि

$TU = (\Sigma MU_x + \Sigma MU_y + \Sigma MU_z)$

TU =(32+28+24+20) + (39+33+30) + (48+40)

TU =294 इकाई प्राप्त होगी।

प्रश्न 4. मांग तालिका क्या है? उदाहरण दें।

उत्तर - मांग की तालिका किसी वस्तु के विभिन्न कीमतों पर उसकी मांगी गई मात्रा का सारणी के द्वारा निरूपण है। मांग की तालिका दो प्रकार की होती है

Jharkhandlab.com

i. व्यक्तिगत मांग तालिका एवं

ii. बाजार मांग तालिका।

उदाहरण : व्यक्तिगत मांग तालिका

कीमत	मांगी गई मात्रा
10	10
08	15
06	18
04	20

बाज़ार मांग तालिका

माना की बाज़ार में तीन उपभोक्ता हैं A, B तथा C

कीमत	A की मांगी गयी मात्रा	B की मांगी गयी मात्रा	C की मांगी गयी मात्रा	बाज़ार मांग (A+B+C)
10	10	8	0	18
08	15	12	5	32
06	18	15	7	40
04	20	20	9	49

प्रश्न 5. मांग के नियम से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट करें।

उत्तर - मांग का नियम यह बताता है कि अन्य तत्वों के स्थिर होने पर किसी वस्तु की कीमत में कमी से उसकी मांगी गई मात्रा बढ़ती है एवं विलोमशः। अर्थात कीमत तथा वस्तु की मांगी गयी मात्रा के बीच विपरीत संबंध पाया जाता है।

$D = f\left(\frac{1}{P}\right)$

जहां, D = वस्तु की माँग, f = फलन तथा P = वस्तु की कीमत

मान्यताएं-

1. अन्य वस्तु की कीमत स्थिर हो।
2. उपभोक्ता की आय में कोई परिवर्तन ना हो।
3. उपभोक्ता की रूचि तथा अधिमान स्थिर हो।
4. सरकार की नीति में कोई परिवर्तन ना हो।

प्रश्न 6. मांग में संकुचन तथा मांग में कमी के बीच अंतर को बताए।

उत्तर -

मांग में संकुचन	मांग में कमी
i. जब किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि से उसकी मांगी गई मात्रा में कमी होती है तो इसे मांग का संकुचन कहते हैं।	i. जब कीमत स्थिर हो तथा अन्य तत्वों में परिवर्तन से समान कीमत पर कम मात्रा की मांग की जाती है तो इसे मांग में कमी कहते हैं।
ii. इसका कारण कीमत में परिवर्तन है।	ii.इसका कारण अन्य तत्वों में परिवर्तन होना है।
iii.इससे मांग वक्र में दाएं से बाएं नीचे से ऊपर की ओर गति के द्वारा दर्शाया जाता है।	iii.इसे मांग वक्र में बाएं ओर परिवर्तन द्वारा दर्शाया जाता है।
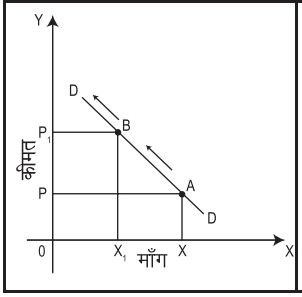	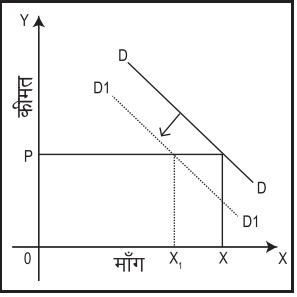

प्रश्न 7. मांग में वृद्धि के तीन कारण को लिखें?

उत्तर - मांग में वृद्धि के तीन कारण निम्नलिखित हैं-

i. उपभोक्ता की आय में वृद्धि होने से वह समान कीमत पर अधिक मात्रा की मांग करेगा।

ii. स्थानापन्न वस्तु की कीमत में वृद्धि होने पर वह एक विशेष वस्तु की अधिक मात्रा की मांग करेगा ।

iii.पूरक वस्तु की कीमत में कमी होने पर वह समान कीमत पर वस्तु की मांग अधिक करेगा।

प्रश्न 8. मांग की लोच की विभिन्न श्रेणियों को स्पष्ट करें।

उत्तर - मांग की लोच की श्रेणियां होती है। यह निम्न है-

i. पूर्ण लोचदार मांग - जब वस्तु की कीमत में थोड़ी वृद्धि से मांग घटकर शून्य हो जाए, तो इसे पूर्ण लोचदार मांग कहते हैं। इसे ed = Infinity (∞) से दर्शाते हैं ।

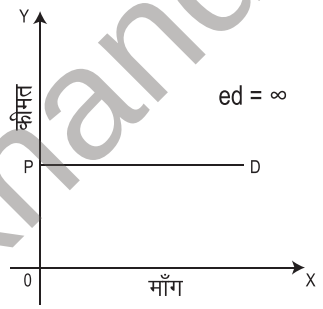

ii. पूर्ण बेलोचदार मांग - कीमत मे होने वाले किसी भी परिवर्तन से यदि मांग में कोई परिवर्तन ना आए, अर्थात कीमत में कमी या वृद्धि से मांगी गई मात्रा समान बनी रहे तो, इसे पूर्ण बेलोचदार मांग कहते हैं। इसे ed = 0 से दर्शाते हैं ।

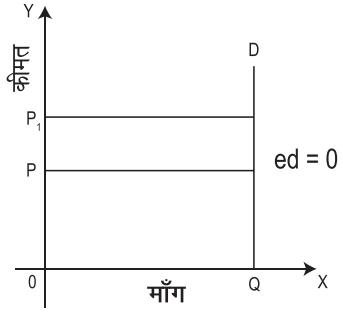

iii. इकाई लोचदार मांग - जब कीमत में आनुपातिक परिवर्तन से मांगी गई मात्रा में समान आनुपातिक परिवर्तन हो, तो इसे मांग की इकाई लोच कहते हैं। इसे ed = 1 से दर्शाते हैं ।

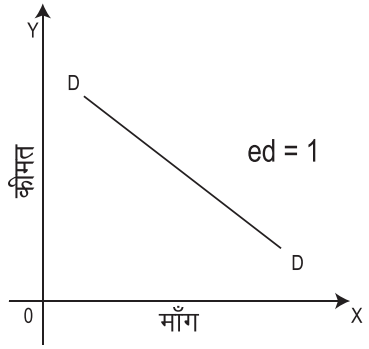

iv. सापेक्षिक बेलोचदार मांग - जब कीमत में आनुपातिक परिवर्तन से मांगी गई मात्रा में अनुपात से कम परिवर्तन हो , तो इसे बेलोचदार मांग कहते हैं। इसे ed < 1 से दर्शाते हैं ।

Jharkhandlab.com

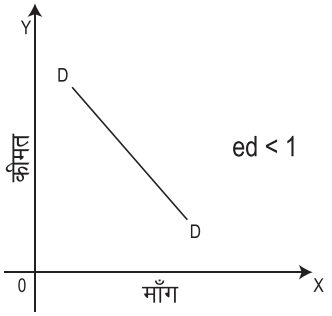

v. सापेक्षिक लोचदार मांग - कीमत में आनुपातिक परिवर्तन से मांगी गई मात्रा में अनुपात से ज्यादा परिवर्तन हो, तो इसे लोचदार मांग कहते हैं। इसे ed > 1 से दर्शाते हैं।

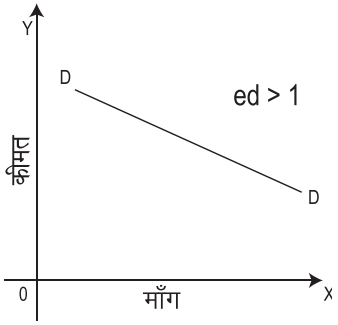

प्रश्न 9. स्थानापन्न वस्तु एवं पूरक वस्तु को परिभाषित कीजिए? उदाहरण दीजिये।

उत्तर - स्थानापन्न वस्तु - स्थानापन्न वस्तु ऐसी वस्तुएं होती है जो एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग की जाती है। जैसे चाय और कॉफी, चावल और रोटी।

पूरक वस्तु - पूरक वस्तु ऐसी वस्तु होती है जिनका प्रयोग एक साथ होता है। जैसे कार एवं पेट्रोल, पेन एवं स्याही।

प्रश्न 10. जब कोई वस्तु 5 रू० में बिक रही थी तो उसकी माँग 100 इकाइयाँ थी। अब वस्तु का मूल्य बदलकर 8 रु० हो जाता है जिसके फलस्वरूप माँग घटकर 50 इकाइयाँ हो जाती है मांग की मूल्य लोच की गणना करें।

उत्तर - दिया हुआ है -

प्रारंभिक कीमत $P_o = 5$

प्रारंभिक मात्रा $Q_o = 100$

नयी कीमत $P_1 = 8$

नयी मात्रा $Q_1 = 50$

अतः $\Delta P = P_1 - P_o = 8-5, \Delta P = 3$

$\Delta Q = Q_1 - Q_o = 50 - 100, \Delta Q = -50$

$$ed = (-) \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P_o}{Q_o}$$

$ed = (-) -50/3 \times 5/100 = 5/6$ $ed = 0.83$ ans

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Long Question Answer)

प्रश्न 1. अधिमान वक्र से आप क्या समझते हैं? अधिमान वक्र की विशेषताओं को स्पष्ट करें।

उत्तर - अधिमान वक्र - यह दो वस्तुओं के उन विभिन्न संयोगों को दर्शाता है जिससे उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्राप्त होती है। क्योंकि सभी संयोग समान संतुष्टि स्तर के होते हैं एक उपभोक्ता इन संयोगों के बीच तटस्थ होता है। अधिमान वक्र की ढाल ऋणात्मक होती है तथा यह मूल बिंदु की ओर उन्नतोदर होते हैं क्योंकि MRS ऋणात्मक होता है।

मान्यताएं -

i. उपभोक्ता एक सामान्य व्यक्ति है जिसका उद्देश्य अपनी उपयोगिता को अधिकतम करना है।

ii. उपयोगिता क्रम वाचक है।

iii. उपभोक्ता की आय तथा X एवं Y वस्तु की कीमत स्थिर है।

iv. उपभोक्ता का अधिमान तथा वस्तु के लिए चाहत स्थिर है।

v. MRS ऋणात्मक होता है।

vi. IC वक्र मूल बिंदु की ओर उन्नतोदर होती है।

तालिका एवं रेखा चित्र द्वारा अधिमान वक्र की व्याख्या

तालिका

संयोग	x वस्तु	y वस्तु	MRS
A	1	20	—
B	2	15	1:5
C	3	11	1:4
D	4	8	1:3
E	5	6	1:2
F	6	5	1:1

रेखाचित्र

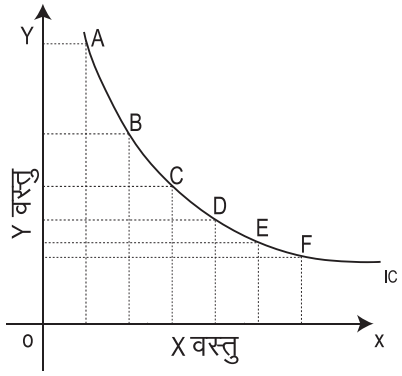

अधिमान वक्र की विशेषताएं-

i. अधिक ऊंचा अधिमान वक्र अधिक संतुष्टि को दर्शाता है।

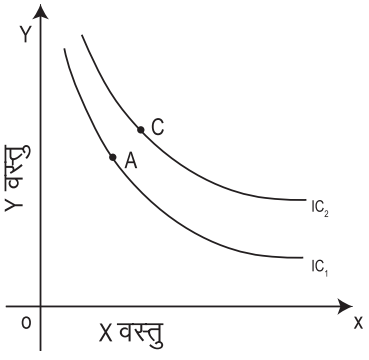

हम जानते हैं की अधिक वस्तु से अधिक संतुष्टि प्राप्त होती है। रेखा चित्र में IC1 पर स्थित संयोग A की तुलना में IC 2 पर स्थित संयोग C में एक वस्तु या दोनों वस्तु की मात्रा अधिक होगी। इसलिए संयोग A की तुलना में संयोग C अधिक संतुष्टि प्रदान करेगा। अतः ऊंचा अधिमान वक्र ऊंची संतुष्टि प्रदान करता है।

ii. अधिमान वक्र नीचे की ओर झुका होता है अथार्त अधिमान वक्र की ढाल ऋणात्मक होती है।

Jharkhandlab.com

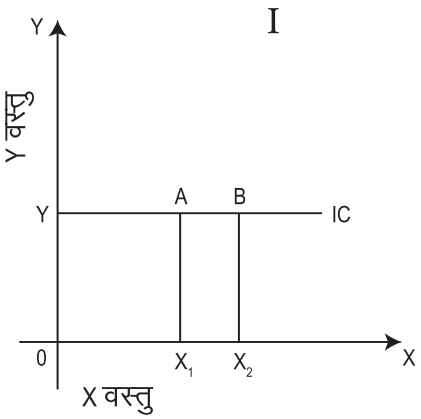

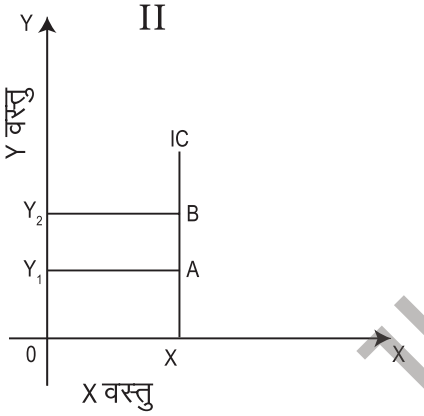

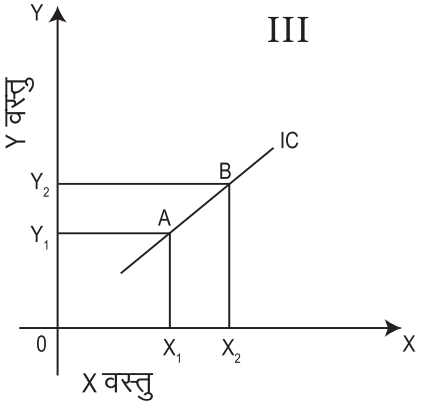

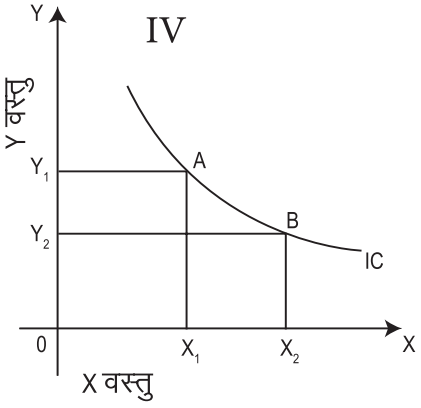

ऊपर के रेखाचित्र में चित्र I, II तथा III में संयोग A की तुलना में संयोग B में क्रमशः X वस्तु, Y वस्तु , X तथा Y दोनों वस्तु की मात्रा अधिक है। अतः संयोग A की तुलना में संयोग B से उपभोक्ता को अधिक संतुष्टि प्राप्त होगी। इसलिए इनके अनुसार अधिमान वक्र न तो X अक्ष के समानांतर , न Y अक्ष के समानांतर और न ही ऊपर चढ़ता हो सकता है। जबकि रेखा चित्र IV में संयोग A की तुलना में संयोग B में Y वस्तु की मात्रा में कमी एवं X वस्तु की मात्रा में वृद्धि हो रही है , अतः ऐसा हो सकता है की दोनों संयोगो से उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्राप्त हो। अतः अधिमान वक्र नीचे की ओर झुका होता है अर्थात अधिमान वक्र की ढाल ऋणात्मक होती है।

iii. IC वक्र मूल बिंदु की ओर उन्नतोदर है।

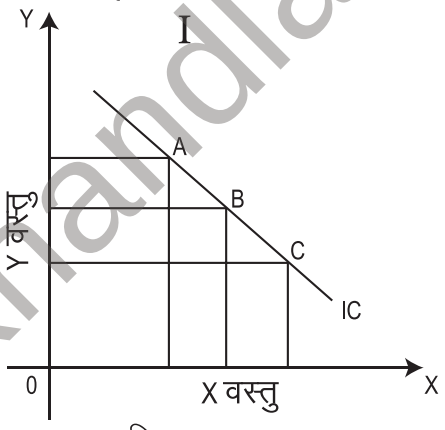

MRS - स्थिर

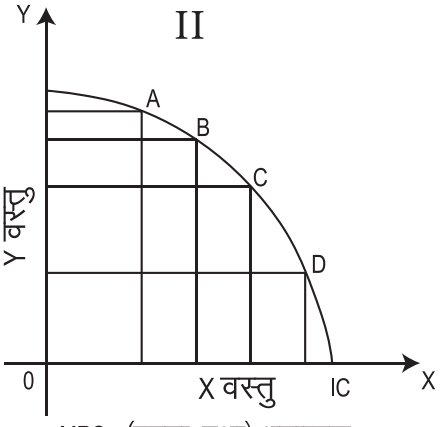

MRS - (बढ़ता हुआ) धनात्मक

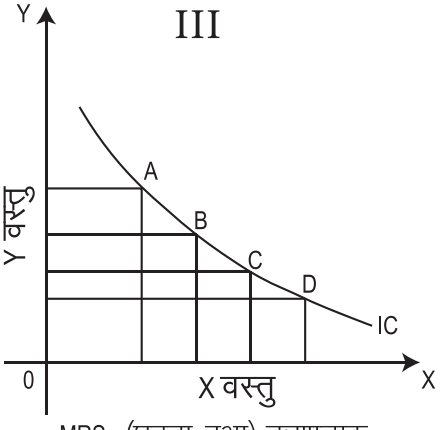

MRS - (घटता हुआ) ऋणात्मक

Jharkhandlabs.com

ICवक्र की एक मान्यता है कि सीमांत प्रतिस्थापन की दर (MRS) घटती हुई होती है। रेखाचित्र I तथा II में यह क्रमशः स्थिर एवं बढ़ता हुआ है तथा रेखाचित्र III में घटता हुआ है। अतः अधिमान वक्र मूल बिंदु की ओर उन्नतोदर होता है।

iv. अधिमान वक्र एक दूसरे को ना तो स्पर्श करते हैं और ना काटते हैं।

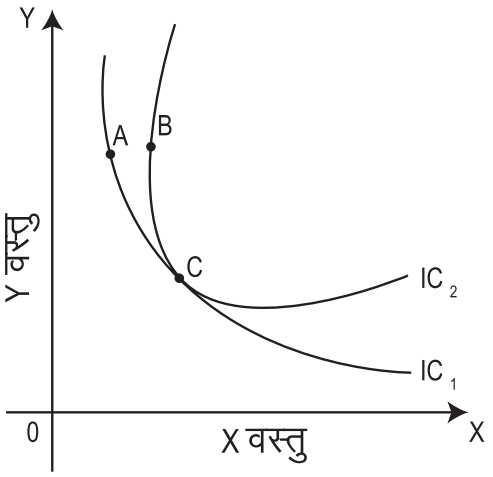

अधिमान वक्र की यह मान्यता है की अधिक ऊंचा अधिमान वक्र अधिक संतुष्टि को प्रदान करता है। ऊपर के रेखा चित्र में संयोग A तथा C , अधिमान वक्र IC1 पर स्थित हैं जिससे संतुष्टि स्तर 1 प्राप्त हो रहा है। अधिमान वक्र IC2 पर स्थित संयोग B तथा C हैं जिससे संतुष्टि स्तर 2 प्राप्त हो रहा है। संयोग C पर दोनों वक्र एक दुसरे को स्पर्श करते है जंहा दोनों ही संतुष्टि स्तर प्राप्त हो रहा है जो कि संभव नहीं है। अतः दो अधिमान वक्र एक दूसरे को ना तो स्पर्श कर सकते हैं और ना काट सकते हैं।

प्रश्न 2. अधिमान वक्र की सहायता से उपभोक्ता संतुलन की व्याख्या करें।

उत्तर- एक उपभोक्ता सन्तुलन की अवस्था में तब होता है जब वह अपनी सीमित आय की सहायता से वस्तुओं की दी गयी कीमत पर खरीदकर अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त करने में सफल हो जाता है। उपभोक्ता की कीमत रेखा उपभोक्ता की आय एवं वस्तुओं की दी गयी कीमतों से निर्धारित होती है। प्राप्त कीमत रेखा के साथ उपभोक्ता ऊँचे अधिमान वक्र पर पहुँचने का प्रयास करता है। उपभोक्ता का संतुलन उस बिंदु पर होता है जंहा उपभोक्ता के सन्तुलन की दोनों शर्तें एवं निम्न मान्यताएं पूरी होती है

मान्यताएं

i. दो वस्तु है जिनकी कीमत और उपभोक्ता की आय स्थिर है।
ii. MRS की दर घटती हुई है।
iii. उपभोक्ता एक विवेकशील प्राणी है जो अपनी संतुष्टि को अधिकतम करना चाहता है।
iv. उपभोक्ता को विभिन्न अधिमान संयोगो की पूरी जानकारी है।

उपभोक्ता के सन्तुलन की शर्तें -

i. उदासीनता वक्र कीमत रेखा को स्पर्श करे - इसका अर्थ है की मात्रात्मक रूप में X वस्तु की Y वस्तु के लिए सीमान्त प्रतिस्थापन दर , X तथा Y वस्तुओं की कीमतों के अनुपात के बराबर होनी चाहिए

IC वक्र की ढाल = बजट रेखा की ढाल

ie . MRSxy = Px/ Py

ii. अधिमान वक्र मूल बिंदु की ओर उन्नतोदर- इसका अर्थ है की संतुलन बिंदु पर MRSxy घटती हुई होनी चाहिए।

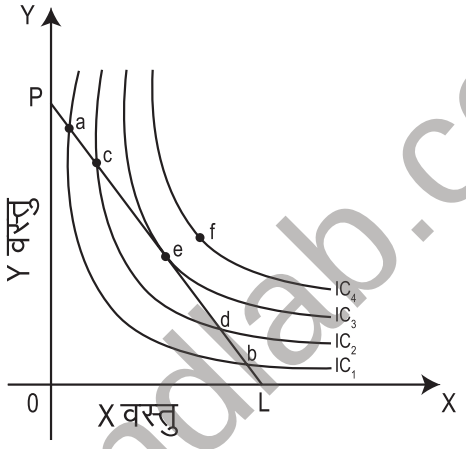

रेखा चित्र से स्पष्ट है कि उपभोक्ता का संतुलन e बिंदु पर प्राप्त होगा। क्योंकि इस बिंदु पर उपभोक्ता अधिकतम संभव संतुष्टि IC3 को प्राप्त कर रहा है। दी गई आय पर उपभोक्ता a,b,c तथा d संयोग को भी खरीद सकता है किंतु उनसे प्राप्त संतुष्टि IC3 की तुलना में कम होंगे। उपभोक्ता को IC4 के बिंदु f पर और अधिक संतुष्टि प्राप्त होगी, किंतु दी गई है पर वह IC4 को प्राप्त नहीं कर सकता है। अतः दी गई आय पर उपभोक्ता को अधिकतम संभव संतुष्टि IC3 के e बिंदु पर प्राप्त होगी। जहां उपभोक्ता संतुलन की दोनों शर्तें पूरी हो रही हैं- अधिमान वक्र बजट रेखा को स्पर्श कर रहा है एवं अधिमान वक्र मूल बिंदु की ओर उन्नतोदर है।

प्रश्न 3. मांग के नियम क्या है? मांग को प्रभावित करने वाले तत्व को बताएं।

उत्तर - मांग का नियम यह बताता है कि, अन्य तत्वों के स्थिर होने पर किसी वस्तु की कीमत में कमी से उसकी मांगी गई मात्रा बढ़ती है तथा कीमत में वृद्धि से मांग में कमी होती है। अर्थात एक वस्तु की कीमत तथा वस्तु की मांगी गई मात्रा के बीच विपरीत संबंध पाया जाता है।

$D = f(\frac{1}{P})$

जहां, D = वस्तु की माँग, f = फलन तथा P = वस्तु की कीमत

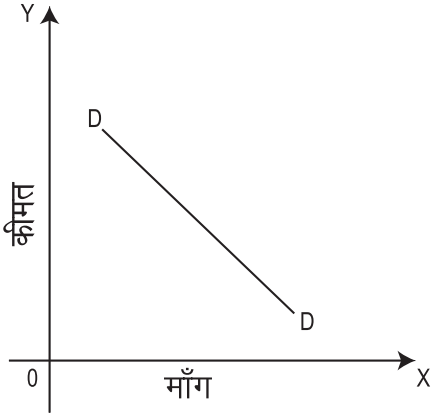

मान्यताएं

i. अन्य वस्तु की कीमत स्थिर हो।
ii. उपभोक्ता की आय में कोई परिवर्तन ना हो।
iii. उपभोक्ता की रूचि तथा अधिमान स्थिर हो।
iv. सरकार की नीति में परिवर्तन ना हो।

मांग को प्रभावित करने वाले तत्व -

i. **वस्तु की कीमत -** किसी वस्तु की कीमत और मांग के बीच विपरीत संबंध पाया जाता है अर्थात कम कीमत पर लोगों द्वारा वस्तु की अधिक मात्रा की मांग की जाती है एवं विलोमशः।

jharkhandlab.com

ii. **अन्य वस्तु की कीमत-** अन्य वस्तु की कीमत किसी विशेष वस्तु की मांग को दो तरह से प्रभावित करती है। एक वस्तु की कीमत में वृद्धि से किसी विशेष वस्तु की मांग बढ़ जाती है, यह स्थानापन्न वस्तु होती है। जैसे चाय एवं कॉफी।

अन्य वस्तु की कीमत में वृद्धि से किसी विशेष वस्तु की मांग में कमी हो जाती है ये पूरक वस्तु कहलाती है। जैसे कार एवं पेट्रोल।

iii. **उपभोक्ता की आय** - सामान्यतः एक उपभोक्ता की आय और सामान्य वस्तु की मांग के बीच प्रत्यक्ष एवं सीधा संबंध पाया जाता है अर्थात आय में वृद्धि से वस्तु की मांग बढ़ जाती है। उपभोक्ता की आय और घटिया या गिफिन वस्तुओं की मांग के बीच विपरीत संबंध पाया जाता है अर्थात आय में वृद्धि से इन वस्तु की मांग घट जाती है।

iv. **रुचि एवं अधिमान** - किसी वस्तु की मांगी गई मात्रा एवं उपभोक्ता की रूचि तथा अधिमान के बीच प्रत्यक्ष संबंध पाया जाता है यदि किसी वस्तु के लिए उपभोक्ता की रूचि और अधिमान पक्ष में हो तो उस वस्तु की मांग अधिक होगी।

v. **भविष्य में कीमत संबंधी आशा** - किसी वस्तु की मांगी गई मात्रा और उसकी भविष्य में कीमत संबंधी आशा के बीच प्रत्यक्ष और सीधा संबंध पाया जाता है। अर्थात यदि उपभोक्ता यह आशा करता है कि किसी वस्तु की कीमत निकट भविष्य में कम होगी तो वह उस वस्तु की वर्तमान मांग कम कर देगा एवं विलोमशः।

vi. **सरकारी नीति**- सरकार किसी वस्तु पर कर लगाकर उसकी मांग को कम या सब्सिडी देकर किसी वस्तु की मांग को बढ़ा सकती है। कर लगाने से वस्तु की कीमत में वृद्धि हो जाती है जबकि सब्सिडी देने पर वस्तु की कीमत में कमी आती है।

vii. **जनसंख्या**- वस्तु की मांगी गई मात्रा एवं जनसंख्या के बीच सीधा संबंध पाया जाता है जनसंख्या में वृद्धि से वस्तु की मांग बढ़ जाती है जबकि जनसंख्या में कमी से वस्तु की मांग कम हो जाती है।

प्रश्न 4. मांग की रेखा नीचे दाहिनी ओर क्यों गिरती है?

उत्तर - मांग वक्र की ढाल ऋणात्मक होती है अर्थात यह वक्र बाएं से दाएं नीचे गिरती है जिसका अर्थ है कि कीमत कम होने पर अधिक वस्तुएं खरीदी जाती है और कीमत अधिक होने पर कम वस्तुएं खरीदी जाती है।

मांग वक्र की ढाल ऋणात्मक होने या मांग की रेखा के नीचे दाहिनी और गिरने के कारण निम्न हैं -

i. आय प्रभाव- किसी वस्तु की कीमत में कमी होती है तो उसकी पूर्व की मात्रा को क्रय करने पर उपभोक्ता को पहले से कम व्यय करना पड़ता है। इससे उपभोक्ता की वास्तविक आय बढ़ जाती है जिससे वह वस्तु की अधिक मात्रा को क्रय कर सकता है।

ii. प्रतिस्थापन प्रभाव - जब किसी वस्तु की कीमत में कमी होती है तो वह अन्य वस्तु की तुलना में सस्ती हो जाती है। सामान्यतः उपभोक्ता महंगी वस्तु की जगह सस्ती वस्तु को प्रतिस्थापित करता है। जिससे वस्तु की मांगी गई मात्रा बढ़ जाती है तथा कीमत बढ़ने पर मांग घट जाती है।

iii. घटती सीमांत उपयोगिता का नियम - एक उपभोक्ता किसी वस्तु के लिए उतनी ही कीमत देना चाहता है जितना उस वस्तु से सीमांत उपयोगिता प्राप्त होती है। जब उपभोक्ता वस्तु की अगली इकाई खरीदेगा तो उससे मिलने वाली सीमांत उपयोगिता कम होगी तो वह उस वस्तु की अगली इकाई को तभी खरीदेगा जब उसे उसके लिए कम कीमत देनी पड़े। अतः कीमत में कमी से मांग बढ़ेगी।

iv. वस्तु के वैकल्पिक प्रयोग- वस्तु के वैकल्पिक प्रयोग किए जा सकते हैं। जब वस्तु महंगी होती है तो उसका प्रयोग केवल अधिक उपयोगी कार्य के लिए ही किया जाता है जैसे - जैसे कीमत कम होती है उसका उपयोग अन्य कम उपयोगी कार्यों के लिए भी किया जाता है जिससे उसकी मांग बढ़ती जाती है।

v. उपभोक्ता की संख्या - जब वस्तु की कीमत बढ़ती है तो उसके उपभोक्ताओं की संख्या कम हो जाती है क्योंकि वस्तु कुछ उपभोक्ताओं की पहुंच से बाहर हो जाता है। इसी प्रकार जब वस्तु की कीमत कम होती है तो नए उपभोक्ता बाज़ार में जुड़ जाते हैं। अतः कीमत में कमी से मांग बढ़ जाती है।

प्रश्न 5. मांग की लोच से आप क्या समझते हैं? मांग की लोच की माप की विभिन्न विधियों को स्पष्ट करें।

उत्तर - मांग की लोच मांग के नियम का परिमाणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन से उसकी मांगी गई मात्रा में कितना परिवर्तन होता है यह मांग की लोच द्वारा ज्ञात किया जा सकता है।इसकी व्याख्या मार्शल द्वारा की गयी है।

मार्शल के अनुसार "मांग की लोच का बाजार में कम या अधिक होना इस बात पर निर्भर करता है कि वस्तु की कीमत में एक निश्चित मात्रा में परिवर्तन होने पर उसकी मांग में सापेक्ष से अधिक या कम अनुपात में परिवर्तन होता है।"

मांग की लोच का अर्थ मांग की कीमत लोच से ही लिया जाता है जब वस्तु की कीमत में परिवर्तन के परिणाम स्वरूप मांग की मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन की माप की जाती है तो उसे मांग की कीमत लोच कहते हैं। मांग की लोच कीमत में परिवर्तन से मांग में होने वाली परिवर्तन की मात्रा एवं दिशा दोनों को बताता है।

मांग की लोच की माप की विधियां

i. आनुपातिक विधि या प्रतिशत विधि - मांग की लोच के माप की प्रतिशत या आनुपातिक विधि का प्रतिपादन प्रोफेसर फ्लाक्स ने किया है। इस विधि के अनुसार मांग की लोच को ज्ञात करने के लिए मांग में होने वाले आनुपातिक या प्रतिशत परिवर्तन को कीमत में होने वाले आनुपातिक या प्रतिशत परिवर्तन से भाग दिया जाता है।

$$ed = (-) \frac{\text{मांग में आनुपातिक परिवर्तन}}{\text{कीमत में आनुपातिक परिवर्तन}}$$

माना,

प्रारंभिक कीमत - P_o

प्रारंभिक मांग - Q_o

नई कीमत - P_1

नई मांग - Q_1

कीमत में परिवर्तन - $\Delta P = P_1 - P_o$

मांग में परिवर्तन - $\Delta Q = Q_1 - Q_o$

कीमत में आनुपातिक परिवर्तन - $\Delta P/P_o$

मांग में आनुपातिक परिवर्तन - $\Delta Q/Q_o$

आनुपातिक विधि

$$ed = (-) \frac{\frac{\Delta Q}{Q_o}}{\frac{\Delta P}{P_o}} = \frac{\Delta Q}{Q_o} \times \frac{P_o}{\Delta P}$$

$$ed = (-) \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P_o}{Q_o}$$

Jharkhandeb.com

प्रतिशत विधि

कीमत में प्रतिशत परिवर्तन - $\Delta P/P_0 \times 100$

मांग में प्रतिशत परिवर्तन - $\Delta Q/Q_0 \times 100$

$$ed = (-)\frac{\text{मांग में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

अन्य बातें समान रहने पर, माँग की लोच, माँग में प्रतिशत परिवर्तन तथा कीमत में प्रतिशत परिवर्तन के अनुपात को बतलाती है।

ii. कुल व्यय विधि - मांग की लोच की माप की कुल व्यय विधि का प्रतिपादन प्रोफेसर मार्शल द्वारा किया गया। इस विधि में यह ज्ञात किया जाता है कि वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने से कुल व्यय में कितना और किस दिशा में परिवर्तन हुआ है। कीमत में परिवर्तन तथा व्यय में परिवर्तन की दिशा के आधार पर मांग की लोच का आकलन किया जाता है। इस विधि में मांग की लोच की केवल 3 श्रेणियों का आकलन किया जा सकता है- इकाई के बराबर लोच, इकाई से अधिक लोच एवं इकाई से कम लोच।

इस विधि को निम्न तालिका के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है

दशा	कीमत (P)	मात्रा (Q)	व्यय (PQ)	लोच (ed)
I	P↑ P↓	Q↓ Q↑	PQ↑ PQ↓	ed < 1
II	P↑ P↓	Q↓ Q↑	PQ↓ PQ↑	ed > 1
III	P↑ P↓	Q↓ Q↑	PQ= PQ=	ed = 1

iii. बिंदु विधि या ज्यामितीय विधि - इस विधि द्वारा हम एक रेखिय मांग वक्र के किसी बिंदु पर मांग की लोच ज्ञात कर सकते हैं। मांग की रेखा पर कोई भी बिंदु मांग की रेखा को दो भागों में बांट देती है एक बिंदु के ऊपर का रेखा खंड तथा दूसरा बिंदु के नीचे का रेखा खंड। मांग की लोच को ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाता है।

ed = निचला रेखा खंड / उपर का रेखा खंड

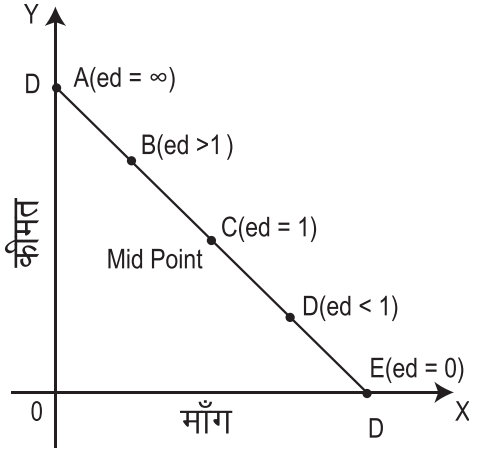

Jharkhandlab.com

अध्याय 3 उत्पादन तथा लागत

बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Question)

1. आगत को निर्गत में परिवर्तन करने की प्रक्रिया को क्या कहा जाता है?
a. उपभोग b. उत्पादन
c. निवेश d. विनिमय

2. फर्म के द्वारा उत्पादित वस्तुओं को बाज़ार में बेचने से प्राप्त राशि क्या कहलाती है?
a. आगत b. निर्गत
c. आगम d. लाभ

3. आगत तथा निर्गत के बीच तकनीकी संबंध को क्या कहा जाता है?
a. उपयोगिता फलन b. माँग फलन
c. उत्पादन फलन d. लागत फलन

4. उत्पादन फलन Q=f(L,K) में Q क्या प्रदर्शित करता है?
a. उत्पादित वस्तु की अधिकतम मात्रा
b. उत्पादित वस्तु की न्यूनतम मात्रा
c. वस्तु की माँग
d. उत्पादन के कारक

5. उत्पादन के दो कारकों के विभिन्न संयोगों से किसी वस्तु के उत्पादन की समान मात्रा को प्रदर्शित करने वाला वक्र क्या कहलाता है?
a. समोत्पाद वक्र b. उपयोगिता वक्र
c. अनधिमान वक्र d. बजट रेखा

6. दो समोत्पाद रेखाओं के बीच की दूरी क्या व्यक्त करती है?
a. उत्पादन स्तर में अंतर
b. लागत में अंतर
c. उपयोगिता में अंतर
d. संप्राप्ति (आगम) में अंतर

7. जिस समयावधि में उत्पादन के सभी साधन परिवर्तनशील होते हैं, उसे .....कहा जाता है।
a. ग्रीष्मकाल b. अल्पकाल
c. दीर्घकाल d. शीतकाल

8. उत्पादन के आगतों का स्थिर आगत तथा परिवर्ती आगत में विभाजन किस काल से संबंधित है?
a. ग्रीष्मकाल b. अल्पकाल
c. दीर्घकाल d. शीतकाल

9. ह्रासमान सीमांत उत्पादन का संबंध .....से है।
a. अल्पकाल b. दीर्घकाल
c. अतिदीर्घकाल d. ग्रीष्मकाल

10. एक परिवर्ती साधन का सीमांत उत्पादन वक्र 'उल्टा' U आकार का क्यों होता है?
a. सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम के कारण
b. प्रतिस्थापन की घटती सीमांत दर के कारण
c. परिवर्ती अनुपात के नियम के कारण
d. पैमाने के प्रतिफल नियम के कारण

11. औसत उत्पादन, सीमांत उत्पादन के बराबर कब होता है? जब-
a. सीमांत उत्पादन अधिकतम होता है ।
b. कुल उत्पादन अधिकतम होता है।
c. औसत उत्पादन अधिकतम होता है।
d. सीमांत उत्पादन शून्य होता है।

12. उत्पादन के जिस स्तर पर परिवर्ती साधन का सीमांत उत्पाद शून्य होता है, उस स्तर पर कुल उत्पाद ..... होता है।
a. अधिकतम b. शून्य
c. न्यूनतम d. ऋणात्मक

13. किसी परिवर्ती साधन (L) का औसत उत्पादन ज्ञात करने का सूत्र .....होता है।
a. Q/L b. L/Q
c. Q + L d. a तथा b दोनों

14. परिवर्ती साधन की मात्रा के सापेक्ष कुल उत्पादन में परिवर्तन की दर को .....कहा जाता है।
a. कुल उत्पादन b. सीमांत उत्पादन
c. औसत उत्पादन d. औसत लागत

15. पैमाने के प्रतिफल का संबंध .....से होता है।
a. अल्पकाल b. दीर्घकाल
c. अतिअल्पकाल d. शीतकाल

16. जब उत्पादन के सभी आगतों में आनुपातिक वृद्धि करने से उत्पादन में आनुपातिक वृद्धि से कम अनुपात में वृद्धि होती है तो इसे .....कहा जाता है।
a. साधन का ह्रासमान प्रतिफल
b. पैमाने का स्थिर प्रतिफल
c. पैमाने का ह्रासमान प्रतिफल
d. पैमाने का वृद्धिमान प्रतिफल

17. किसी वस्तु के उत्पादन के लिए उत्पादन के आगतों पर किये गये खर्च को क्या कहा जाता है?
a. उत्पादन b. लागत
c. उपयोगिता d. माँग

18. निम्नलिखित में से किस वक्र का आकार अतिपरवलीय होता है?
a. कुल लागत b. औसत उत्पादन
c. औसत स्थिर लागत d. सीमांत लागत

19. औसत लागत सीमांत लागत से अधिक कब होती है? जब-
a. औसत लागत घट रही होती है
b. औसत लागत बढ़ रही होती है।
c. औसत लागत न्यूनतम होती है।
d. कुल लागत शून्य होती है।

20. अल्पकालीन औसत लागत वक्र का आकार 'U' आकार का होता है क्योंकि-
a. अल्पकालीन औसत लागत अल्पकालीन स्थिर लागत तथा औसत परिवर्ती लागत का योग होती है।
b. परिवर्ती अनुपात का नियम लागू होता है।
c. a तथा b दोनों
d. इनमें से कोई नहीं

उत्तर - 1-b 2-c 3-c 4-a 5-a 6-a 7-c
8-b 9-a 10-c 11-c 12-a 13-a 14-b
15-b 16-c 17-b 18-c 19-a 20-c

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Very Short Question Answer)

1. कुल उत्पाद से क्या समझते हैं?

उत्तर - उत्पत्ति के साधनों का प्रयोग करके कुल उत्पाद, एक निश्चित समय में उत्पादित वस्तुओं की कुल मात्रा से है।

Jharkhandlab.com

2. औसत उत्पाद से क्या तात्पर्य है?

उत्तर - औसत उत्पाद, का तात्पर्य- परिवर्तनशील साधन के 'प्रतिइकाई उत्पादन की मात्रा' से हैं।

3. सीमांत उत्पाद से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर - सीमांत उत्पाद, प्रति इकाई आगत में परिवर्तन के कारण निर्गत में परिवर्तन होता है, जब सभी अन्य आगत स्थिर रखे गये हों ।

4. लागत से क्या समझते हैं?

उत्तर - उत्पादन के साधनों के प्रयोग के बदले जो धनराशि व्यय की जाती है, लागत कहलाती है।

5. औसत लागत तथा सीमांत लागत वक्र कैसे दिखते हैं?

उत्तर - औसत लागत तथा सीमांत लागत वक्र की आकृति अंग्रेजी के U- आकार की होती हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Short Question Answer)

प्रश्न 1. उत्पादन फलन की संकल्पना को समझाइए ।

उत्तर - उत्पादन फलन, आगतों तथा निर्गतों के मध्य का संबंध है। उपयोग में लाये गये आगतों की विभिन्न मात्राओं के लिए यह निर्गत की अधिकतम मात्रा प्रदान कर सकता है, जिसका उत्पादन किया जा सकता है।

प्रश्न 2. सीमांत उत्पाद तथा कुल उत्पाद के बीच संबंध समझाइए ।

उत्तर - सीमांत उत्पाद तथा औसत उत्पाद के बीच संबंध को निम्नांकित प्रकार प्रकट किया जा सकता है-

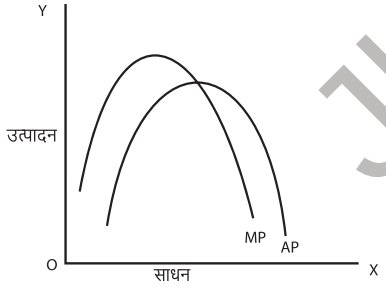

सीमांत उत्पाद में वृद्धि होने पर औसत उत्पाद में भी वृद्धि होती है, परंतु सीमांत उत्पाद की तुलना में कम वृद्धि होती है • जब तक सीमांत उत्पाद का मूल्य प्रचलित औसत उत्पाद के मूल्य की तुलना में अधिक रहता है, औसत उत्पाद में वृद्धि होती रहती है।

'सीमांत उत्पाद में कमी होने पर, औसत उत्पाद में भी कमी होती है, परंतु सीमांत उत्पाद की तुलना में कम कमी होती है ।

इस प्रकार, सीमांत उत्पाद वक्र औसत उत्पाद वक्र को अधिकतम औसत उत्पाद के बिंदु को ऊपर से काटता है।

प्रश्न 3. अल्पकाल तथा दीर्घकाल के संकल्पनाओं को समझाइए ।

उत्तर - उत्पादन की प्रक्रिया में अल्पकाल तथा दीर्घकाल सामान्यतः समय अंतराल की एक छोटी अवधि एवं बड़ी अवधि को बतलाता है।

अल्पकाल में एक फर्म सभी आगतों मे सभी उत्पादन करने के लिए, दीर्घकाल में दोनों कारकों आगतों में साथ-साथ परिवर्तन ला सकती है। अतः दीर्घकाल में कोई भी स्थिर आगत नहीं होता है। इस प्रकार, अल्पावधि तथा दीर्घावधि सामान्यतः सभी आगत परिवर्तनशील नहीं हैं अथवा है से संबंधित है।

प्रश्न 4. ह्रासमान सीमांत उत्पाद का नियम क्या है?

उत्तर - ह्रासमान सीमांत उत्पाद का नियम यह बतलाता है कि जब एक आगत स्थिर हों और अन्य आगत के प्रयोग में वृद्धि करते हैं, तो एक समय के बाद ऐसी स्थिति आयेगी कि सीमांत उत्पाद में गिरावट आने लगेगी।

कुछ हद तक सीमांत ह्रासमान उत्पाद नियम की संकल्पना, परिवर्तनशील अनुपात के नियम से संबंधित है। यह बतलाता है कि सीमांत उत्पाद प्रारंभ में बढ़ता है, और उच्चतम बिंदु तक पहुँचने के पश्चात् इसमें गिरावट आनी आरंभ हो जाती है।

ह्रासमान सीमांत उत्पाद को एक चित्र द्वारा इस प्रकार दर्शाया जा सकता है-

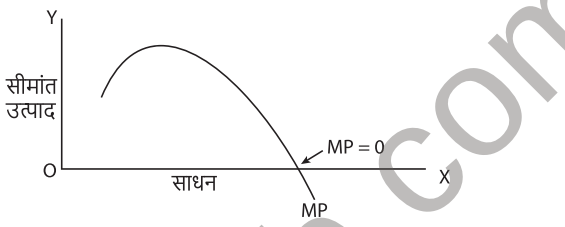

प्रश्न 5. लागत फलन की संकल्पनाओं को संक्षिप्त में समझाइए ।

उत्तर - : उत्पादन लागत तथा उत्पादन मात्रा के बीच के संबंध को एक रेखाचित्र द्वारा इस प्रकार दर्शाया जा सकता

C = f(Q)

C = लागत, f = फलन तथा Q = उत्पादन की मात्रा।

स्पष्ट है कि उत्पादन लागत एवं उत्पादन मात्रा के बीच सीधा संबंध है। अर्थात् उत्पादन मात्रा में वृद्धि होने पर उत्पादन लागत बढ़ती है जबकि उत्पादन मात्रा में कमी होने पर उत्पादन लागत घटती है।

प्रश्न 6. अल्पकालीन सीमांत लागत वक्र 'U' आकार का क्यों होता है?

उत्तर - परिवर्तनशील अनुपात का नियम लागू होने के कारण अल्पकालीन सीमांत लागत (SMC), 'U' आकार की होती है।

परिणामस्वरूप अल्पकालीन सीमांत लागत की रेखा दिये गये कारक मूल्य के साथ प्रारंभ में गिरती है और न्यूनतम बिंदु तक पहुँचने के बाद इसमें वृद्धि होने लगती है। अतः अल्पकालीन सीमांत लागत का U- आकार की होती है।

चित्र द्वारा प्रस्तुतीकरण:-

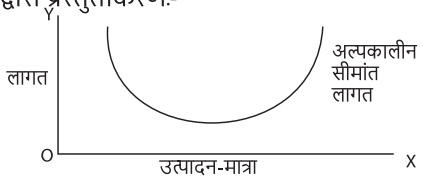

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Long Question Answer)

प्रश्न 1. परिवर्तनशील अनुपात का नियम क्या है?

उत्तर - अन्य बातें समान रहने पर परिवर्तनशील अनुपात का नियम यह बतलाता है कि अन्य साधन को स्थिर रखकर एक साधन में निरंतर वृद्धि की जाती है तो उत्पादन एक सीमा तक बढ़ने के पश्चात् घटने लगता है। यह अल्पकालीन उत्पादन फलन' से संबंधित होता है।

प्रो. बेन्हम के अनुसार, "उत्पादन के साधनों के संयोग में से एक साधन का अनुपात जैसे-जैसे बढ़ाया जाता है, वैसे-वैसे एक बिंदु के बाद उस साधन का सीमांत और औसत उत्पाद घटता जाता है।"

नियम की मान्यतायें:-

a) उत्पत्ति का अन्य साधन स्थिर तथा एक परिवर्तनशील है।

b) परिवर्तनशील साधन की समस्त इकाईयाँ समरूप होती हैं।

c) स्थिर साधन अविभाज्य होते हैं।

d) तकनीकी स्तर में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

परिवर्तनशील अनुपात के नियम की मुख्यतः तीन अवस्थायें होती हैं जिसे निम्नांकित चित्र द्वारा दर्शाया जा सकता है-

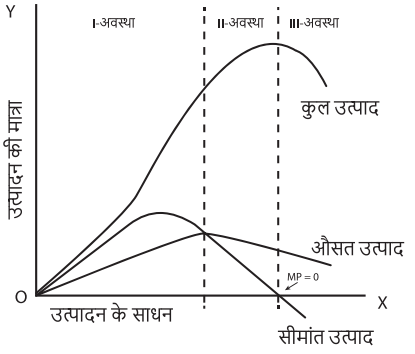

Jharkhandlan.com

A) बढ़ते प्रतिफल की अवस्था-

प्रथम अवस्था में स्थिर साधन के साथ जैसे-जैसे परिवर्तनशील साधन की इकाईयों में वृद्धि की जाती है, हमें बढ़ता हुआ उत्पादन प्राप्त होता है। परिवर्तनशील साधनों में वृद्धि होने पर स्थिर साधनों का पूर्ण विदोहन संभव होता है। आरंभ में TP, AP तथा MP तीनों बढ़ते हैं। अतः इस को बढ़ते प्रतिफल की अवस्था कहा जाता है।

B) घटते प्रतिफल की अवस्था-

द्वितीय अवस्था में AP तथा MP दोनों घट रहे हैं किंतु धनात्मक होते है। इस अवस्था का समापन उस बिंदु पर होता है यहाँ TP अधिकतम एवं MP शून्य होता है। परिणामस्वरूप TPबढ़ता है किंतु घटती दर से बढ़ता है। अतः इस अवस्था को घटते प्रतिफल की अवस्था कहा जाता है।

C) ऋणात्मक प्रतिफल की अवस्था-

तृतीय अवस्था में MP शून्य से कम अर्थात् ऋणात्मक हो जाता है जिसके कारण TP घटने लगती है। AP भी घटती है, किंतु धनालक होती है। घटती कुल उत्पादकता ऋणात्मक सीमांत उत्पादकता के कारण इस अवस्था को ऋणात्मक प्रतिफल की अवस्था' कहा जाता है।

उपर्युक्त तीनों अवस्थाओं के कारण इस नियम को उत्पादन का घटता बढ़ता नियम' अथवा 'उत्पादन का आधुनिक ह्रासमान सिद्धांत' के नाम से भी जाना जाता है।

प्रश्न 2. पैमाना का प्रतिफल क्या है?

उत्तर- अन्य बातें समान रहने पर पैमाना का प्रतिफल बतलाता है कि उत्पादन के सभी साधनों में परिवर्तनों के फलस्वरूप कुल उत्पादन में होने वाले परिवर्तन को बतलाता है।

यह एक दीर्घकालिक अवधारणा है और दीर्घकालीन 'उत्पादन फलन' से संबंधित है।

A) पैमाने के बढ़ते प्रतिफल

6) पैमाने के स्थिर प्रतिफल तथा

c) पैमाने के घटते प्रतिफल।

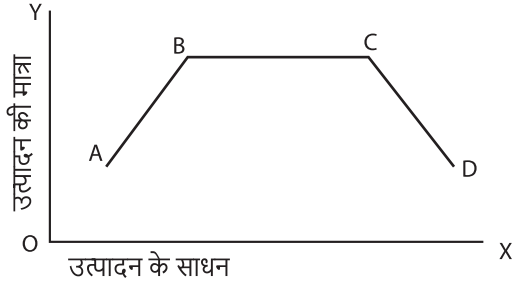

चित्र में,

AB = पैमाने के बढ़ते प्रतिफल।

BC = पैमाने के स्थिर प्रतिफल तथा

CD = पैमाने के घटते प्रतिफल।

A) पैमाने का बढ़ता प्रतिफल-

जब उत्पत्ति के सभी साधनों को एक निश्चित अनुपात में बढ़ाया जाता है, तो उत्पादन उस निश्चित अनुपात से अधिक अनुपात में बढ़ जाता है। यह पैमाने के बढ़ते प्रतिफल को दर्शाता है।

चित्र से स्पष्ट है कि, यदि उत्पत्ति-साधनों को 10% बढ़ाया जाता है तो उत्पादन में 10% से अधिक की वृद्धि होती है। पैमाने का बढ़ता प्रतिफल पैमाने के आकार में वृद्धि से श्रम-विभाजन तथा विशिष्टीकरण के कारण उत्पन्न होता है।

B) पैमाने का स्थिर प्रतिफल - जब उत्पत्ति के सभी साधनों को एक निश्चित अनुपात में बढ़ाया जाता है तो उत्पादन भी समान अनुपात में बढ़ता है। यह पैमाने के स्थिर प्रतिफल को दर्शाता है।

चित्र से स्पष्ट है कि, यदि उत्पत्ति साधनों को 10% बढ़ाया जाता है, तो उत्पादन में ठीक 10% की वृद्धि होती है।

C) पैमाने का घटता प्रतिफल जब उत्पत्ति के साधनों को एक निश्चित अनुपात में बढ़ाया जाता है तो उत्पादन में उससे कम अनुपात में वृद्धि होती है।

चित्र से स्पष्ट है कि यदि उत्पत्ति-साधनों को 15% बढ़ाया जाता है तो उत्पादन में उससे कम अर्थात् 10% की ही वृद्धि होती है।

पैमाने का घटते प्रतिफल पैमाने के आकार में वृद्धि से आंतरिक एवं बाह्य बचतों का आंतरिक एवं बाह्य हानियों में परिवर्तित होने के कारण उत्पन्न होती है।

प्रश्न 3. एक फर्म की कुल स्थिर लागत, कुल परिवर्ती लागत तथा कुल लागत क्या है, वे किस प्रकार संबंधित हैं?

उत्तर- अल्पकाल में दो प्रकार की उत्पादन लागतें सम्मिलित होती हैं - स्थिर लागतें तथा परिवर्तनशील लागतें। कुल स्थिर लागत (TFC)

अल्पकाल में उत्पादन के कुछ साधनों में परिवर्तन नहीं किया जा सकता, अतः वे स्थिर रहते हैं। एक फर्म जो स्थिर लागतों का वहन करती है, उन्हें कुल स्थिर लागत कहा जाता है। कुल स्थिर लागत उत्पादन के आकार से अप्रभावित रहती है। उत्पादन-स्तर शून्य होने पर भी फर्म को स्थिर लागतों का भुगतान वहन करना पड़ता है।

कुल परिवर्ती लागत (TVC)-

कुल परिवर्तनशील लागत का आकार उत्पादन की मात्रा पर निर्भर करता है। जैसे-जैसे उत्पादन के आकार में वृद्धि होती है, वैसे-वैसे परिवर्तनशील लागतों में भी वृद्धि होती जाती है। शून्य उत्पादन स्तर पर परिवर्तनशील लागत शून्य होती है। अतः TVC रेखा का आरंभिक बिंदु, मूल बिंदु होता है।

कुल लागत (TC)-

एक फर्म की कुल स्थिर लागत (TFC) तथा कुल परिवर्तनशील लागत (TVC) को सम्मिलित करने पर कुल लागत प्राप्त होती है। अर्थात्,

कुल लागत = कुल स्थिर लागत+कुल परिवर्तनशील लागत

या, $\boxed{TC = TFC+TVC}$

कुल स्थिर लागत, कुल परिवर्तनशील लागत तथा कुल लागत के बीच संबंध- TFC, TVC तथा TC के बीच संबंध को निम्नांकित

रेखाचित्र द्वारा दर्शाया जा सकता है-

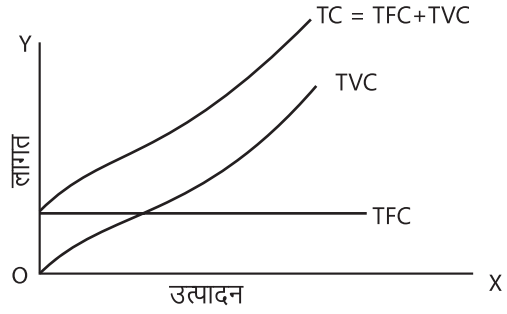

चित्र से स्पष्ट है कि TFC तथा TVC रेखाओं को जोड़कर कुल लागत (TC) की रेखा प्राप्त की गई है। उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर यदि TFC और TVC को जोड़ दिया जाये तो हमें TC रेखा प्राप्त होती है।

जहाँ से TFCरेखा निकलती है, TC रेखा का आरंभिक बिंदु है। शून्य उत्पादन स्तर पर TVC शून्य होने के कारण TC सदैव TFC के बराबर होती है। TFC हमेशा स्थिर होती है और TC और TVC रेखायें परस्पर समांतर रूप से आगे बढ़ती है क्योंकि TC और TVC का अंतर TFC को बतलाता है। अर्थात्

TFC = TC-TVC या,

TVC = TC-TFC

इस प्रकार, एक फर्म के लिए कुल लागत, कुल स्थिर लागत तथा कुल परिवर्ती लागत का जोड़ होती है।

Jharkhandiap.com

अध्याय - 4 पूर्ण प्रतिस्पर्धा की स्थिति में फर्म का सिद्धांत

बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Question)

1. किस बाजार में AR वक्र X- अक्ष के समानांतर होता है ?
(a) पूर्ण प्रतियोगिता (Perfect Competition)
(b) एकाधिकार (Monopoly)
(c) एकाधिकारिक प्रतियोगिता(Monopolistic Competition)
(d) इनमें से सभी

2. किस बाजार में AR = MR होता है ?
(a) एकाधिकार (b) एकाधिकारिक प्रतियोगिता
(c) अ और ब दोनों (d) पूर्ण प्रतियोगिता

3. फर्म का लाभ निम्नलिखित में किस शर्त को पूरा करने पर अधिकतम होगा ?
(a) जहां MR = MC
(b) जहां MC वक्र रेखा MR को नीचे से काटे
(c) a और b दोनों
(d) इनमें से कोई नहीं ।

4. फर्म के संतुलन की प्रथम शर्त है -
(a) MC = MR (b) MR = TR
(c) MR = AR (d) AC = AR

5. सम-विच्छेद बिंदु तब उत्पन्न होता है जब -
(a) TR = TC (b) MR = MC
(c) TR > TC (d) (a) और (b) दोनों

6. पूर्ति निम्नलिखित में किस से जुड़ी होती है
(a) किसी समय की अवधि (b) कीमत
(c) (a) और (b) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

7. वस्तु की पूर्ति के निर्धारक घटक कौन- से हैं?
(a) वस्तु की कीमत
(b) संबंधित वस्तुओं की कीमत
(c) उत्पादन साधनों की कीमत
(d) उपर्युक्त सभी

8. पूर्ति के नियम को निम्नलिखित में कौन- सा फलन प्रदर्शित करता है ?
(a) S = f(p) (b) S = f(1/p)
(c) S = f(Q) (d) इनमें से कोई नहीं

9. अन्य बातें समान रहे तो वस्तु की कीमत तथा पूर्ति की मात्रा में धनात्मक संबंध क्या व्यक्त करता है ?
(a) मांग का नियम (b) पूर्ति की लोच
(c) पूर्ति का नियम (d) पूर्ति फलन

10. "पूर्ति अपने लिए मांग स्वयं ही उत्पन्न कर लेती है । " यह किसका कथन है?
(a) Prof. J.B.Say (b) Ricardo
(c) Prof Pigou (d) Keynes

11. जब कीमत में थोड़ा - सा परिवर्तन होने पर पूर्ति में ज्यादा वृद्धि हो जाए तो पूर्ति का स्वरूप निम्नलिखित में कौन-सा होगा ?
(a) लोचदार (b) बेलोचदार
(c) पूर्ण लोचदार (d) पूर्ण बेलोचदार

12. जब किसी वस्तु की पूर्ति में आनुपातिक परिवर्तन उसकी कीमत में होने वाले आनुपातिक परिवर्तन से अधिक होता है तो पूर्ति की लोच होगी -
(a) इकाई से कम (b) इकाई के बराबर
(c) इकाई से अधिक (d) अनंत

13. यदि किसी वस्तु की कीमत में 40 %की वृद्धि हो परंतु पूर्ति में केवल 15% की वृद्धि हो ऐसी वस्तु की पूर्ति होगी
(a) अत्याधिक लोचदार (b) लोचदार
(c) बेलोचदार (d) पूर्णतया बेलोचदार

14. निम्नांकित चित्र प्रदर्शित करता है

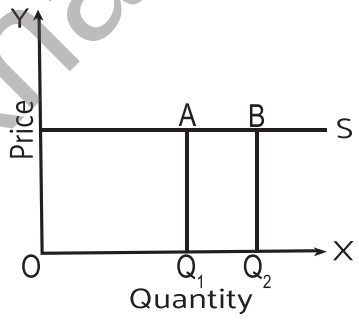

चित्र

(a) पूर्णतया लोचदार पूर्ति (b) पूर्णतया बेलोचदार पूर्ति
(c) लोचदार पूर्ति (d) बेलोचदार पूर्ति

15. निम्नांकित चित्र प्रदर्शित करता है

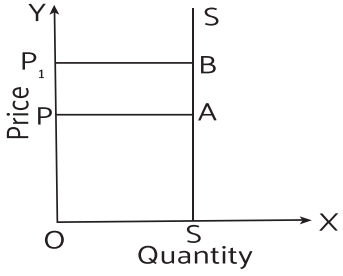

चित्र

(a) लोचदार पूर्ति (b) पूर्णतया बेलोचदार पूर्ति
(c) पूर्णतया लोचदार पूर्ति (d) बेलोचदार पूर्ति

16. किस प्रकार के बाजार में एक फर्म कीमत स्वीकारक होती है ?
(a) पूर्ण प्रतियोगिता (b) एकाधिकार
(c) एकधिकारात्मक प्रतियोगिता
(d) अल्पाधिकार

17. यदि एक फर्म का मांग वक्र सरल रेखा है तो -
(a) फर्म प्रचलित कीमत पर कितनी भी मात्रा बेच सकती है
(b) फर्म प्रचलित कीमत पर एक निर्धारित मात्रा बेच सकती है
(c) सभी फर्में एक वस्तु की समान मात्रा बेचेंगी
(d) फर्मेंअपने उत्पाद में विभिन्नता ला सकती हैं

Jharkhandlab.com

18. **जिस बाजार में स्वतंत्र प्रवेश तथा बहिर्गमन हो , उसका नाम है -**

(a) एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता बाजार
(b) अपूर्ण प्रतियोगिता का बाजार
(c) पूर्ण प्रतियोगिता का बाजार
(d) इनमें से कोई नहीं

19. **पूर्ण प्रतियोगिता में क्या स्थिर रहता है?**

(a) AR (b) MR
(c) AR तथा MR दोनों (d) उपर्युक्त में कोई नहीं

20. **पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की निम्नलिखित में कौन - सी विशेषताएं हैं ?**

(a) क्रेताओं और विक्रेताओं की अधिक संख्या
(b) वस्तु की समरूप इकाइयां
(c) बाजार दशाओं का पूर्ण ज्ञान
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर - 1-a 2-d 3-c 4-a 5-a 6-b 7-d
8-a 9-c 10-a 11-a 12-c 13-c 14-a
15-b 16-a 17-a 18-c 19-c 20-d

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Very Short Question Answer)

प्रश्न 1. पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में AR तथा MR में क्या संबंध होता है ?

उत्तर - पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में AR , MR के बराबर होता है ।

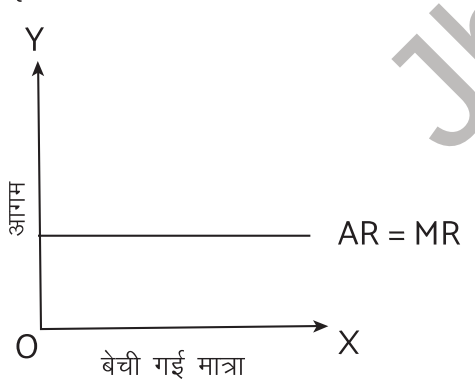

प्रश्न 2. पूर्ण प्रतियोगिता में AR वक्र X-अक्ष के समानांतर क्यों होता है ?

उत्तर - पूर्ण प्रतियोगिता में प्रत्येक फर्म के लिए कीमत दी हुई होती है । अपनी इच्छा से फर्म कीमत में परिवर्तन नहीं कर सकती । अतः उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर कीमत समान रहती है। अतः पूर्णप्रतियोगिता के अंतर्गत फर्म का मांग वक्र (अथवा औसत आगम वक्र) OX- अक्ष के समांतर होता है ।

प्रश्न 3. कीमत रेखा क्या है ?

उत्तर - कीमत रेखा एक फर्म के मांग वक्र को दर्शाती है ,वह बाजार कीमत तथा एक फर्म के उत्पादन मात्रा के बीच संबंध को दर्शाती है ।

प्रश्न 4. पूर्ति क्या है ?

उत्तर - पूर्ति से अभिप्राय एक वस्तु की उन विभिन्न मात्राओं से है जो एक बाजार में एक निश्चित समय पर उत्पादक विभिन्न कीमतों पर बेचने के लिए तैयार है ।

प्रश्न 5. पूर्ति के विस्तार से क्या समझते हैं ?

उत्तर - पूर्ति के विस्तार से अभिप्राय किसी वस्तु की कीमत बढ़ने के फलस्वरूप उसकी पूर्ति में होने वाली वृद्धि से है ।

प्रश्न 6. पूर्ति में वृद्धि क्या है ?

उत्तर - पूर्ति में वृद्धि से अभिप्राय पूर्ति वक्र के दाएं ओर खिसकाव से है। यह वह स्थिति हैं जिसमें उत्पादक वर्तमान कीमत पर वस्तु की अधिक मात्रा बेचने के लिए तैयार होता है ।

प्रश्न 7. पूर्ति के संकुचन से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर - पूर्ति के संकुचन से अभिप्राय किसी वस्तु की कीमत कम होने के फलस्वरूप उसकी पूर्ति में होने वाली कमी से है ।

प्रश्न 8. पूर्ति में कमी को परिभाषित करें ?

उत्तर - पूर्ति में कमी से अभिप्राय पूर्ति वक्र के बाई और खिसकाव से है यह वह स्थिति है जिसमें उत्पादक वर्तमान कीमत पर वस्तु की कम मात्रा बेचने के लिए तैयार है ।

प्रश्न 9. एक वस्तु की पूर्ति कब लोचदार कहलाती है ?

उत्तर - जब पूर्ति की मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन कीमत में प्रतिशत परिवर्तन से अधिक होता है ।

प्रश्न 10. उत्पादक के संतुलन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर - उत्पादक की संतुलन की अवस्था उस समय होती है जबकि उसके लाभ अधिकतम होते हैं । अधिकतम लाभ के लिए फर्म के कुल आगम (TR) तथा कुल लागत (TC) का अंतर अधिकतम हो ।

प्रश्न 11. उत्पादक कौन है

उत्तर - उत्पादक एक आर्थिक एजेंट है जो उत्पत्ति के साधनों को एकत्रित करके अधिकतम लाभ अर्जित करने के उद्देश्य से वस्तुओं का उत्पादन करता है ।

प्रश्न 12. संतुलन कीमत क्या है?

उत्तर - संतुलन कीमत, वह कीमत है जिस पर मांग तथा पूर्ति एक दूसरे के बराबर होते हैं इस कीमत पर परिवर्तन के लिए कोई प्रेरक तत्व नहीं होता ।

प्रश्न 13. एक कीमत स्वीकारक फर्म की बाजार कीमत तथा औसत संप्राप्ति में क्या संबंध है ?

उत्तर - एक कीमत स्वीकारक फर्म की औसत संप्राप्ति बाजार कीमत के बराबर होती है ।

प्रश्न 14. इकाई के बराबर पूर्ति लोच प्रकट करने वाले पूर्ति वक्र बनाएं ?

उत्तर -

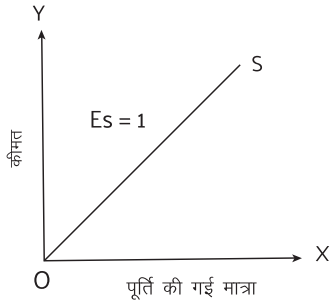

प्रश्न 15. पूर्ति की लोच का सूत्र लिखें ?

उत्तर - पूर्ति की लोच = पूर्ति में आनुपातिक परिवर्तन/ कीमत में आनुपातिक परिवर्तन

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Short Question Answer)

प्रश्न 1. पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में फर्म के औसत आगम तथा सीमांत आगम को समझाइए

उत्तर - पूर्ण प्रतियोगिता में समरूप इकाइयां एक ही कीमत पर बेची जाती हैं अतः औसत आगम और सीमांत आगम वक्र एक सीधी रेखा के रूप में होती है । यह वक्र X- अक्ष के समानांतर होता है

Jharkhandtab.com

क्योंकि उत्पादन की एक अतिरिक्त इकाई को भी सामान्य विक्रय मूल्य पर बेचा जा सकता है।

बेची गई इकाइयां	कीमत	कुल आगम	औसत आगम	सीमांत आगम
1	10	10	10	10
2	10	20	10	10
3	10	30	10	10
4	10	40	10	10
5	10	50	10	10

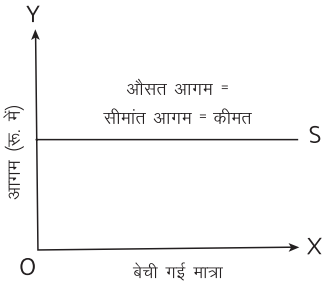

ऊपर दिए गए चित्र में बेची गई इकाइयां X-अक्ष पर तथा आगम Y-अक्ष पर दिखाया गया है। औसत आगम और सीमांत आगम समान है अतः वक्र X- अक्ष के समानांतर है।

प्रश्न 2. पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत रेखा की क्या प्रकृति होती है?

उत्तर - पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत रेखा क्षैतिज अर्थात X- अक्ष के समांतर होती है। पूर्ण प्रतियोगिता में उद्योग कीमत का निर्धारण करता है। फर्म उस कीमत को स्वीकार करती है।

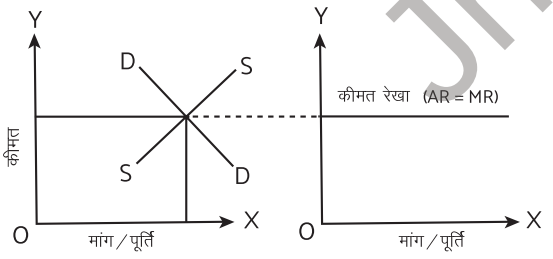

दी हुई कीमत पर एक फर्म एक वस्तु की जितनी भी मात्रा बेचना चाहती है बेच सकती है। पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत रेखा OX - अक्ष के समानांतर होती है, कीमत रेखा को पूर्ण प्रतियोगिता फर्म का मांग वक्र भी कहा जाता है।

प्रश्न 3. पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत रेखा तथा कुल आगम में क्या संबंध है?

उत्तर- पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत तथा कुल आगम में महत्वपूर्ण संबंध है। कीमत रेखा के नीचे का क्षेत्र कुल आगम के बराबर होता है। पूर्ण प्रतियोगिता में प्रत्येक फर्म कीमत को स्वीकार करती है। उद्योग द्वारा निर्धारित कीमत को इसे स्वीकार करना पड़ता है।वह दी हुई कीमत पर अपने उत्पाद की जितनी चाहे उतनी इकाइयां बेच सकती है।

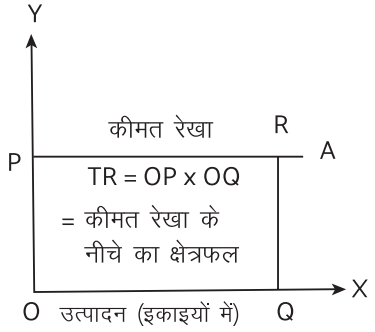

अतः कुल आगम कीमत तथा बेची गई इकाइयों का गुणनफल होगा। रेखा चित्र में वस्तु की कीमत OP है। PA कीमत रेखा है।फर्म के विक्रय की मात्रा OQ है। अतः कुल आगम OP x OQ होगा यह OQRP आयत के क्षेत्रफल को प्रदर्शित करता है। अतः हम कह सकते हैं कि पूर्ण प्रतियोगिता में कुल आगम कीमत रेखा के नीचे के क्षेत्रफल के बराबर है।

प्रश्न 4. एक कीमत स्वीकारक फर्म का कुल संप्राप्ति वक्र ऊपर की ओर प्रवणता वाली सीधी रेखा क्यों होती है? यह वक्र उद्गम से होकर क्यों गुजरता है?

उत्तर - पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में मूल्य दिया हुआ रहता है तथा प्रत्येक फर्म को उसे स्वीकार करना पड़ता है, अतः कुल आय तथा उत्पादन में संबंध स्थापित करने के लिए कुल बिक्री की मात्रा में मूल्य से गुणा करना होता है। उदाहरण के लिए मान लिया जाए कि कोई विक्रेता 100 किलो आलू बेचता है और आलू का मूल्य रु० 10 प्रति किलो है तो कुल आय (TR) 100 x 10 = 1000 रुपए होगी। जैसे-जैसे विक्रय की मात्रा बढ़ती जाती है वैसे - वैसे कुल आय में वृद्धि होती जाती है। इसे हम चित्र के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं।

चित्र में OX -रेखा पर उत्पादन तथा OY- रेखा पर कुल आय को दिखलाते हैं। TR कुल आय की रेखा है। चित्र से स्पष्ट है कि शून्य उत्पादन पर TR अवश्य ही शून्य होगी। अतः TR रेखा उद्गम से गुजरती है और सीधी रेखा का रूप ले लेती है क्योंकि बाजार में दिए हुए समान मूल्य पर उत्पादन की कोई भी मात्रा बेची जा सकती है।

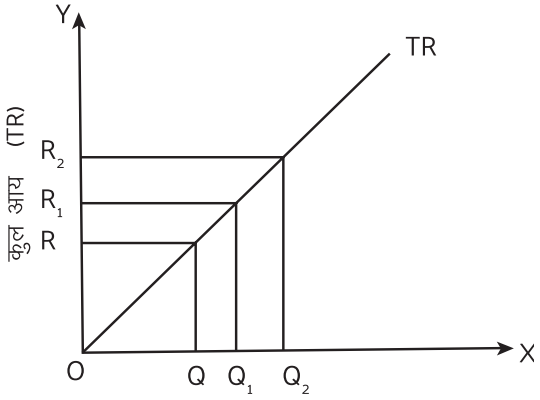

चित्र से स्पष्ट है कि जब उत्पादन OQ है तो कुल आय OR है लेकिन जब उत्पादन बढ़कर क्रमशःOQ1 तथा OQ2 हो जाता है तो कुल आय भी बढ़कर क्रमशः OR1 तथा OR2 हो जाती है यानी उत्पादन अथवा बिक्री की मात्रा में वृद्धि के साथ-साथ कुल आय भी बढ़ती जाती है।

प्रश्न 5. सीमांत आगम और सीमांत लागत द्वारा फर्म का साम्य कैसे निर्धारित होता है?

उत्तर - फर्म के संतुलन को सीमांत आगम तथा सीमांत लागत विधि द्वारा भी समझ सकते हैं। फर्म को संतुलन प्राप्त करने के लिए दो शर्तों को पूरी करनी होती है।

(i) MR = MC तथा

(ii) MC रेखा, MR को नीचे से काटे।

सीमांत आय और सीमांत लागत के बीच का अंतर लाभ को बताता है। जब तक सीमांत आय सीमांत लागत से अधिक होता है उत्पादन में वृद्धि लाभदायक है। जब सीमांत आय सीमांत लागत के बराबर होती है उस समय फर्म को अधिकतम लाभ की प्राप्ति होती है। यदि उसके बाद भी उत्पादन में वृद्धि होती है तो सीमांत लागत सीमांत आय से अधिक हो जाएगी और उत्पादक को हानि होगी।

Jharkhandstudy.com

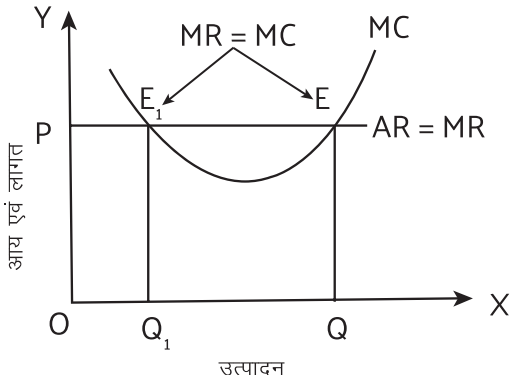

चित्र से स्पष्ट है कि MC वक्र MR वक्र को दो बिंदुओं E तथा E1 पर काटती है बिंदु E1 पर उत्पादन OQ1 है। यदि उत्पादक इसी बिंदु पर संतुलन को प्राप्त करता है तो उत्पादन वृद्धि होने पर मिलने वाले लाभ से वंचित रहना पड़ेगा। E1 बिंदु से E बिंदु के बीच सीमांत लागत कम है सीमांत आय से। E बिंदु पर MR = MC। E बिंदु के बाद यदि उत्पादक उत्पादन करेगा तो उसे हानि प्राप्त होगी क्योंकि सीमांत लागत सीमांत आय से अधिक होगा।

प्रश्न 6. पूर्ति का नियम क्या है? इसे उदाहरण व रेखा चित्र द्वारा समझाइए।

उत्तर - अन्य बातें समान रहने पर किसी वस्तु की अपनी कीमत बढ़ने पर पूर्ति की गई मात्रा बढ़ जाती है और कीमत कम होने पर पूर्ति की गई मात्रा कम हो जाती है।

Px	Sx
10	100
11	200
12	300

तालिका से ज्ञात होता है कि जब वस्तु की अपनी कीमत ₹ 10 से बढ़कर 11 हो जाती है तो पूर्ति की गई मात्रा 100 इकाइयों से बढ़कर 200 इकाइयों हो जाती है इसी तरह कीमत के ₹ 11 से बढ़कर ₹ 12 होने पर यह 200 इकाइयों से बढ़कर 300 इकाइयां हो जाती हैं इसका अर्थ है कि वस्तु की अपनी कीमत तथा इसकी पूर्ति के लिए मात्रा में धनात्मक संबंध है इसे हम रेखा चित्र द्वारा दिखाते हैं।

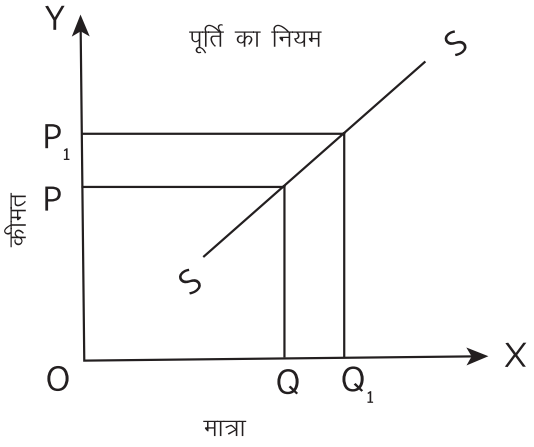

पूर्ति वक्र (SS) का ढलान ऊपर की ओर है यह प्रकट करता है कि वस्तु की अपनी कीमत बढ़ने पर पूर्ति की गई मात्रा भी बढ़ती है जब कीमत OP से बढ़कर OP1 हो जाती है तो पूर्ति की गई मात्रा OQ से बढ़कर OQ1 हो जाती है।

प्रश्न 7. पूर्ति में विस्तार को रेखा चित्र द्वारा समझाइए?

उत्तर - पूर्ति में विस्तार - पूर्ति का विस्तार तब होता है जब वस्तु की अपनी कीमत में वृद्धि के फलस्वरूप पूर्ति की गई मात्रा में वृद्धि होती है।

Px	Qx
1	1
5	5

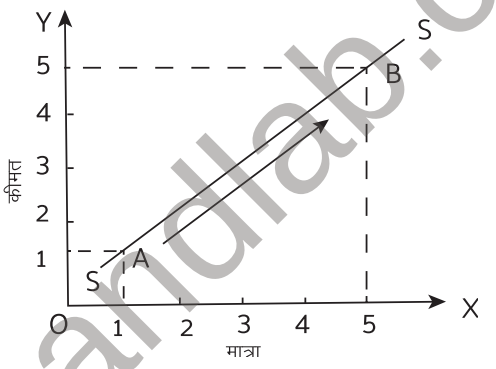

पूर्ति के विस्तार को पूर्ति वक्र पर बिंदु A से B तक संचलन द्वारा दर्शाया गया है। वस्तु की अपनी कीमत में वृद्धि के फ़लस्वरूप पूर्ति की गई मात्रा में वृद्धि होती है।

तालिका में जब वस्तु -X की कीमत 1 रुपया है तो इसकी पूर्ति की गई मात्रा 1 इकाई है। जब कीमत बढ़कर 5 रुपया प्रति इकाई हो जाती है तो पूर्ति का विस्तार होकर 5 इकाइयाँ हो जाता है। उत्पादक उसी पूर्ति वक्र के बिन्दु A से बिंदु B पर पहुंच जाता है जिसे पूर्ति वक्र पर संचलन कहते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Long Question Answer)

प्रश्न 1. पूर्ण प्रतियोगिता से क्या अभिप्राय है इसकी प्रमुख विशेषताएं क्या है?

उत्तर - पूर्ण प्रतियोगिता, बाजार की वह स्थिति है जिसमें क्रेता तथा विक्रेता की संख्या बहुत अधिक होती है। एकसमान वस्तुओं का उत्पादन होता है। इस बाजार में वस्तु की एक ही कीमत प्रचलित होती है।

परिभाषा-

प्रो. लेफ्टविच के अनुसार, "पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की वह स्थिति है; जिसमें बहुत सी फर्में एक समान वस्तुएँ बेचती हैं और इनमें से किसी भी फर्म की यह स्थिति नहीं होती कि वह बाजार कीमत को प्रभावित कर सके।"

पूर्ण प्रतियोगिता की प्रमुख विशेषताएं-

(i) क्रेताओं और विकेताओं की अत्याधिक संख्या-

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में क्रेताओं और विक्रेताओं की संख्या बहुत अधिक होती हैं। जिसके कारण कोई भी क्रेता अथवा विक्रेता बाजार कीमत को प्रभावित नहीं कर पाता है।

(ii) **समरूप वस्तुएँ-**

इस बाजार में सभी विक्रेताओं द्वारा बेची जाने वाली वस्तुओं की इकाईयाँ समरूप होती हैं।

(iii) फर्मों का स्वतंत्र प्रवेश व निकास-

पूर्ण प्रतियोगिता में कोई भी नई फर्म उद्योग में प्रवेश कर सकती है तथा कोई भी पुरानी फर्म उद्योग से बाजार जा सकती है। इस प्रकार पूर्ण प्रतियोगिता में फर्मों के उद्योग में आने-जाने पर कोई प्रतिबंध नहीं होता है।

jharkhandlab.com

(iv) **बाजार का पूर्ण ज्ञान-**

इस बाजार में क्रेताओं तथा विक्रेताओं को बाजार की दशाओं का पूर्ण ज्ञान होता है। अतः कोई क्रेता वस्तु की प्रचलित कीमत से अधिक कीमत देकर वस्तु नहीं खरीदेगा।

(v) साधनों की पूर्ण गतिशीलता-

इस प्रतियोगिता में उत्पत्ति के साधन बिना किसी बाधा के एक फर्म से दूसरे फर्म में अथवा एक उद्योग से दूसरे उद्योग में स्थानांतरित किये जा सकते हैं।

(vi) यातायात लागत का अभाव-

इस प्रतियोगिता में यातायात लागत शून्य होती है जिसके कारण बाजार में एक कीमत प्रचलित रहती है।

प्रश्न 2. पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म कीमत प्राप्तकर्ता होती है। क्यों?

अथवा

पूर्ण प्रतियोगिता में मूल्य कैसे निर्धारित होता है?

उत्तर- पूर्ण प्रतियोगिता में क्रेता तथा विक्रेता एक बड़ी संख्या में होते हैं जिसके कारण कोई व्यक्तिगत फर्म वस्तु की कीमत पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकती। उद्योग में एकसमान वस्तुएँ उत्पादित करने वाली अनेक फर्में होती हैं। जिसके कारण एक व्यक्तिगत फर्म का उद्योग के उत्पादन में सूक्ष्म योगदान होता है। यही कारण है कि पूर्ण प्रतियोगिता में कोई फर्म उद्योग की कीमत को प्रभावित नहीं कर पाती। पूर्ण प्रतियोगिता में एक उद्योग के अन्तर्गत कार्य करने वाली प्रत्येक फर्म कीमत प्राप्तकर्ता (Price-taker) तथा मात्रा नियोजक (quantity-adjuster) होती है।

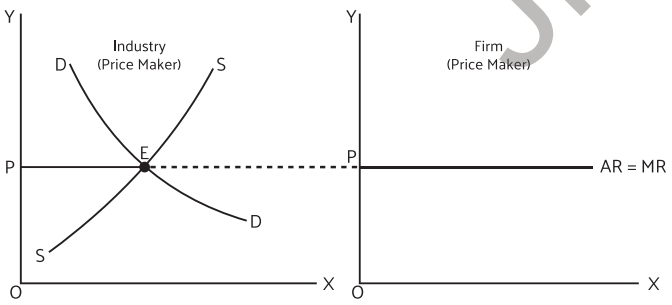

उपर्युक्त चित्र से वस्तु की कीमत वस्तु की माँग तथा वस्तु की पूर्ति द्वारा निर्धारित हो रही है। उद्योग में सन्तुलन बिन्दु E पर उपलब्ध होता है जिसके कारण वस्तु की OP कीमत तय होती है। इस कीमत OP को उद्योग के अन्तर्गत कार्य कर रही प्रत्येक फर्म दिया हुआ मान लेती है तथा वह इस कीमत पर अपनी उत्पादन मात्रा को तय करती है।

पूर्ण प्रतियोगी फर्म उद्योग द्वारा निर्धारित इस कीमत में तो परिवर्तन नहीं कर सकती, किन्तु इस कीमत पर वह वस्तु की कितनी ही मात्रा का उत्पादन एवं विक्रय कर सकती है। यही कारण है कि फर्म के लिए कीमत रेखा X- अक्ष के समानान्तर एक क्षैतिज रेखा (Horizontal line parallel to X-axis) होती है।

प्रश्न 3. बाज़ार कीमत एवं सामान्य कीमत में अंतर कीजिए।

उत्तर- बाजार कीमत एवं सामान्य कीमत में अन्तर

बाजार कीमत	सामान्य कीमत
1. बाजार कीमत पूर्ण प्रतियोगी बाजार दशा में अति अल्पकाल अथवा बाजार अवधि में निर्धारित होती है।	1. सामान्य कीमत पूर्ण प्रतियोगी बाजार में दीर्घकाल में माँग तथा पूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है।
2. इस कीमत-निर्धारण में वस्तु की माँग वस्तु की पूर्ति की तुलना में अधिक प्रभावी रहती है क्योंकि अति अल्पकाल में पूर्ति स्थिर रहती है।	2. इस कीमत-निर्धारण में पूर्ति अधिक सबल होती है क्योंकि दीर्घकाल में पर्याप्त समय होने के कारण वस्तु की पूर्ति माँग की दशाओं के अनुसार पूर्णतः समायोजित की जा सकती है।
3. यह कीमत माँग तथा पूर्ति के अस्थायी सन्तुलन द्वारा निर्धारित होती है जिसके कारण अल्पकालीन बाजार कीमत में। उच्चावचन दृष्टिगोचर होते हैं।	3. दीर्घकाल में सामान्य कीमत माँग तथा पूर्ति के स्थायी सन्तुलन द्वारा निर्धारित होती है।
4. इस कीमत में उत्पादक को असामान्य लाभ, सामान्य लाभ या हानि भी हो। सकती है।	4. इस कीमत में उत्पादक को केवल सामान्य लाभ होता है।
5. यह कीमत वास्तव में बाजार में प्रचलित होती है।	5. यह कीमत काल्पनिक होती है।
6. बाजार कीमत में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं तथा वह सामान्य कीमत के सापेक्ष इर्द-गिर्द घूमती रहती है।	6. सामान्य कीमत स्थिर होती है।

प्रश्न 4. पूर्ण प्रतियोगिता और एकाधिकार में अन्तर लिखिए।

पूर्ण प्रतियोगिता	एकाधिकार
1. औसत आगम और सीमान्त आगम दोनों बराबर होते हैं। AR = MR	1. औसत आगम सीमान्त आगम से अधिक होता है। AR > MR
2. वस्तु की कीमत सीमान्त लागत के बराबर होती है। AR = MC	2. वस्तु की कीमत सीमान्त लागत से अधिक होती है। AR > MC
3. दीर्घकाल में केवल स्थिर लागत दशा में उत्पादन सम्भव है।	3. दीर्घकाल में घटती लागत, स्थिर लागत एवं बढ़ती लागत तीनों दशाओं में उत्पादन एवं सन्तुलन सम्भव है।
4. दीर्घकाल में केवल सामान्य लाभ की दशा सम्भव है।	4. दीर्घकाल में केवल लाभ ही मिलता है। चाहे लागत घटती हो, स्थिर हो अथवा बढ़ती हो।
5. उत्पादन स्तर अधिक और कीमत कम होती है।	5. कीमत ऊँची और उत्पादन स्तर कम होता है।
6. फर्म अपने अनुकूलतम आकार (optimun size) पर सन्तुलन में होती है।	6. फर्म अपने अनुकूलतम आकार से कम (less than optimum) पर सन्तुलन में होती है।
7. कीमत विभेदीकरण सम्भव नहीं है। क्योंकि क्रेताओं को बाजार का पूर्ण ज्ञान होता है।	7. कीमत विभेदीकरण सम्भव एवं लाभप्रद है।
8. एकसमान उत्पादन करने वाली फर्मों की संख्या बहुत अधिक होती है।	8. एक अकेली फर्म होती है। फर्म ही उद्योग है और उद्योग ही फर्म है।
9. फर्मों का उद्योग में प्रवेश एवं बहिर्गमन स्वतन्त्र होता है।	9. फर्मों का उद्योग में प्रवेश प्रतिबन्धित होता है।

Jharkhandlab.com

प्रश्न 5. कुल आगम और कुल लागत विधि द्वारा फर्म का संतुलन कैसे निर्धारित होता है ?

उत्तर - कुल आय और कुल लागत का अंतर कुल लाभ को बताता है।

कुल लाभ = कुल आय – कुल लागत

उत्पादन के अलग-अलग स्तरों पर TR तथा TC का अंतर अलग - अलग होता है। एक उत्पादक का कुल लाभ तभी अधिकतम होता है जब TR तथा TC का अंतर अधिकतम होता है।

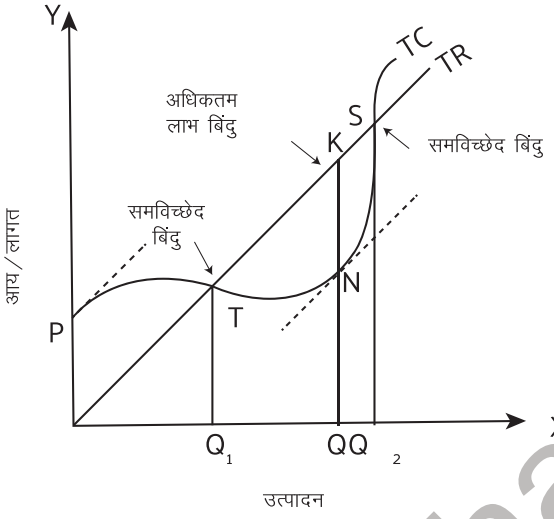

पूर्ण प्रतियोगिता में एक फर्म दी गई कीमत पर वस्तु की कितनी भी मात्रा का उत्पादन कर सकती है क्योंकि पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म कीमत स्वीकारक तथा मात्रा निर्धारित करने वाला होता है इसलिए पूर्ण प्रतियोगिता में कुल आगम वक्र बाएं से दाएं चढ़ती हुई सीधी रेखा होती है। चित्र में कुल आगम वक्र को TR से दिखाते हैं। उत्पादन के बढ़ने पर कुल लागत बढ़ती है चित्र में कुल लागत वक्र TC से दिखाया गया है। बिंदु Q1 तक अर्थात OQ1 उत्पादन तक कुल लागत, कुल आगम से अधिक है। उत्पादन बिंदु Q1 पर कुल आगम तथा कुल लागत दोनों बराबर हैं। बिंदु T एक समविच्छेद बिंदु है। इस बिंदु T पर शून्य लाभ की स्थिति है। उत्पादन बिंदु Q1 से Q2 तक कुल आगम, कुल लागत से अधिक है। उत्पादक के लिए यह क्षेत्र लाभ का क्षेत्र है। इस क्षेत्र के विभिन्न उत्पादन बिंदुओं से संबंधित कुल लागत रेखा के बिंदु पर स्पर्श रेखा खींचकर कुल लागत बिंदु तथा कुल आगम बिंदु का अंतर ज्ञात करते हैं। जिस बिंदु पर यह अंतर अधिकतम होगा वही बिंदु फर्म के संतुलन का बिंदु होगा। चित्र में यह उत्पादन संतुलन बिंदु Q दिखाया गया है जिस पर कुल आगम (TR) तथा कुल लागत वक्र (TC) की खड़ी दूरी KN अधिकतम है। बिंदु Q2 के बाद पुनः कुल लागत कुल आगम से अधिक है। अतः उत्पादक को हानि होने के कारण Q2 के बाद उत्पादन नहीं होगा। इस प्रकार उत्पादन स्तर OQ पर कुल आगम (TR) तथा कुल लागत (TC) का अंतर अधिकतम है। अतः उत्पादक उत्पादन स्तर OQ पर अधिकतम लाभ प्राप्त करते हुए संतुलन में होगा।

Jharkhandlab.com

अध्याय 5 बाज़ार संतुलन

बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Question)

1. किसी वस्तु का मूल्य निर्धारित होता है -

a. मांग द्वारा b. पूर्ति द्वारा
c. मांग एवं पूर्ति द्वारा d. सरकार द्वारा

2. बाजार मूल्य पाया जाता है-

a. अल्पकालीन बाजार में b. दीर्घकालीन बाजार में
c. अति दीर्घकालीन बाजार में d. इनमें से कोई नहीं

3. निम्नलिखित में से किसने कहा था कि "किसी वस्तु की कीमत मांग एवं पूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है"।

a. जेवेन्स b. वालरस
c. मार्शल d. इनमें से कोई नहीं

4. संतुलन कीमत के निर्धारक घटक निम्नलिखित में कौन से है?

a. वस्तु की मांग b. वस्तु की पूर्ति
c. a और b दोनों d. इनमें से कोई नहीं

5. कीमत उस बिंदु पर निर्धारित होती है जहां -

a. वस्तु की मांग अधिक हो
b. वस्तु की पूर्ति अधिक हो
c. वस्तु की मांग और पूर्ति बराबर हो
d. इनमें से कोई नहीं

6. निम्नलिखित में किसने कीमत निर्धारण प्रक्रिया में समय तत्व का विचार प्रस्तुत किया?

a. रिकार्डो b. वालरस
c. मार्शल d. जे. के. मेहता

7. संतुलन की स्थिति में -होता है ?

a. विक्रय की कुल मात्रा खरीदी जाने वाली मात्रा के बराबर होती है
b. बाजार पूर्ति बाजार मांग के बराबर होती है
c. ना ही फर्म, ना ही उपभोक्ता विचलित होना चाहते हैं
d. उपरोक्त सभी

8. एक पूर्ण प्रतियोगि बाजार में यदि फर्में बाजार में निर्बाध प्रवेश तथा बहिर्गमन कर सकती है तो संतुलन कीमत सदैव - होती है ?

a. फर्मों के सीमांत लागत के बराबर होगी
b. फर्मों के न्यूनतम औसत लागत के बराबर होगी
c. फर्मों के कुल लागत के बराबर होगी
d. फर्मों के सीमांत और औसत लागत के बराबर होगी

9. यदि किसी कीमत पर बाजार पूर्ति बाजार मांग से अधिक है, तो उस कीमत पर बाजार में क्या होगा ?

a. अधिपूर्ति होगी b. अधिमांग होगी
c. a तथा b दोनों d. इनमें से कोई नहीं

10. पूर्ति वक्र अपरिवर्तित रहने पर जब मांग वक्र दांए ओर शिफ्ट होती है तो फर्मों की संख्या स्थिर होने पर संतुलन मात्रा में वृद्धि होती है तथा संतुलन कीमत में - होगी?

a. गिरावट होगी b. वृद्धि होगी
c. अपरिवर्तित होगी d. इनमें से कोई नहीं

उत्तर - 1-c 2-a 3-c 4-c 5-c 6-c 7-d 8-b 9-a 10-b

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Very Short Question Answer)

1. संतुलन को परिभाषित करें ?

उत्तर - वह स्थिति जिसमें परिवर्तन की कोई प्रवृत्ति नहीं पाई जाती है। बाजार उस स्थिति में संतुलन में माना जाता है जब बाजार मांग एवं बाजार पूर्ति बराबर होती है।

2. बाजार कीमत किसे कहते हैं?

उत्तर - वह कीमत जो बाजार में एक निश्चित समय पर पाई जाती है। बाजार कीमत सामान्य कीमत के ऊपर नीचे घूमती रहती है।

3. कीमत निर्धारण करने वाली शक्तियां लिखें ?

उत्तर - कीमत निर्धारण करने वाली दो शक्तियां (i)मांग शक्ति तथा (ii) पूर्ति शक्ति है।

4. किन किन विधियों द्वारा सरकार बाजार कीमत पर नियंत्रण रख सकती है ?

उत्तर - (i) कीमत नियंत्रण तथा राशनिंग
(ii) न्यूनतम कीमत निर्धारण

5. भारत सरकार प्रत्येक वर्ष किन वस्तुओं की कीमत निर्धारित करती है?

उत्तर - भारत सरकार प्रत्येक वर्ष अनेक कृषि वस्तुओं की न्यूनतम कीमत निर्धारित करती है।

6. बाजार में आधिक्य की स्थिति कब उत्पन्न होती है ?

उत्तर - बाजार में आधिक्य की स्थिति तब उत्पन्न होती है जबकि सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम कीमत सामान्य कीमत से अधिक होती है।

7. राशनिंग से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर - राशनिंग से अभिप्राय है कि एक निश्चित अवधि में एक वस्तु की अधिकतम मात्रा खरीदने पर सीमा लगाना।

8. कालाबाजारी का क्या अर्थ है?

उत्तर - कालाबाजारी- किसी आकस्मिक स्थिति के चलते वस्तु-विशेष की कमी आ रही हो उसका लाभ उठाते हुए वस्तुओं को ऊँचे दामों पर बेच कर अनुचित लाभ कमाने की प्रक्रिया कालाबाजारी कहलाती है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Short Question Answer)

प्रश्न 1. संतुलन को परिभाषित करें। किस स्थिति में बाजार को संतुलन अवस्था में कहा जाता है?

उत्तरः- संतुलन उस स्थिति को कहते हैं जब किसी प्रकार के परिवर्तन होने की प्रवृत्ति नहीं होती। मांग तथा पूर्ति की दशा में किसी में न तो मांग में और न ही पूर्ति में परिवर्तन लाने की प्रवृत्ति होती है और न ही कीमत में परिवर्तन होने की प्रवृत्ति होती है। बाजार उस समय दशा में संतुलन अवस्था में होता है जब बाजार में कुल मांग कुल पूर्ति के बराबर होगी। संतुलन बाजार में शून्य आधिक्य मांग तथा शून्य आधिक्य पूर्ति की स्थिति होती है।

प्रश्न 2. एक बाजार में फर्म की संतुलन संख्या किस प्रकार निर्धारित होती है, जब उन्हें निर्बाध प्रवेश तथा वहिर्गमन की अनुमति हो।

उत्तरः बाजार में फर्मो की संख्या निर्धारित करने के लिए संतुलन कीमत पर मांगी गई तथा बेची गई मात्रा को प्रत्येक फर्म की पूर्ति की गई मात्रा से विभाजित किया जाता है। सूत्र के रूप में फर्म की संख्या= संतुलन कीमत पर बेची तथा खरीदी गई मात्रा ÷ प्रत्येक फर्म द्वारा पूर्ति की गई मात्रा।

Jharkhandlab.com

मान लीजिए संतुलन कीमत पर खरीदी तथा बेची गई वस्तु की मात्रा 350 इकाइयां है और प्रत्येक फर्म 50 इकाइयों की पूर्ति करती है तब फर्म की संख्या की गणना निम्न प्रकार होगी–

फर्म की संख्या= 350 ÷50=7

प्रश्न 3. एक पूर्ण प्रतिस्पर्धी बाजार में श्रम की इष्टतम मात्रा किस प्रकार निर्धारित होती है?

उत्तर:- श्रम बाजार में श्रम की मांग फर्म द्वारा की जाती है। फर्म से अभिप्राय श्रमिकों के कार्य के घंटों से है न कि श्रमिकों की संख्या से ।प्रत्येक फर्म का मुख्य उद्देश्य अधिकतम लाभ प्राप्त करना है। फर्म को अधिकतम लाभ तभी प्राप्त होता है जब मजदूरी श्रम की सीमांत आगम उत्पादकता के बराबर होती है।

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में सीमांत आगम कीमत के बराबर होती है और कीमत सीमांत उत्पाद के मूल्य के बराबर होती है। अतः श्रम के इष्टतम चयन की शर्त मजदूरी दर तथा सीमांत उत्पाद के मूल्य में समानता है।

प्रश्न 4. वस्तु बाजार में तथा श्रम बाजार में मांग तथा पूर्ति वक्र किस प्रकार भिन्न होती हैं?

उत्तर:- श्रमिकों की मजदूरी तथा वस्तुओं की कीमतों का निर्धारण मांग तथा पूर्ति शक्तियों के अंतर्गत एक जैसी विधि से होता है । श्रम बाजार तथा वस्तु बाजार में मूल अंतर उनकी मांग तथा पूर्ति के स्रोतों से है ।वस्तु बाजार में वस्तु की मांग परिवारों द्वारा की जाती है परंतु वस्तु की पूर्ति फर्म करती हैं। जबकि श्रम बाजार में श्रम की पूर्ति परिवारों द्वारा की जाती है और फर्म श्रम की मांग करती है। वस्तु बाजार में वस्तु का अभिप्राय वस्तु की मात्रा से है जबकि श्रम बाजार में श्रम का अभिप्राय श्रमिकों द्वारा किए गए काम करने की घंटों से है न कि श्रमिकों की संख्या से।

प्रश्न 5. पूर्ति तथा मांग वक्रों का उपयोग करते हुए दर्शाइए कि जूतों की कीमतों में वृद्धि, खरीदी व बेची जाने वाली मोजों की जोड़ी की कीमतों को तथा संख्या को किस प्रकार प्रभावित करती है?

उत्तर- जूते तथा मोजे पूरक वस्तुएं हैं। पूरक वस्तुएं वैसी वस्तुएं होती हैं जिनका प्रयोग एक साथ किया जाता है। जूतों की कीमत में वृद्धि होने से जूतों की मांग में कमी आएगी जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है-

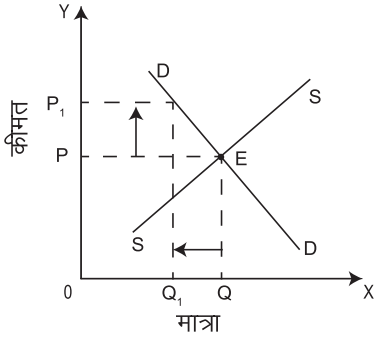

जूतों की मांग में कमी आने की परिणाम स्वरूप मोजों की मांग कम हो जाएगी । मांग में कमी आने के फलस्वरूप मोजों की कीमतों में कमी आएगी जैसा कि चित्र में दिखाया गया है-

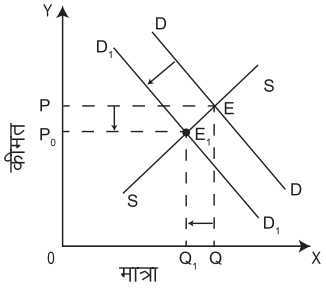

प्रश्न 6. मांग वक्र में शिफ्ट का कीमत पर अधिक तथा मात्रा पर कम प्रभाव होता है, जबकि फर्म की संख्या स्थिर रहती है ।उस स्थितियों की तुलना करें जब निर्बाध प्रवेश तथा बहिर्गमन की अनुमति हो तो क्या करें।

उत्तर:- मांग वक्र में खिसकाव होने पर कीमत में परिवर्तन होता है। मान लीजिए मांग वक्र दाईं ओर खिसकता है इस स्थिति में कीमत में अधिक वृद्धि होगी परंतु मात्रा पर कम प्रभाव पड़ेगा जैसा कि चित्र में दिखाया गया है-

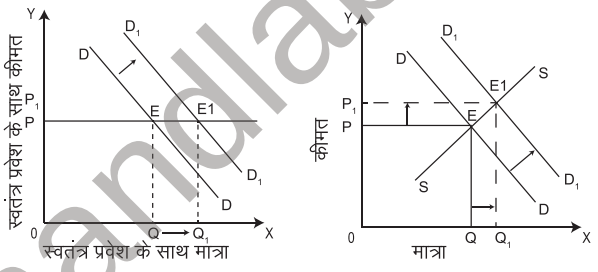

इसका मुख्य कारण फर्म की संख्या का निश्चित होना है। नई फर्म के प्रवेश करने पर प्रतिबंध है । वर्तमान फर्में उत्पादन में अधिक वृद्धि नहीं कर सकेंगे । मांग में वृद्धि होने पर कीमत में अधिक वृद्धि होगी और मात्रा में कम वृद्धि होगी। इसके विपरीत मांग वक्र के दाएं और खिसकने पर कीमत में वृद्धि होगी कीमत में वृद्धि होने पर लाभ में वृद्धि होगी जिससे उद्योग में नई फर्म का प्रवेश होगा।नई फर्म के प्रवेश से पूर्ति में वृद्धि होगी उद्योग में नई फर्म का तब तक प्रवेश होता रहेगा जब तक कीमत कम होकर संतुलन कीमत के बराबर नहीं हो जाती । अतःउस बाजार में जहां पर फर्म के प्रवेश तथा बाहर जाने की स्वतंत्रता है वहां मांग वक्र के दाएं और खिसकने पर कीमत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा और मात्रा पर अधिक प्रभाव पड़ेगा ।

प्रश्न 7. चित्र की सहायता से वस्तु की पूर्ति बढ़ने पर उसकी संतुलन कीमत तथा मात्रा पर पड़ने वाले प्रभाव की व्याख्या कीजिए ।

अथवा

चित्र की सहायता से पूर्ति वक्र की दाई और खिसकाव का वस्तु के संतुलन कीमत तथा मात्रा पर पड़ने वाले प्रभाव की व्याख्या कीजिए।

उतर:- यदि मांग के स्थिर होने पर वस्तु की पूर्ति बढ़ती है तो संतुलन कीमत घटती है इसे चित्र द्वारा दर्शाया गया है-

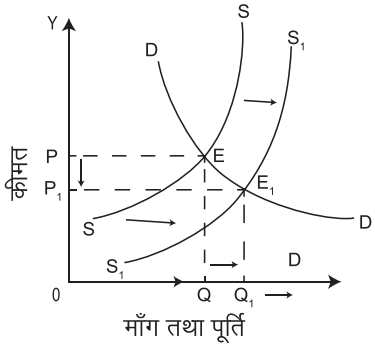

चित्र में वस्तु की माँग तथा पूर्ति को X- अक्ष पर तथा कीमत को Y-अक्ष पर दिखाया गया है । DD माँग वक्र है तथा SS मूल पूर्ति वक्र है। E मूल संतुलन बिन्दु है। SS बढ़कर S1S1 हो जाता है। इससे अधिपूर्ति उत्पन्न होती है। नई पूर्ति वक्र S1S1, माँग वक्र DD को E1 विन्दु पर काटता है, जो नया संतुलन बिन्दु है। इस संतुलन बिन्दु पर, कीमत Op से घटकर OP1 हो जाती है तथा उत्पादन OQ से OQ1 हो जाता है। इस प्रकार यदि पूर्ति बढ़ती है जबकि माँग स्थिर रहती है, तो संतुलन कीमत घटती है तथा उत्पादन मात्रा बढ़ जाती है।

Jharkhandlab.com

प्रश्न 8 चित्र की सहायता से वस्तु की माँग की कम होने पर संतुलन कीमत तथा मात्रा पर पड़ने वाले प्रभाव की व्याख्या कीजिए।

अथवा

चित्र की सहायता से माँग वक्र के बाईं ओर खिसकाव का वस्तु की संतुलन कीमत तथा मात्रा पर पड़ने वाले प्रभाव की व्याख्या कीजिए।

उत्तरः- पूर्ति स्थिर रहते हुए, यदि वस्तु की माँग घट जाती है, तो सन्तुलन कीमत तथा उत्पादन घट जाएगा। इसे चित्र में दर्शाया गया -

माँग में कमी

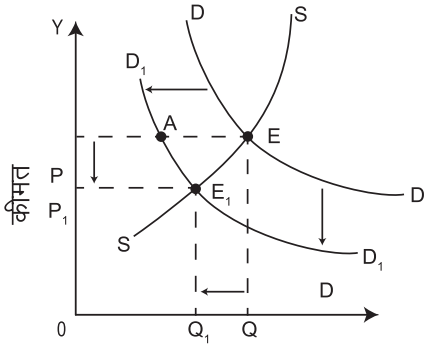

चित्र में मांगी गई मात्रा तथा पूर्ति की मात्रा को X- अक्ष पर तथा कीमत को Y- अक्ष पर दिखाया गया। DD मूल माँग वक्र तथा SS मूल पूर्ति वक्र है। E संतुलन विन्दु है। मांग में कमी को DD वक्र से D-1D1बाईं ओर खिसकाव द्वारा दर्शाया जाता है। यह EA इकाईयों की कम मांग उत्पन्न करता है। विक्रेताओं के बीच प्रतियोगिता होगी। इससे कीमत गिरकर OP से OP1 हो जाती है। तथा संतुलन उत्पाद OQ से OQ1 हो जाएगा। इसलिए, जब मांग वक्र बाई ओर खिसकता है संतुलन कीमत तथा उत्पादन दोनों गिरता(घटता) है।

प्रश्न 9. संतुलन कीमत क्या है? रेखाचित्र बनाइऐं।

उत्तरः- संतुलन कीमत वह कीमत है जिस पर मांग तथा पूर्ति एक -दूसरे के बराबर होते हैं या जहां क्रेता की खरीद तथा विक्रेताओं की बिक्री एक- दूसरे के समान होती है। पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में संतुलन कीमत का निर्धारण मांग तथा पूर्ति की शक्तियों द्वारा होती है।

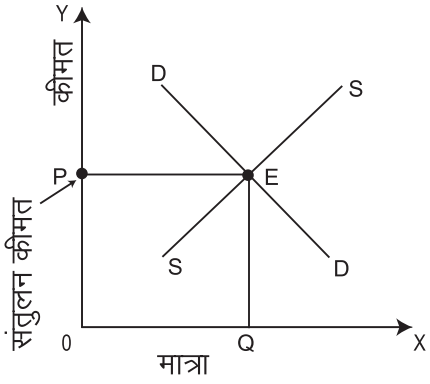

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Long Question Answer)

प्रश्न 1. संतुलित बाजार में एक वस्तु की पूर्ति में वृद्धि का संतुलन कीमत पर पड़ने वाला प्रभाव को चित्र की सहायता से दर्शाइए।

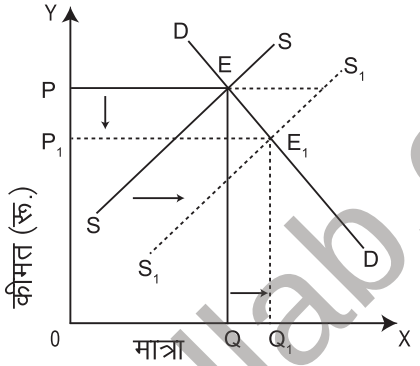

उत्तर - संतुलित बाजार में एक वस्तु की पूर्ति में वृद्धि होने से पूर्ति वक्र अपनी दाएं और अर्थात नीचे की ओर खिसक जाती है। पूर्ति में वृद्धि होने से मांग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ऐसी स्थिति में मांग वक्र में कोई परिवर्तन नहीं होता है, जैसा कि नीचे रेखा चित्र में दर्शाया गया है

चित्र में DD वक्र तथा SS वक्र क्रमशः प्रारंभिक मांग वक्र तथा पूर्ति वक्र एक दूसरे को E बिंदु पर काटते हैं। जहां संतुलन कीमत OP और संतुलन मात्रा OQ है। पूर्ति में वृद्धि होने से पूर्ति वक्र अपनी दाईं ओर खिसक जाती है, अब नयी पूर्ति वक्र S1S1 है जो मांग वक्र DD को E1 बिंदु काटती है जहां संतुलन कीमत OP1 है जो पहले की संतुलन कीमत OP से कम है। संतुलन मात्रा OQ1 है जो पूर्व की संतुलन मात्रा OQ से अधिक है। इस प्रकार यह निष्कर्ष प्राप्त होता है की पूर्ति में वृद्धि होने तथा मांग के अपरिवर्तित रहने पर संतुलन कीमत में कमी और संतुलन मात्रा में वृद्धि होती है।

प्रश्न 2. एक वस्तु की मांग और पूर्ति में परिवर्तन संतुलन कीमत को किस प्रकार प्रभावित करती है? सचित्र समझाइए।

उत्तर - एक वस्तु की मांग और पूर्ति में परिवर्तन संतुलन कीमत पर प्रभाव डालती है। इससे संतुलन कीमत में परिवर्तन आ भी सकता है और नहीं भी। यह इन दोनों वक्रों के परिवर्तन के अनुपात पर निर्भर करता है। इसकी दो स्थिति हो सकती है, संतुलन कीमत में परिवर्तन हो भी सकता है और नहीं भी। यहां हम दोनों स्थिति पर चर्चा करेंगे। पहली स्थिति संतुलन कीमत में परिवर्तन आता है और दूसरी स्थिति संतुलन कीमत में परिवर्तन नहीं आता है।

पहली स्थिति - संतुलन कीमत में परिवर्तन आता है-

i. जब पूर्ति में वृद्धि मांग में वृद्धि की तुलना में अधिक हो - जब पूर्ति में वृद्धि मांग में वृद्धि की तुलना में अधिक होती है तो वस्तु की संतुलन कीमत में कमी आती है। इसे हम निम्न रेखा चित्र से स्पष्ट कर सकते हैं।

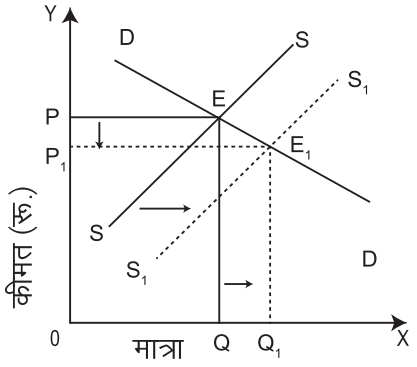

रेखा चित्र से स्पष्ट है प्रारंभिक कीमत OP है यह भी स्पष्ट है कि पूर्ति में वृद्धि मांग में हुई वृद्धि से अधिक है नई संतुलन बिंदु E1 पर कीमत OP1 है जो प्रारंभिक कीमत की तुलना में कम है।

ii. जब मांग में वृद्धि पूर्ति में वृद्धि की तुलना में अधिक हो - जब मांग में वृद्धि पूर्ति में हुई वृद्धि से अधिक होती है तो इस स्थिति में संतुलन कीमत और मात्रा दोनों में वृद्धि होगी।

jharkhandlab.com

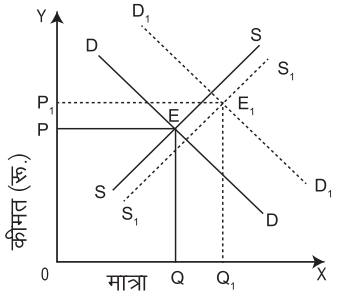

रेखा चित्र से स्पष्ट है कि प्रारंभिक संतुलन E बिंदु पर है जहां संतुलन कीमत OP और मात्रा OQ है। स्पष्ट है मांग में वृद्धि पूर्ति में वृद्धि की तुलना में अधिक है। नई संतुलन बिंदु E1 पर कीमत पहले की तुलना में बढ़कर OP1 हो जाती है और मात्रा भी बढ़कर OQ1 हो जाती है।

iii. जब मांग में कमी पूर्ति में कमी की तुलना में कम हो - जब मांग में कमी और पूर्ति में भी कमी होती है लेकिन पूर्ति में कमी मांग में कमी की तुलना में अधिक हो तो कीमत पहले की तुलना में बढ़ जाती है जैसा कि नीचे के रेखा चित्र से स्पष्ट है।

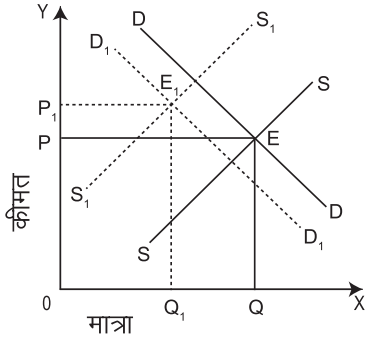

रेखा चित्र से स्पष्ट है कि मांग और पूर्ति दोनों में कमी होती है किंतु पूर्ति में कमी मांग की तुलना में अधिक है प्रारंभिक संतुलन स्तर E पर कीमत OP है। नई संतुलन स्तर E1 पर कीमत बढ़कर OP1 हो जाती है जो पहले से अधिक है।

iv. जब मांग में कमी पूर्ति में कमी की तुलना में अधिक हो - जब मांग और पूर्ति दोनों में कमी होती है लेकिन मांग में अधिक कमी हो जाए तो कीमत में कमी होती है जैसा कि रेखा चित्र से स्पष्ट है।

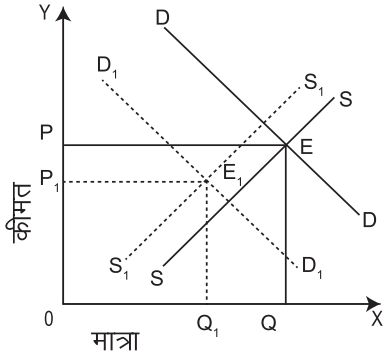

रेखा चित्र से स्पष्ट है कि मांग और पूर्ति दोनों में कमी होती है लेकिन मांग में कमी पूर्ति में कमी की तुलना में अधिक है इस स्थिति में कीमत में कमी होती है। चित्र में प्रारंभिक कीमत OP है तथा नई कीमत OP1 है जो पहले से कम है।

दूसरी स्थिति जब संतुलन कीमत पर कोई प्रभाव ना हो-

v. जब मांग और पूर्ति दोनों में समान वृद्धि हो - जब मांग और पूर्ति दोनों में वृद्धि समान अनुपात में होती है तो संतुलन कीमत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। रेखा चित्र से स्पष्ट है परिवर्तन के पूर्व और बाद कीमत समान OP बनी हुई है।

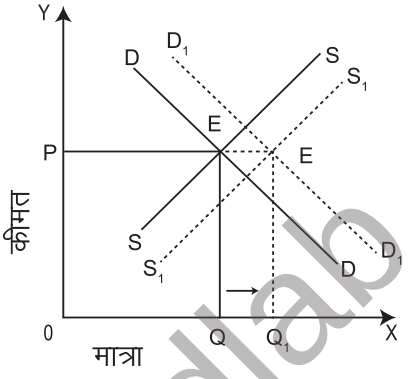

vi. जब मांग और पूर्ति दोनों में समान अनुपात में कमी हो-

जब मांग और पूर्ति दोनों में समान अनुपात में कमी होती है तो कीमत में कोई परिवर्तन नहीं होता है। रेखा चित्र से स्पष्ट है परिवर्तन के पूर्व और बाद में कीमत समान OP बनी हुई है।

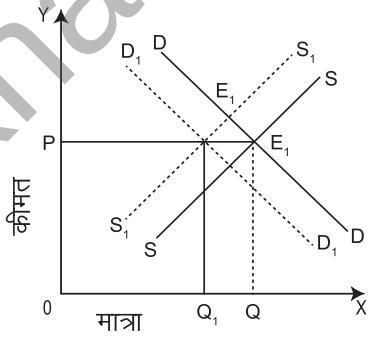

प्रश्न 3. मान लीजिए कि नमक की मांग तथा पूर्ति वक्र को इस प्रकार दिया गया है

qD = 1000 - P

qS = 700 - 2P

संतुलन कीमत तथा मात्रा ज्ञात कीजिए।

उत्तर - दिया हुआ है,

नमक की मांग qD = 1000 - P

नमक की पूर्ति qS = 700 + 2P

संतुलन स्तर पर,

qD = qS

1000 - P = 700 + 2P

1000-700= 2P + P

300 = 3P

P = 300/3

P = 100

संतुलन कीमत P = 100

संतुलन मात्रा के लिए,

qD = q = 1000 - P

= 1000 - 100

q = 900

संतुलन मात्रा q = 900

अतः संतुलन कीमत P = 100

संतुलन मात्रा q = 900 उत्तर

Jharkhandlab.com

अध्याय 6 प्रतिस्पर्धारहित बाजार

बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Question)

1. अपूर्ण प्रतियोगिता में-
a. औसत आगम और सीमांत आगम बराबर होते हैं,
b. औसत आगम और सीमांत आगम वक्र एक गति से नीचे गिरते हैं,
c औसत आगम वक्र सीमांत आगम वक्र से अधिक तेजी से नीचे गिरता है,
d. सीमांत आगम वक्र औसत आगम वक्र से अधिक तेजी से गिरता है।

2. एकाधिकारी मूल्य विभेद की महत्वपूर्ण शर्त क्या है?
a. बाजार का पृथक होना b. क्रय शक्ति में भिन्नता
c. मांग की लोच में भिन्नता d. उपर्युक्त सभी।

3. अपूर्ण प्रतियोगिता में कीमत कम होने पर बिक्री पर कैसा प्रभाव पड़ेगा?
a. बिक्री कम हो जाती है,
b. बिक्री अधिक हो जाता है,
c. बिक्री पर कोई प्रभाव नहीं होता,
d. उपर्युक्त सभी स्थितियां संभव।

4. प्रतिस्पर्धा रहित बाजार में मांग वक्र होता है-
a. सीमांत आगम (MR)वक्र b. कुल आगम (TR)वक्र
c. औसत आगम (AR)वक्र d. उपर्युक्त में से कोई नहीं।

5. किस बाजार में वस्तु विभेद पाया जाता है?
a. शुद्ध प्रतियोगिता b. पूर्ण प्रतियोगिता
c. एकाधिकार d. एकाधिकार प्रतियोगिता।

6. एकाधिकार की विशेषता है-
a. विक्रेताओं की अधिक संख्या
b. फर्म का स्वतंत्र प्रवेश तथा छोड़ना
c. एक विक्रेता तथा अधिक क्रेता
d. इनमें से कोई नहीं।

7. निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता एकाधिकारी प्रतियोगिता बाजार से संबंधित है-
a. एक विक्रेता
b. समरूप वस्तुएं
c. वस्तु विभेद
d. फर्मे के प्रवेश तथा निकासी पर प्रतिबंध।

8. एकाधिकार की निम्न में से कौन सी विशेषता नहीं है?
a. एक विक्रेता तथा अधिक क्रेता
b. विक्रय लागते;
c. निकट स्थानापन्न का अभाव
d. नई फर्म की प्रवेश पर प्रतिबंध।

9. निकट प्रतिस्थापन वस्तु किस प्रकार की बाजार में पायी जाती है?
a. पूर्ण प्रतियोगिता बाजार b. एकाधिकार
c. एकाधिकारी प्रतियोगित d. इनमें से कोई नहीं।

10. जिस बाजार संरचना में केवल एक विक्रेता हो उसे कहा जाता है?
a. एकाधिकारिक प्रतियोगिता b. एकाधिकार
c. पूर्ण प्रतियोगिता d. इनमें से कोई नहीं।

11. दीर्घकाल तक एकाधिकारी का लाभ रहता है?
a. धनात्मक
b. ऋणामक
c. ऋणात्मक एवं धनात्मक दोनों
d. उपर्युक्त में से कोई नहीं।

12. वस्तु बाजार में एकाधिकारी प्रतिस्पर्धा निम्न में से किस कारण से उत्पन्न होती है?
a. सजातीय वस्तु
b. असजातीय वस्तु
c. सजातीय तथा असजातीय वस्तु
d. इनमें से कोई नहीं।

13. एकाधिकार फर्म के लिए बाजार मांग वक्र क्या कहलाता है?
a. कुल आगम वक्र b. सीमांत आगम वक्र
c. औसत आगम वक्र d. उपरोक्त सभी।

14. किस प्रकार की बाजार संरचना में कीमत-कठोरता' की विशेषता पायी जाती है ?
a. पूर्ण प्रतियोगिता b. एकाधिकार
c. एकाधिकारिक प्रतियोगिता d. अल्पाधिकार

15. किस बाजार संरचना में एक फर्म के लिए औसत आगम वक्र की ढाल ऋणात्मक होती है?
a. पूर्ण प्रतियोगिता b. शुद्ध प्रतियोगिता
c. एकाधिकार d. इनमें से सभी

उत्तर - 1-d 2-d 3-b 4-c, 5-d 6-c 7-c 8-b 9-c 10-b 11-a 12-b 13-c 14-d 15-c

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Very Short Question Answer)

प्रश्न 1. प्रतिस्पर्धा रहित बाजार के नाम लिखें।
उत्तर- एकाधिकार

प्रश्न 2. उस बाजार का नाम बताएं जहां नए फर्म के प्रवेश पर प्रतिबंध रहता है?
उत्तर- एकाधिकार

प्रश्न 3. किस बाजार संरचना में कीमत एवं उत्पादन पर फर्म का पूर्ण नियंत्रण होता है?
उत्तर - एकाधिकार

प्रश्न 4. वस्तु बाजार में एकाधिकारी प्रतिस्पर्धा किस कारण उत्पन्न होती है?
उत्तर- निकट प्रतिस्थापन वस्तु के कारण उत्पन्न होती है।

प्रश्न 5. क्या एकाधिकारी फर्म दीर्घकाल में भी उच्चऔर धनात्मक लाभ प्राप्त करती है?
उत्तर- हां, एकाधिकारी फर्म दीर्घकाल में भी उच्च और धनात्मक लाभ प्राप्त करती है।

प्रश्न 6. उस बाजार को क्या कहते हैं जिसमें एकाधिकार तथा प्रतियोगिता दोनों का अस्तित्व होता है?
उत्तर- एकाधिकारी प्रतियोगिता।

प्रश्न 7. किस प्रकार के बाजार में फर्म ही उद्योग होता है?
उत्तर- एकाधिकार में फर्म ही उद्योग होता है।

Jharkhandlab.com

प्रश्न 8. एकाधिकारी फर्म का अल्पकालीन लाभ दीर्घकाल में समाप्त क्यों नहीं हो जाता?

उत्तर- क्योंकि दूसरी फर्म के उद्योग में प्रवेश पर प्रतिबंध होता है।

प्रश्न 9. अल्पाधिकार बाजार किसे कहते हैं?

उत्तर- ऐसा बाजार जिसमें वस्तु के कुछ विक्रेता होते हैं ,अल्पाधिकार बाजार कहलाता है।

प्रश्न 10. द्वि- अधिकार बाजार की परिभाषा दें।

उत्तर- ऐसा बाजार जिसमें वस्तु के केवल दो विक्रेता होते हैं ,द्वि-अधिकार कहलाता है।

प्रश्न 11. विक्रय लागत क्या है?

उत्तर- ऐसी लागतें जो वस्तु की बिक्री को उत्साहित करने के लिए खर्च किए जाएं जैसे विज्ञापन लागत ,विक्रय लागत कहलाती है।

प्रश्न 12. वस्तु विभेद का क्या अर्थ है?

उत्तर- एक वस्तु जिसकी बाजार में कई किस्में होती है तथा वह एक -दूसरे के निकट प्रतिस्थापन होती है।

प्रश्न 13. कीमत विभेद से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- जब एकाधिकारी अपनी वस्तु की विभिन्न इकाइयों को अलग-अलग कीमतों पर बेचता है तो उसे कीमत विभेद कहा जाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Short Question Answer)

प्रश्न 1. बाजार की परिभाषा दीजिए। उन चार तत्वों को लिखें जिनके आधार पर विभिन्न बाजारों को परिभाषित किया जाता है।

उत्तर- साधारण भाषा में बाजार एक विशेष स्थान को संबोधित करता है जहां पर क्रेता तथा विक्रेता प्रत्यक्ष रूप में वस्तुएं खरीदने तथा बेचने के लिए मिलते हैं। किंतु ,अर्थशास्त्र में बाजार किसी विशेष स्थान तक सीमित नहीं बल्कि उस संपूर्ण क्षेत्र में संबंध रखता है जहां क्रेता तथा विक्रेता आपस में मिलते हैं उनका यह संबंध भौतिक रूप में अथवा संचार के विभिन्न साधनों जैसे ईमेल, इंटरनेट, मध्यस्थों आदि हो सकता है।

बाजार को निम्नांकित चार तत्वों के आधार पर परिभाषित किया जाता है-

1. क्षेत्र(Area):- अर्थशास्त्र में बाजार उस सारे क्षेत्र से संबंध रखता है जहां क्रेता तथा विक्रेता एक दूसरे से भौतिक रूप में अथवा संचार के किसी साधन से संबंध स्थापित कर सकते हैं।

2. वस्तु(Commodity):- बाजार में किसी वस्तु का विनिमय होना आवश्यक है।

3. क्रेता तथा विक्रेता (Buyers and sellers):- बाजार एक वस्तु के क्रेता तथा विक्रेताओं को संबोधित करता है यदि इनमें से एक भी पक्ष की अनुपस्थिति हो तो इसे बाजार नहीं कहा जा सकता।

4. स्वतंत्र प्रतियोगिता(Free Competition):- बाजार में क्रेता तथा विक्रेताओं में स्वतंत्र प्रतियोगिता होनी चाहिए। इनमें जब वस्तु का विनिमय होता है तो एक कीमत निर्धारित होती है।

प्रश्न 2. अपूर्ण प्रतियोगिता की कोई तीन विशेषताएं बताइए।

उत्तरः अपूर्ण प्रतियोगिता की तीन विशेषताएं निम्नांकित हैं:

1. बिक्री को बढ़ाने के लिए बिक्री लागतों की आवश्यकता होती है।

2. इसमें क्रेता तथा विक्रेताओं की संख्या तुलनात्मक रूप में कम होती है जो विभिन्न कीमतों पर भेदात्मक वस्तुएं बेचती है

3. मांग वक्र ऋणात्मक ढाल वाली होती है।

प्रश्न 3. एकाधिकारी प्रतिस्पर्धा में फर्म की मांग वक्र ऋणात्मक ढाल वाली क्यों होती है?

उत्तरः एकाधिकारी प्रतियोगिता के अंतर्गत फर्म भेदात्मक उत्पाद बेचती है यह निकट प्रतिस्थापन वस्तु होती है यह फर्म कीमत को कुछ सीमा तक प्रभावित कर सकती है ऐसी अवस्था में वह अपने उत्पाद का कम कीमत निर्धारित कर अधिक मात्रा में बेच सकती है और अधिक कीमत पर कम वस्तुएं अतः एकाधिकारी प्रतियोगिता में मांग वक्र ऋणात्मक ढाल वाली होती है।

प्रश्न 4. एकाधिकार के अंतर्गत "निकट प्रतिस्थापन का अभाव' विशेषता की प्रभाव को समझाइए।

उत्तरः एकाधिकारी द्वारा वस्तु के उत्पादन के लिए कोई निकट प्रतिस्थापन नहीं होता है।एक एकाधिकारी एक निश्चित बाजार में सभी उत्पादों का उत्पादन करता है। एकाधिकारी ही कीमत निर्धारक होता है परंतु एकाधिकारी कीमत तथा मांगी गई मात्रा दोनों को एक साथ नियंत्रण नहीं कर सकता।यदि वह ऊंची कीमत का निर्धारण करता है,तो कम मात्रा की मांग की जाती है इसके विपरीत कम कीमत पर अधिक मात्रा मांग की जाती है। एकाधिकार में बेलोचदार मांग वक्र होती है।औसत आगम वक्र ही मांग वक्र होता है। औसत आगम वक्र नीचे की ओर ढालू होता है सीमांत आगम वक्र,औसत आगम वक्र के नीचे होता है तथा इसकी ढाल औसत आगम वक्र से दोगुनी होता है।

प्रश्न 5. तीन विभिन्न विधियों की सूची बनाइए जिनमें अल्पाधिकार फर्म व्यवहार कर सकता है।

उत्तर: 1. एक दूसरे को सहयोग करती हैं तथा उनकी नीतियों का एक लिखित औपचारिक अनुबंध होता है।

2. एक दूसरे को सहयोग नहीं करती।

3. एक दूसरे का सहयोग करती हैं तथा औपचारिक रूप से जुड़ी रहती हैं।

प्रश्न 6. आय अनम्य कीमत का क्या अभिप्राय है ?अल्पाधिकार के व्यवहार से इस प्रकार का निष्कर्ष कैसे निकल सकता है?

उत्तरः अनम्य कीमत का अर्थ कीमत कठोरता से है मांग अथवा लागत में परिवर्तन होने पर भी कीमत में कोई परिवर्तन नहीं होता।अल्पाधिकार बाजार संरचना में कीमत कठोरता की प्रवृति होता है,क्योंकि :

1. फर्म को प्रतियोगी फर्म की प्रतिक्रिया का डर होता है। फर्म दीर्घकालीन उद्देश्यों से निर्देश प्राप्त होते हैं हुए वर्तमान कीमतों को बदलना नहीं चाहते।

2. नई कीमतें निर्धारित करते समय नई कीमत सूची की छपाई, विज्ञापन लागत ,उपभोक्ताओं को सूचना प्रदान करने आदि लागतों को वहन करना पड़ता है परिणाम स्वरूप फर्म को मिलने वाली लाभ कम हो जाती है।

प्रश्न 7. एकाधिकारी प्रतिस्पर्धा में दीर्घकाल के लिए किसी फर्म का संतुलन शून्य लाभ पर होने का कारण बताऐ'।

उत्तरः- दीर्घकाल में एकाधिकारी प्रतियोगिता मे फर्मो का लाभ शून्य होने का कारण फर्मो का स्वतंत्र प्रवेश तथा बाहर जाना होता है। यदि फर्में अल्पकाल में अधिक लाभ कमाते हैं, तो दीर्घकाल में फर्म का प्रवेश होगा।यदि अल्पकाल में फर्म को हानि उठानी पड़ती है तो फर्म उद्योग से बाहर जाएंगी। इसी कारण दीर्घकाल में फर्म के लाभ शून्य होता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Long Question Answer)

प्रश्न 1. एकाधिकार की परिभाषा दें। इसकी मुख्य विशेषताएं बताओ।

उत्तर: एकाधिकार बाजार की वैसी अवस्था है जिसमें वस्तु का केवल एक ही विक्रेता होता है, वस्तु के लिए कोई निकट प्रतिस्थापन नहीं होता तथा नई फर्मों के प्रवेश पर प्रतिबंध होता है।

एकाधिकार की मुख्य विशेषताएंः-

1.एक विक्रेता तथा बड़ी संख्या में क्रेताः- एकाधिकार में केवल एक विक्रेता होता है जिसका पूर्ति पर नियंत्रण होता है। एकाधिकारी बाजार की स्वरूप में फर्म तथा उद्योग में कोई अंतर नहीं होता। फर्म ही उद्योग होता है क्योंकि उद्योग में किसी और फर्म को प्रवेश नहीं करने दिया जाता। परंतु ,क्रेता की संख्या अधिक होती है, कोई अकेला क्रेता बाजार को प्रभावित नहीं कर पाता।

jharkhandlab.com

2.निकट प्रतिस्थापन का अभाव :- एकाधिकारी द्वारा वस्तु के उत्पादन के लिए कोई निकट प्रतिस्थापन नहीं होता । एक एकाधिकारी एक निश्चित बाजार में सभी उत्पादों का उत्पादन करता है।एकाधिकारी ही कीमत निर्धारक होता है । परंतु ,कीमत तथा मांगी गई मात्रा दोनों पर एक साथ नियंत्रण नहीं रख सकता है, यदि वह ऊंची कीमत का निर्धारण करता है, तो कम मात्रा की मांग की जाती है।

3.नई फर्म के प्रवेश पर प्रतिबंध:- एकाधिकार बाजार में फर्म तथा उद्योग में कोई अंतर नहीं होता क्योंकि इस बाजार में किसी नई फर्म को उद्योग में प्रवेश नहीं करने दिया जाता है।

4.कीमत विभेद:- एकाधिकारी अपनी वस्तु की विभिन्न इकाइयों के लिए अलग-अलग कीमतें प्राप्त कर सकता है। उसका विभिन्न क्रेता से उसी वस्तु की विभिन्न इकाइयों के लिए अलग-अलग कीमत तो प्राप्त करना कीमत विभेद कहलाता है।वह अपनी वस्तु की विभिन्न बाजारों में से अलग-अलग कीमतें वस्तु की मूल्य लोच के आधार पर प्राप्त करता है। वस्तु की मूल्य होने पर वस्तु की अधिक कीमत प्राप्त करेगा।

5.स्वतंत्र कीमत -उत्पादन नीति:- एकाधिकारी फर्म की एक अपनी स्वतंत्र कीमत-उत्पादन नीति होती है कोई और फर्म इसे इस तरह की निर्णय करने के लिए मजबूर नहीं कर सकती। वह अपनी संपूर्ण बिक्री के लिए स्वतंत्र कीमत उत्पादन नीति अपनाती है।

प्रश्न 2. एकाधिकारी प्रतियोगिता की परिभाषा लिखें। इनकी चार प्रमुख विशेषताएं का वर्णन कीजिए।

उत्तर:- एकाधिकारी प्रतियोगिता एक ऐसी बाजार की अवस्था है जिसमें वस्तु के क्रेता तथा विक्रेता बड़ी संख्या मे होते हैं तथा विक्रेता भेदात्मक परंतु निकट प्रतिस्थापन वस्तुएं बेचते हैं।

इनकी चार प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित है-

1. वस्तु विभेद- एकाधिकारी प्रतियोगिता बाजार में फर्में वस्तु की विभिन्न किस्में पैदा करती है जो एक दूसरे की निकट प्रतिस्थापन होती है। वस्तु विभेद वस्तु की नाम आकार, रंग ,पैकिंग ,गुण ,सेवा के प्रकार आदि के आधार पर होता है। जैसी टूथपेस्ट की कई किस्में सिबाका, कोलगेट ,क्लोज-अप उपलब्ध है।

2. विक्रय लागतें :- एकाधिकारी प्रतियोगिता में प्रत्येक फर्म विज्ञापन द्वारा अपनी बिक्री बढ़ाना चाहती है। ऐसी बिक्री बढ़ाने वाली खर्च विक्रय लागत कहलाती है। इसमें सभी प्रकार से विज्ञापन करने वाली तकनीक शामिल किया जाता है जैसे अखबारों, पत्रिकाओं, टीवी आदि।

3.गैर कीमत प्रतियोगिता:- एकाधिकारी प्रतियोगिता में फर्म दूसरी फर्म की प्रतियोगिता कीमत परिवर्तन द्वारा नहीं बल्कि वस्तु की गुणों में सुधार लाकर तथा बिक्री वृद्धि क्रियाओं में परिवर्तन लाकर होती है। इन तरीके को गैर -कीमत प्रतियोगिता कहा जाता है। इसमें बिक्री के साथ उपहार वारंटी आदि शामिल किए जाते हैं।

4. स्वतंत्र कीमत नीति:- इस बाजार में सभी उत्पादक की अपनी विशेष वस्तु होती है इसलिए वे अपनी विशेष कीमत -नीति तैयार करते हैं प्रत्येक फर्म अपनी कीमत नीतियों में समय-समय पर परिवर्तन लाकर नये ग्राहक को आकर्षित करने का प्रयास करती है।

प्रश्न 3. अल्पाधिकार बाजार किसे कहते हैं? इस बाजार की विशेषताओं को लिखें।

उत्तर:- अल्पाधिकार बाजार की एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें कुछ उत्पादक समरूप अथवा विवेकपूर्ण वस्तुएं उत्पादन करते हैं यदि वह एक दूसरे के प्रतियोगी होते हैं तो गला काट प्रतियोगिता होती है तथा यदि वह संघ बना लेते हैं तो एकाधिकार जैसी अवस्था बन जाते हैं।

अल्पाधिकार बाजार की विशेषताएं:-

1. इस बाजार में थोड़ी संख्या में बड़े उत्पादक तथा बड़ी संख्या में क्रेता होते हैं।

2. इस बाजार में एकाधिकार तथा एकाधिकारिक प्रतियोगिता की विशेषताएं पाई जाती हैं।

3. उद्योग की विभिन्न फर्म में कीमत उत्पादन संबंधी निर्भरता पाई जाती हैं।

4. उद्योग में कीमत स्थिरता पाई जाती है अर्थात वस्तु की कीमत एक बार निश्चित हो जाए तो दीर्घकाल के लिए टिकी रहती है।

प्रश्न 4. एकाधिकार तथा एकाधिकारी प्रतियोगिता में अंतर स्पष्ट करें।

उत्तर:- **एकाधिकार**

1. एक विक्रेता होता है।

2. फर्म के प्रवेश तथा बहिर्गमन पर प्रतिबंध होता है।

3. कीमत पर नियंत्रण होता है।

4. समरूप या विभेदीकृत वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है।

एकाधिकारी प्रतियोगिता

1- एक से अधिक विक्रेता होते हैं।

2. फर्मो के प्रवेश तथा बहिर्गमन पर कोई प्रतिबंध नहीं होता।

3. कीमत पर सीमित नियंत्रण होता है।

4. निकट प्रतिस्थापन वस्तु का उत्पादन किया जाता है।

Jharkhandlab.com

समष्टि अर्थशास्त्र

Jharkhandlab.com

Jharkhandlab.com

अध्याय 1 समष्टि अर्थशास्त्र का परिचय

बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Question)

1. समष्टि अर्थशास्त्र अध्ययन है-

a. अर्थव्यवस्था में रोजगार का
b. वस्तुओं की पूर्ति के नियम का
c. बाजार में गेहूं की कीमत का
d. कार की मांग में लोच का ।

2. 'द जनरल थ्योरी ऑफ एंप्लॉयमेंट, इंटरेस्ट एंड मनी 'नामक पुस्तक के लेखक कौन है?

a. पीगू b. माल्थस
c. जे.एम.कीन्स d. रिकार्डो

3. सामान्य कीमत स्तर का अध्ययन किया जाता है?

a. समष्टि अर्थशास्त्र मे b. व्यष्टि अर्थशास्त्र में
c. दोनों A तथा B d. किसी में नहीं।

4. 'द जनरल थ्योरी ऑफ एंप्लॉयमेंट, इंटरेस्ट एंड मनी 'पुस्तक किस वर्ष प्रकाशित की गई?

a. 1929 b. 1936
c. 1939 d. 1940

5. उद्यमी को प्राप्त होने वाले अंश क्या कहलाता है?

a. मजदूरी b. ब्याज
c. लाभ d. लगान

6. फर्म क्या है?

a. दुकानदारों का संघ b. उत्पादक
c. सामाजिक संगठन d. राजनीतिक संगठन

7. अर्थशास्त्र में शब्द व्यष्टि और समष्टि का प्रयोग सर्वप्रथम किस अर्थशास्त्री ने किया था?

a. एडम स्मिथ b. माल्थस
c. रैग्नर फ्रिश d. अल्फ्रेड मार्शल

8. अर्थशास्त्र के जनक कौन हैं?

a. माल्थस b. एडम स्मिथ
c. अलफ्रेड मार्शल d. जॉन मेनाड कीन्स

9. वाह्य क्षेत्र से संबंधित है-

a. उपभोग b. उत्पादन
c. आयात- निर्यात d. इनमें से कोई नहीं।

10. समष्टि अर्थशास्त्र के लिए प्रयुक्त मैक्रो (MACRO) शब्द का क्या अर्थ है?

a. छोटा b. बड़ा
c. मध्यम d. इनमें से कोई नहीं।

उत्तर- 1-A 2-B 3-C 4-B 5-C 6-B
7-C 8-B 9-C 10-B

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Very Short Question Answer)

1. आर्थिक एजेंट से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- आर्थिक एजेंट से तात्पर्य उन व्यक्तियों अथवा संस्थाओं से है, जो आर्थिक निर्णय लेते हैं। जैसे -उपभोक्ता, सरकार , निगम, तथा बैंक आदि।

2. पारिवारिक क्षेत्र का क्या अभिप्राय है?

उत्तर- पारिवारिक क्षेत्र अर्थव्यवस्था के वैसे क्षेत्र है जो अन्य क्षेत्रों को सेवाएं प्रदान करती है तथा आय उपार्जन कर उपभोग पर व्यय करती है अथवा बचत करती है और कर अदा करती है।

3. समष्टि अर्थशास्त्र के अनुसार अर्थव्यवस्था के कितने क्षेत्र होते हैं?

उत्तर- चार क्षेत्र होते हैं -फर्म ,सरकार, परिवार तथा वाह्य क्षेत्र।

4. समष्टि अर्थशास्त्र में किसका अध्ययन है?

उत्तर- समष्टि अर्थशास्त्र संपूर्ण अर्थव्यवस्था का अध्ययन है।

5. समष्टि अर्थशास्त्र में किन समस्याओं का अध्ययन किया जाता है?

उत्तर- समष्टि अर्थशास्त्र में सामूहिक स्तर पर आर्थिक समस्याओं का अध्ययन किया जाता है । जैसे कुल उपभोग, राष्ट्रीय आय तथा सामान्य कीमत स्तर आदि।

6. परंपरावादी अर्थशास्त्रियों के सिद्धांत में किन बातों की प्रधानता पाई जाती है?

उत्तर- परंपरावादी अर्थशास्त्रियों के सिद्धांत का प्राबल्य था कि सारे श्रमिक जो काम करने के इच्छुक हैं ,उन्हें काम मिलेगा और सारे कारखाने अपनी पूर्ण क्षमता के साथ काम करते रहेंगे।

7. पूंजीवादी देशों में उत्पादन के साधन(कारक) का आय सृजन प्रक्रिया को बताइये।

उत्तर- पूंजीवादी देशों में उत्पादन के साधन अपनी आय का सृजन उत्पादन की प्रक्रिया एवं उससे प्राप्त निर्गत को बाजार में बेचकर करते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Short Question Answer)

1. व्यष्टि और समष्टि अर्थशास्त्र में अंतर स्पष्ट करें।

उत्तर- व्यष्टि अर्थशास्त्र-

1. इसका संबंध व्यक्तिगत आर्थिक इकाई से है। जैसे एक उपभोक्ता का अध्ययन, एक फर्म, एक उद्योग आदि।
2. इसके मुख्य उपकरण मांग तथा पूर्ति हैं।
3. इसे कीमत -सिद्धांत के नाम से भी जाना जाता है।
4. इसके सिद्धांत तथा नियम के लिए पूर्ण रोजगार, पूर्ण प्रतियोगिता, सरकारी हस्तक्षेप की अनुपस्थिति आदि मान्यताएं स्वीकार की जाती है।

समष्टि अर्थशास्त्र-

1. यह उन सिद्धांतों, समस्याओं तथा नीतियों का अध्ययन करता है जो पूर्ण रोजगार प्राप्त करने में सहायक होते हैं।

Jharkhandlab.com

2. इसके मुख्य उकरण सामूहिक मांग, सामूहिक पूर्ति, सामूहिक बचत तथा निवेश आदी हैं।

3. इसे आय तथा रोजगार सिद्धांत के नाम से भी जाना जाता है।

4. इसमें साधनों का आवंटन, आय का वितरण को दी हुई माना जाता है।

2. समष्टि अर्थशास्त्र के महत्व को लिखें।

उत्तर- 1. आर्थिक सिद्धांतों के निर्माण में सहायक – 1929 के महामंदी के पहले के आर्थिक सिद्धांत व्यष्टि अर्थशास्त्र से संबंधित था। परंतु, आर्थिक महामंदी के पश्चात जब नए सिद्धांत प्रचलन में आए तो व्यक्तिगत आर्थिक सिद्धांतों का महत्व कम हो गया। मंदी, बेरोजगारी, राष्ट्रीय आय, सामान्य मजदूरी स्तर,आदि के अध्ययन के लिए समष्टि अर्थशास्त्र की भूमिका बढ़ गई।

2. आर्थिक नीतियों के निर्माण में सहायक: -प्रत्येक अर्थव्यवस्था में ऐसी समस्याएं पाई जाती है जिनका संबंध संपूर्ण अर्थव्यवस्था के साथ होता है। जैसे बेरोजगारी की समस्या, मुद्रास्फीति का नियंत्रण, राष्ट्रीय आय के स्तर में वृद्धि आदि।इस प्रकार की समस्याओं का अध्ययन तथा नीति निर्माण समष्टि अर्थशास्त्र में किया जाता है।

3. पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण विशेषताएं क्या हैं?

उत्तर- 1. उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व होता है।

2. बाजार में निर्गत को बेचने के लिए ही उत्पादन किया जाता है।

3. श्रम सेवाओं का क्रय -विक्रय एक कीमत पर होता है। इस कीमत को मजदूरी दर कहा जाता है।

4. उत्पादन का एकमात्र उद्देश्य लाभ अर्जित करना होता है।

5. उत्पत्ति के साधनों पर जिन व्यक्तियों का अधिकार होता है वे सरकारी नियंत्रण से पूर्णत: मुक्त होते हैं।

4. समष्टि अर्थशास्त्र की दृष्टि से अर्थव्यवस्था के चार प्रमुख क्षेत्रों का वर्णन करें।

उत्तर- समष्टि अर्थशास्त्र के अनुसार अर्थव्यवस्था में चार प्रमुख क्षेत्रक होते हैं- 1- फर्म 2 राज्य या सरकार 3 गृहस्थ तथा 4- विदेशी क्षेत्रक

फर्म (Firm) - उत्पादक इकाइयों को फर्म कहा जाता है। फर्म में उद्यमी प्रमुख होता है । वे उत्पादन आगतों को किराये पर लेकर उत्पादन कार्य करता है। उत्पादन प्रक्रिया में वह जोखिम तथा अनिश्चितताओं का वहन करता है।

राज्य या सरकार (State or Government) - यह क्षेत्रक कानून बनाता है, उन्हें लागू करता है और न्याय करता है। कई स्थानों पर उत्पादन का कार्य भी करता है। सरकार कर लगाती है और कल्याणकारी कार्य पर व्यय करती है।

परिवार क्षेत्रक (House hold Seator) :- परिवार का अभिप्राय एक व्यक्ति से है जो अपने उपभोग के विषय में निर्णय लेता है। परिवार के कुछ लोग सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थानों में कार्य करते हैं और कार्य के बदले में मजदूरी तथा वेतन लेते हैं। वे कर देते हैं। उपभोग तथा बचत करते है।

बाह्य क्षेत्रक (External Sector):- बाह्य क्षेत्र अर्थव्यवस्था के व्यापार से संबंधित है। दूसरे देशों से व्यापार के दो रूप हैं- 1. वस्तुओं एवं सेवाओं का आयात तथा निर्यात 2. पूंजी का दूसरे देशों को बाह्य प्रवाह तथा दूसरे देशों से अंत: प्रवाह ।

5. 1929 की महामंदी का वर्णन करें ।

उतर- ब्रिटिश अर्थशास्त्री जॉन मनार्ड कीन्स से पूर्व अर्थशास्त्रियों का मत था कि सब कर्मचारियों को जो कार्य करने के लिए तैयार हैं नौकरी मिलेगी, कोई बेरोजगार नहीं रहेगा। सभी कारखाने अपनी पूर्ण क्षमता के साथ कार्य करते रहेंगे । इन अर्थशास्त्रियों को परंपरावादी अर्थशास्त्री कहा जाता है। परंतु , 1929 में तथा इसके बाद के वर्षों में विश्व में महामंदी आई । यूरोप तथा **उत्तर**ी अमेरिका के देशों में उत्पादन तथा रोजगार में गिरावट आई।। इससे विश्व के अन्य देश काफी प्रभावित हुए।बाजार में मांग कम हो गई थी। कई कारखाने बंद हो गए । कर्मचारियों को नौकरियों से निकाल दिया गया । संयुक्त राज्य अमेरिका में 1929 तथा 1933 के बीच बेरोजगारी की दर में वृद्धि 3% से 25% हो गई। इसी अवधि में समग्र उत्पादन 33% कम हुआ । सामूहिक रूप में इन सभी को 1929 की महामंदी कहा जाता है।

Jharkhandlab.com

अध्याय 2 राष्ट्रीय आय का लेखांकन

बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Question)

1. निम्नलिखित में से कौन पूँजीगत वस्तु का एक उदाहरण है?
a. परिवार में उपयोग के लिए फ्रिज
b. परिवार में उपयोग के लिए सिलाई मशीन
c. दर्जी की दुकान में उपयोग के लिए सिलाई मशीन
d. चावल

2. किसान द्वारा ट्रैक्टर का प्रयोग खेती करने के लिए होता है। यहाँ ट्रैक्टर किस प्रकार की वस्तु का उदाहरण है?
a. उपभोक्ता वस्तु b. नाशवान वस्तु
c. मध्यवर्ती वस्तु d. गिफिन वस्तु

3. 'आपके बैंक खाते में 15 अप्रैल 2021 को 50 हजार रुपये हैं।' यह रकम किस संकल्पना का उदाहरण है?
a. स्टॉक b. प्रवाह
c. निवेश d. उपभोग

4. आय के वृत्ताकार प्रवाह माडल में विक्रेता से क्रेता की ओर वस्तुओं एवं सेवाओं के प्रवाह को क्या कहा जाता है?
a. मौद्रिक प्रवाह b. वास्तविक प्रवाह
c. वार्षिक प्रवाह d. स्टॉक

5. वस्तुओं तथा सेवाओं के प्रवाह में वृद्धि हुए बिना मौद्रिक प्रवाह में वृद्धि होने से अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव होगा?
a. मुद्रा-स्फीति b. मुद्रा-संकुचन
c. रोजगार का ह्रास d. मंदी

6. किसी देश में एक दिए हुए वर्ष में उत्पादन के साधनों के द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तु एवं सेवाओं के बाजार मूल्य को .....कहा जाता है।
a. सकल घरेलू उत्पाद b. शुद्ध घरेलू उत्पाद
c. राष्ट्रीय आय d. व्यक्तिगत आय

7. सकल घरेलू उत्पाद में शुद्ध घरेलू उत्पाद को घटाने से क्या प्राप्त होता है?
a. शुद्ध निर्यात b. शुद्ध अप्रत्यक्ष कर
c. घिसावट व्यय d. उपभोग व्यय

8. राष्ट्रीय आय क्या है?
a. बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद
b. साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद
c. बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद
d. साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद

9. सकल घरेलू उत्पाद की गणना में निम्न में से किस मद को शामिल नहीं किया जाता है?
a. उपभोग व्यय b. निवेश व्यय
c. हस्तांतरण भुगतान d. साधन आय

10. अगर किसी देश का निर्यात की तुलना में आयात अधिक है तो उस देश का सकल घरेलू उत्पाद तथा सकल राष्ट्रीय उत्पाद में क्या अंतर होगा?
a. सकल घरेलू उत्पाद तथा सकल राष्ट्रीय उत्पाद दोनों बराबर होंगे।
b. सकल घरेलू उत्पाद की तुलना में सकल राष्ट्रीय उत्पाद अधिक होगा।
c. सकल घरेलू उत्पाद की तुलना में सकल राष्ट्रीय उत्पाद कम होगा।
d. सकल राष्ट्रीय उत्पाद सकल घरेलू उत्पाद का दुगुना होगा।

11. अप्रत्यक्ष कर में से अनुदान (सहायिकी) को घटाने से प्राप्त होता है?
a. विदेशों से प्राप्त साधन आय
b. शुद्ध अनुदान
c. निजी आय
d. शुद्ध अप्रत्यक्ष कर

12. राष्ट्रीय आय के आंकड़ा से क्या जानकारी नहीं मिल सकती है?
a. राष्ट्रीय आय में उत्पादन के साधनों का योगदान
b. राष्ट्रीय आय में क्षेत्रकों का योगदान
c. देश की आर्थिक क्रियाओं के स्तर की माप
d. लोगों का आर्थिक कल्याण

13. स्थिर कीमत पर राष्ट्रीय आय का दूसरा नाम .....है।
a. सकल राष्ट्रीय उत्पाद
b. अवास्तविक राष्ट्रीय आय
c. वास्तविक राष्ट्रीय आय
d. हरित राष्ट्रीय आय

14. जीएनपी डीफ्लैक्टर ज्ञात करने का सूत्र क्या है?
a. $\frac{Nominal\ GNP}{Real\ GNP} \times 100$
b. $\frac{Real\ GNP}{Nominal\ GNP} \times 100$
c. $\frac{GDP}{GNP} \times 100$
d. $\frac{NDP}{GNP} \times 100$

15. भारत में अमेरिकी दूतावास के कर्मचारियों के वेतनादि भत्तों को किस देश के घरेलू उत्पाद में शामिल किया जायेगा?
a. भारत
b. अमेरिका
c. भारत तथा अमेरिका दोनों
d. कर्मचारियों के वेतनादि भत्तों को घरेलू उत्पाद में शामिल नहीं किया जाता है।

उत्तर: 1-C 2-A 3-A 4-B 5-A 6-A 7-C 8-D 9-C 10-C 11-D 12-D 13-C 14-A 15-B

Jharkhandlab.com

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Very short Answer question)

प्रश्न 1. साधन आय क्या है

उत्तरः उत्पादन के साधन लगान , मजदूरी ,ब्याज तथा लाभ के रूप में अपना पारिश्रमिक प्राप्त करते हैं जिन्हें उनकी साधन आय कहते हैं।

प्रश्न 2. मूल्यह्रास से क्या समझते हैं?

उत्तर - एक लेखा वर्ष में उत्पादन प्रक्रिया के दौरान पूंजीगत वस्तुओं के मूल्य में सामान्य टूट-फूट और उनके घिसावट के कारण वस्तुओं के मूल्य में जो कमी आती है उसे मूल्यह्रास कहते हैं।

प्रश्न 3. हस्तांतरण आय क्या है?

उत्तर - हस्तांतरण आय एक अनार्जित आय है जो अर्थव्यस्था में बिना किसी सेवा के बदले में दी जाती है जैसे- वृद्धावस्था पेंशन, छात्रवृत्ति एवं बेरोजारी भत्ता आदि।

प्रश्न 4. आय के वृत्ताकार प्रवाह से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - अर्थव्यवस्था में उत्पादन आय तथा व्यय का जो निरंतर प्रवाह होता रहता है उसे आय का चक्रीय प्रवाह कहते हैं।

प्रश्न 5. चक्रीय प्रवाह में अंतः- क्षेपण या भरण क्या है ?

उत्तर - आय का अंतः-क्षेपण आय में होने वाली वह वृद्धि है जो चक्रीय प्रवाह में बाहर से किसी और स्रोत द्वारा होती है। जैसे- विनियोग, सरकारी व्यय तथा निर्यात आदि को आय का अंतः -क्षेपण कहते है।

प्रश्न 6. टिकाऊ वस्तुओं से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर - टिकाऊ वस्तुएँ एक से अधिक बार प्रयोग में लाई जा सकती है इनका जीवन काल 1 वर्ष से अधिक होता है जैसे कार, स्कूटर एवं साईकिल आदि।

प्रश्न 7. पूंजीगत वस्तुएँ किसे कहते हैं ?

उत्तर - ये उत्पादक वस्तुओं का ही एक भाग है। एक लेखा वर्ष के अंत में उत्पादकों के पास टिकाऊ और गैर टिकाऊ वस्तुओं का स्टॉक पूंजीगत वस्तुएँ कहलाता है।

प्रश्न 8. बचत की परिभाषा दें ?

उत्तर - आय का वह भाग जो उपभोग पर भी व्यय नहीं किया जाता , बचत कहलाता है।

प्रश्न 9. ब्याज क्या है ?

उत्तर - ब्याज वह कीमत है जो पूंजी की सेवा के बदले में दी जाती है।

प्रश्न 10. सकल घरेलू उत्पाद की परिभाषा दें ?

उत्तर - एक लेखा वर्ष में किसी घरेलू सीमा के अंदर उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के बाजार मूल्य के जोड़ को सकल घरेलू उत्पाद कहते हैं।

प्रश्न 11. राष्ट्रीय आय से क्या समझते हैं

उत्तर - राष्ट्रीय आय एक लेखा वर्ष की अवधि के दौरान एक देश के सामान्य निवासियों तथा द्वारा अर्जित कारक आय का कुल जोड़ है।

प्रश्न 12. वैयक्तिक आय की परिभाषा दें?

उत्तर - व्यक्तियों तथा परिवारों को सभी स्रोतों से जो आय वास्तव में प्राप्त होती है उसके जोड़ को वैयक्तिक आय कहते हैं।

प्रश्न 13. प्रयोज्य आय (Personal d.sposable) से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर - वैयक्तिक आय में से प्रत्यक्ष करों तथा सरकारी प्रशासनिक विभागों की विविध प्राप्तियों जैसे- फीस, जुर्माना आदि को घटाकर जो आय शेष बचती है वह प्रयोज्य आय कहलाती है।

प्रश्न 14. आर्थिक सहायता (सब्सिडी) से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर- आर्थिक सहायता से अभिप्राय सरकार द्वारा उद्यमों को दी गई आर्थिक सहायता या अनुदान है। सरकार द्वारा किसानों उद्योगों, उपभोक्ताओं को समय-समय पर बिजनेस लोन और उपकरणों की खरीद करने पर सब्सिडी दिया जाता है।

प्रश्न 15. दोहरी गणना से बचने के लिए किस विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए ?

उत्तर- दोहरी गणना से बचने के लिए मूल्यवृद्धि विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए।

प्रश्न 16. घरेलू आय तथा राष्ट्रीय आय में एक अंतर बताएं ?

उत्तर- घरेलू आय में विदेशों से शुद्ध साधन आय शामिल नहीं होती, जबकि राष्ट्रीय आय में विदेशों से शुद्ध साधन आय शामिल होती है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Short Answer question)

प्रश्न 1. राष्ट्रीय आय लेखा से आप क्या समझते हैं? इसका महत्व बताइए।

उत्तर- सभी देश अपनी राष्ट्रीय आय से संबंधित आंकड़ों का जो व्यवस्थित हिसाब- किताब रखता है उसे राष्ट्रीय आय लेखा कहा जाता है। यह व्यवसाय लेखा की तरह ही दोहरी अंकन प्रणाली के आधार पर तैयार किया जाता है।

राष्ट्रीय आय की तीन पहलुओं (1) उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य(2) साधन आय का योग तथा(3)कुल अंतिम व्यय संबंधित विवरणों को राष्ट्रीय आय लेखा कहा जाता है।

राष्ट्रीय आय लेखांकन के महत्व- राष्ट्रीय आय लेखांकन का उपयोग सामान्यतः निम्नांकित कार्यों में किया जाता है-

1. देश की राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाने में।
2. राष्ट्रीय आय में प्रत्येक क्षेत्र के अंश का अनुमान लगाने में।
3. विभिन्न देशों की राष्ट्रीय आय की तुलना करने में।
4. देश की आर्थिक विकास के स्तर की व्याख्या तथा वर्णन करने में।
5. राष्ट्रीय आय में उत्पादन के प्रत्येक साधन के योगदान का अनुमान लगाने में।

प्रश्न 2. मध्यवर्ती वस्तु तथा अंतिम वस्तु में अंतर स्पष्ट करें।

उत्तर-

मध्यवर्ती वस्तु-

1. मध्यवर्ती वस्तु अन्य वस्तुओं के उत्पादन के लिए उपयोग की जाती है।
2. मध्यवर्ती वस्तु की मांग उत्पादकों द्वारा की जाती है।
3. मध्यवर्ती वस्तुओं को राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाता।
4. इनकी पुनः बिक्री की जाती है जिससे इनकी उपयोगिता बढ़ जाती है।

अंतिम वस्तु-

1. अंतिम वस्तु, अंतिम उपभोग के लिए उपयोग की जाती है।
2. अंतिम वस्तुओं की मांग उपभोक्ताओं द्वारा की जाती है।
3. अंतिम वस्तुओं को राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाता है।
4. इनको दोबारा बेचा नहीं जाता तथा उपभोग प्रकिया के दौरान इनकी उपयोगिता कम हो जाती है।

JharKhandLab.com

प्रश्न 3. साधन भुगतान तथा हस्तांतरण भुगतान में अंतर बताएं।

उत्तरः- साधन भुगतान (Factor Payment)-

1. यह साधन को सेवा प्रदान करने के बदले प्राप्त भुगतान है।
2. यह अर्जित आय है।
3. इसे राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाता है।
4. साधन आय में किराया, ब्याज, मजदूरी और लाभ शामिल हैं।

हस्तांतरण भुगतान (Transfer Payment)-

1. यह सेवा प्रदान किए बिना प्राप्त होता है।
2. यह हस्तांतरण आय है।
3. इसे राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाता है।
4. हस्तांतरण भुगतान के उदाहरण हैं बेरोजगारी भत्ता, छात्रवृत्ति, वृद्धावस्था पेंशन आदि।

प्रश्न 4. राष्ट्रीय आय तथा निजी आय में अंतर बतायें।

उत्तरः- राष्ट्रीय आय (National Income)

1. यह एक देश के सामान्य निवासियों की आय है।
2. इसमें निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों में उपार्जित आय को शामिल किया जाता है।
3. इसमें राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज शामिल नहीं किया जाता।

निजी आय (Private Income)

1. यह एक देश के निजी क्षेत्र कीआय है।
2. इसमें केवल निजी क्षेत्र की आय शामिल की जाती है।
3. इसमें राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज शामिल किया जाता है।

प्रश्न 5. वैयक्तिक आय क्या है?

उत्तरः- सभी व्यक्तियों की सभी स्रोतों से प्राप्त आय को वैयक्तिक आय कहते हैं। इसमें साधन आय और हस्तांतरण आय दोनों प्रकार की आय शामिल होती हैं। चाहे देश की घरेलू सीमाओं में रहकर प्राप्त हुई हो या विदेशों से। इसमें निगम कर तथा अवितरित लाभ शामिल नहीं किया जाता। इसकी गणना निम्न सूत्रों की सहायता से की जाती है-

वैयक्तिक आय= राष्ट्रीय आय - निजी आय -निगम कर-अवितरित लाभ।

प्रश्न 6. उत्पादन के चार साधन कौन से हैं तथा प्रत्येक के पारिश्रमिक को क्या कहते हैं?

उत्तरः-

उत्पादन के साधन	पारिश्रमिक का नाम
1. भूमि	1. लगान
2. श्रम	2. मजदूरी
3. पूंजी	3. ब्याज
4. उद्यमी	4. लाभ

प्रश्न 7. प्रवाह तथा स्टॉक (Stock) में क्या अंतर है?

उत्तरः- प्रवाह (Flow)-

1. प्रवाह को समय की एक निश्चित अवधि के संदर्भ में मापा जाता है।
2. प्रवाह में समय की अवधि होती है।
3. यह एक गतिशील अवधारणा है।

स्टॉक (Stock)-

1. स्टॉक को निश्चित बिंदु पर मापा जाता है।
2. स्टॉक की समय अवधि नहीं होती।
3. यह एक स्थिर अवधारणा है।

प्रश्न 8. चालू कीमतों पर राष्ट्रीय आय तथा स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय में अंतर स्पष्ट करें।

उत्तरः- चालू कीमतों पर राष्ट्रीय आय-

1. चालू कीमतों पर राष्ट्रीय आय को मौद्रिक राष्ट्रीय आय कहा जाता है।
2. इसमें राष्ट्रीय आय की गणना प्रचलित कीमतों पर की जाती है।
3. यह राष्ट्रीय आय दो कारकों से प्रभावित होती है (क) कीमतों में परिवर्तन तथा (ख) वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पाद में परिवर्तन।

स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय-

1. स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय को वास्तविक राष्ट्रीय आय कहा जाता है।
2. इसमें राष्ट्रीय आय की गणना आधार वर्ष की प्रचलित कीमतों पर की जाती है।
3. यह राष्ट्रीय आय केवल वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन में परिवर्तन से प्रभावित होती है।

प्रश्न 9. चक्रीय प्रवाह में भरण (समावेश) तथा क्षरण (रिसाव) क्या है?

उत्तरः- भरण (समावेश) :- भरण अथवा समावेश आय के चक्रीय प्रवाह में प्रवेश है। यह चक्रीय प्रवाह के आकार को बढ़ा देता है। यह अर्थव्यवस्था में उत्पादन की प्रक्रिया में विस्तार करता है। निवेश, निर्यात, सरकारी खर्च आदि प्रमुख भरण हैं।

क्षरण (रिसाव):- क्षरण अथवा रिसाव आय के चक्रीय प्रवाह में से निकास है। यह आय के चक्रीय प्रवाह में स्थिरता के लिए चक्रीय प्रवाह का आकार घटा देता है। यह अर्थव्यवस्था में उत्पादन की प्रक्रिया में संकुचन करता है। बचत, कर, आयात आदि प्रमुख क्षरण हैं।

प्रश्न 10. चित्र के द्वारा वास्तविक प्रवाह तथा मौद्रिक प्रवाह में अंतर बताएं।

उत्तरः- वास्तविक प्रवाह में परिवार क्षेत्र की ओर से फर्म (उत्पादक) क्षेत्र को साधन सेवाएं प्रवाहित होती है और बदले में फर्म (उत्पादक) क्षेत्र से परिवार क्षेत्र की ओर वस्तुएं तथा सेवाएं प्रवाहित होती है। नीचे चित्र द्वारा दिखाया गया है:-

वास्तविक प्रवाह (Money Flow)

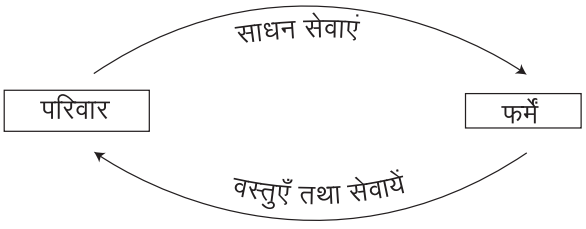

मौद्रिक प्रवाह में फर्म(उत्पादक) क्षेत्र से परिवार क्षेत्र की ओर साधन भुगतान प्रवाहित होती है जबकि परिवार क्षेत्र से फर्म(उत्पादक) क्षेत्र की ओर उपभोग व्यय प्रवाहित होती है। नीचे चित्र द्वारा दिखाया गया है:

मौद्रिक प्रवाह (Money Flow)

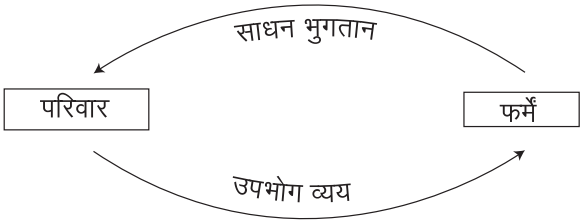

Jharkhandiah.com

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Long Question Answer)

प्रश्न 1. राष्ट्रीय आय क्या है? राष्ट्रीय आय की गणना की दो विधियों को समझाइए ।

उत्तर- किसी देश की अर्थव्यवस्था द्वारा एक वित्तीय वर्ष के दौरान उत्पादित अंतिम वस्तुओं व सेवाओं के शुद्ध मूल्य के योग को राष्ट्रीय आय करते हैं इसमें विदेशों से अर्जित शुद्ध साधन आय भी शामिल होती है।

राष्ट्रीय आय का लेखांकन संबंधी अवधारणा सर्वप्रथम साइमन कुजनेट्स महोदय द्वारा प्रतिपादित की गई है। राष्ट्रीय आय के मापन हेतु तीन प्रमुख विधियों का प्रयोग किया जाता है, ये विधियां हैं-

A) आय विधि,

B) उत्पादन विधि तथा

C) व्यय विधि।

राष्ट्रीय आय की गणना की आय विधि -

- आय विधि के अंतर्गत राष्ट्रीय आय की गणना उत्पाद कारकों के लिए भुगतान के आधार पर किया जाता है।
- राष्ट्रीय आय की गणना के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों तथा व्यवसायिक उपक्रमों की शुद्ध आय का योग प्राप्त किया जाता है जो कि सभी उत्पादन साधनों की आय का योग होता है। इस योगफल को घरेलू आय कहते हैं। यदि इस योग में विदेशों से अर्जित शुद्ध साधन आय को जोड़ दें तो वह राष्ट्रीय आय बन जाती है।

आय विधि से राष्ट्रीय आय की गणना का सूत्र निम्न है -

राष्ट्रीय आय = मजदूरी + लगान + ब्याज + लाभांश + अवितरित लाभ + निगम लाभ कर + सार्वजनिक क्षेत्र का अवशेष + मिश्रित आय + विदेशों से अर्जित शुद्ध साधन आय।

राष्ट्रीय आय की गणना की उत्पादन विधि -

- इस विधि को वस्तु-सेवा विधि भी कहा जाता है। इसके अंतर्गत यह गणना किया जाता है कि अंतिम उत्पाद में प्रत्येक उद्योग ने अलग-अलग क्या योगदान दिया है।
- इस विधि के अंतर्गत किसी देश में एक वित्तीय वर्ष में उत्पादित अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं का मूल्य बाजार मूल्यों पर ज्ञात किया जाता है।
- इस प्रकार उत्पादन विधि के अंतर्गत राष्ट्रीय आय की गणना किसी देश में एक वर्ष में उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य बाजार मूल्य पर किया जाता है।

इस विधि से रास्ट्रीय आय की गणना का सूत्र निम्न है-

राष्ट्रीय आय = बाजार कीमत पर (प्राथमिक क्षेत्र + द्वितीयक क्षेत्र + तृतीय क्षेत्र) द्वारा मूल्य वृद्धि + विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय - घिसावट व्यय - शुद्ध अप्रत्यय कर

प्रश्न 2. जीडीपी से राष्ट्रीय आय की गणना आप कैसे करेंगे? व्याख्या कीजिए।

उत्तर- जीडीपी - एक देश के घरेलू सीमा के अंदर, एक लेखा वर्ष में सभी उत्पादकों चाहे वे देश के निवासी हो या गैर निवासी के द्वारा जितनी भी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है , उनके बाजार कीमत के योग को सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) कहा जाता है।

राष्ट्रीय आय - एक देश के घरेलू सीमा के अंदर एक लेखा वर्ष में सभी उत्पादकों द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के कुल मूल्य (साधन कीमत पर) तथा विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय का योग राष्ट्रीय आय कहलाता है।

जीडीपी की सहायता से राष्ट्रीय आय की गणना तीन विधियों से हो सकती है-

A) आय विधि -

जीडीपी = कर्मचारियों का पारिश्रमिक + परिचालन अधिशेष + स्व- नियोजितों की आय + घिसावट+ शुद्ध अप्रत्यक्ष कर

राष्ट्रीय आय = जीडीपी + विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय (NFIA)

B) उत्पाद विधि -

जीडीपी = बाजार कीमत पर प्राथमिक क्षेत्र का सकल मूल्यवृद्धि + द्वितीय क्षेत्र का सकल मूल्य वृद्धि + तृतीय क्षेत्र का सकल मूल्य वृद्धि

राष्ट्रीय आय = जीडीपी + विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय (NFIA) - घिसावट व्यय - शुद्ध अप्रत्यक्ष कर

C) व्यय विधि -

जीडीपी = निजी अंतिम उपभोग व्यय + सरकारी अंतिम उपभोग व्यय + सकल घरेलू स्थिर पूंजी निर्माण + शुद्ध निर्यात

राष्ट्रीय आय = जीडीपी + विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय (NFIA) - घिसावट व्यय - शुद्ध अप्रत्यक्ष कर

इस प्रकार, राष्ट्रीय आय की गणना में जीडीपी एक महत्वपूर्ण पक्ष है।

प्रश्न 3. चार क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में चक्रीय प्रवाह को समझाइए ।

उत्तर - आय के चक्रीय प्रवाह का चार क्षेत्रीय मॉडल - चार क्षेत्रीय मॉडल खुली अर्थव्यवस्था (Open Economy) को प्रदर्शित करता है। चार क्षेत्रीय चक्रीय प्रवाह मॉडल में 'विदेशी क्षेत्र' या 'शेष विश्व क्षेत्र' (Foreign or Rest of the World Sector) को सम्मिलित किया जाता है। वर्तमान समय में अर्थव्यवस्था का स्वरूप खुली अर्थव्यवस्था का है जिसमें वस्तुओं का आयात एवं निर्यात होता है। जब एक अर्थव्यवस्था शेष विश्व से आयात की गई वस्तुओं का भुगतान करती है तो इसमें देश के बाहर शेष विश्व की ओर मुद्रा का प्रवाह

jharkhandlab.com

(Outflow) होता है। दूसरी ओर जब एक देश शेष विश्व को निर्यात करता है तो दूसरे देश उसे भुगतान करते हैं। इस प्रकार शेष विश्व से इस देश की ओर मुद्रा का प्रवाह (Inflow) होता है।

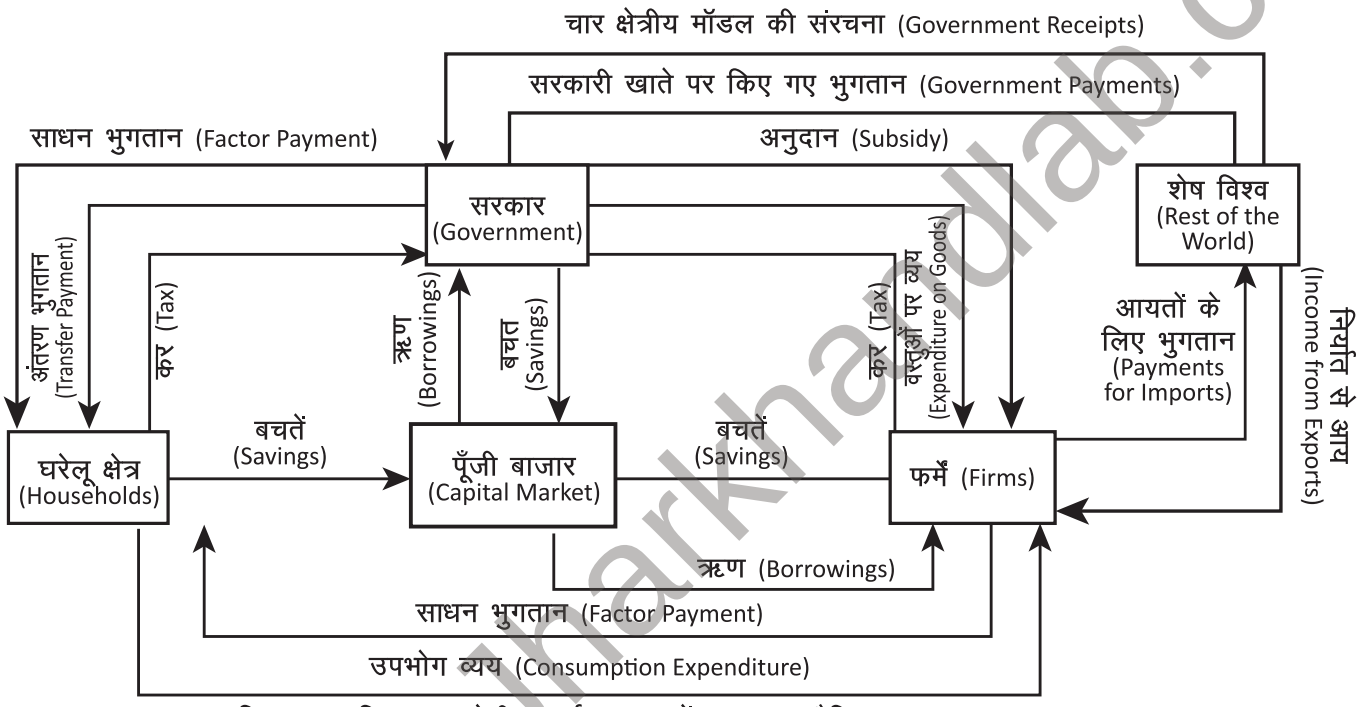

चित्र : आधुनिक चार क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में आय का मौद्रिक प्रवाह

खुली अर्थव्यवस्था में प्रवाह के पाँच प्रमुख स्तम्भ होते हैं-

1) परिवार क्षेत्र (Household Sector),
2) व्यावसायिक फर्म (Business Firm),
3) सरकारी क्षेत्र (Government Sector),
4) क्षेत्र (Resi of the World Sector),
5) पूँजी बाजार (Capital Market) ।

शेष विश्व क्षेत्र के समावेश होने पर आयात (M) व निर्यात (X) का भी आय के चक्रीय प्रवाह पर प्रभाव पड़ता है। आयातों के होने पर चक्रीय प्रवाह से आय का रिसाव (Leakage) होता है तथा निर्यात किये जाने पर चक्रीय प्रवाह में आय का अन्तःक्षेपण (Injection) होता है।

संतुलन की शर्त (Condition of Equilibrium)- चार क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के चक्रीय प्रवाह में संतुलन की शर्त निम्न प्रकार है-

$$Y = C + I + G + (X - M)$$

यहाँ Y = आय अथवा उत्पादन, C = उपभोक्ता व्यय, I = निवेश व्यय, G = सरकारी, (X - M) = शुद्ध निर्यात (यहाँ X = निर्यात तथा M = आयात) ।

jharkhandlab.com

अध्याय 3 मुद्रा और बैंकिंग

बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Question)

1. **निम्नलिखित में से कौन-सा विनिमय का सर्वोत्तम साधन है ?**
   a. वस्तु b. मुद्रा
   c. चेक d. हुंडी

2. **मुद्रा ने दूर किया है-**
   a. सामाजिक बुराइयों को
   b. आर्थिक बुराइयों को
   c. सरकार की समस्याओं को
   d. वस्तु- विनिमय प्रणाली की कठिनाइयों को

3. **निम्नलिखित में से मुद्रा का मुख्य कार्य कौन है ?**
   a. मूल्य का संचय b. साख का आधार
   c. संपत्ति की तरलता d. विनिमय का माध्यम

4. **निम्नलिखित में से मुद्रा का गौण कार्य कौन है ?**
   a. मूल्य का मापक
   b. विनिमय का माध्यम
   c. विलंबित भुगतान का मान
   d. सामाजिक आय का वितरण

5. **निम्नलिखित में से मुद्रा का आकस्मिक कार्य कौन है ?**
   a. मूल्य का संचय
   b. सामाजिक आय का वितरण
   c. मूल्य का मापक
   d. मूल्य का हस्तांतरण

6. **' मुद्रा वह है जो मुद्रा का कार्य करती है ' यह परिभाषा किसकी है ?**
   a. मार्शल b. केन्स
   c. रॉबर्टसन d. हार्टले विदर्स

7. **किस विधि से हम बैंक से मुद्रा निकाल सकते हैं ?**
   a. आहरण पत्र (Withdrawal From)
   b. चेक (Cheque)
   c. एटीएम (ATM)
   d. इनमें से सभी

8. **मुद्रा के स्थैतिक और गत्यात्मक कार्यों का विभाजन किसने किया ?**
   a. रैग्नर फ्रिश b. पॉल एजिंग
   c. मार्शल d. इनमें से सभी

9. **जनता का बैंक कौन- सा है ?**
   a. व्यापारिक बैंक b. केंद्रीय बैंक
   c. A तथा B दोनों d. इनमें से कोई नहीं

10. **व्यापारिक बैंक के प्राथमिक कार्य निम्नलिखित में कौन- से हैं ?**
    a. जमाएँ स्वीकार करना b. ऋण देना
    c. साख निर्माण d. उपर्युक्त सभी

11. **साख मुद्रा का विस्तार होता है जब नकद कोष अनुपात (CRR)-**
    a. घटता है b. बढ़ता है
    c. A तथा B दोनों d. इनमें से कोई नहीं

12. **ATM का पूर्ण रूप क्या है ?**
    a. एनी टाइम मनी b. ऑल टाइम मनी
    c. ऑटोमेटेड टेलर मशीन d. A तथा B दोनों

13. **सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया क्या है ?**
    a. व्यापारिक बैंक b. केंद्रीय बैंक
    c. निजी बैंक d. इनमें से कोई नहीं

14. **भारत का केंद्रीय बैंक निम्नलिखित में कौन सा है ?**
    a. रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया b. स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
    c. सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया d. बैंक ऑफ इंडिया

15. **केंद्रीय बैंक के निम्नलिखित में कौन से कार्य हैं ?**
    a. नोट निर्गमन का एकाधिकार
    b. सरकार का बैंकर
    c. विदेशी विनिमय कोषों का संरक्षक
    d. उपर्युक्त सभी

16. **केंद्रीय बैंक द्वारा कौन सी मुद्रा जारी की जाती है ?**
    a. चलन मुद्रा b. साख मुद्रा
    c. सिक्के d. इनमें से सभी

17. **रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना हुई -**
    a. 1947 में b. 1935 में
    c. 1937 में d. 1945 में

18. **केंद्रीय बैंक साख नियंत्रण करती है -**
    a. बैंक दर के जरिए
    b. खुले बाजार प्रक्रिया के जरिए
    c. CRR के जरिए
    d. इनमें से सभी

19. **केंद्रीय बैंक का मुख्य कार्य है -**
    a. केंद्रीय सरकार का बैंक, एजेंट, सलाहकार
    b. बैंकों का बैंक
    c. नोट जारी करना
    d. इनमें से सभी

20. **भारत में ₹1 का नोट जारी करता है -**
    a. भारतीय रिजर्व बैंक
    b. भारत सरकार का वित्त मंत्रालय
    c. भारतीय स्टेट बैंक
    d. इनमें से कोई नहीं

21. **बैंक का एजेंसी कार्य क्या है ?**
    a. ऋण देना b. जमा स्वीकार करना
    c. ट्रस्टी का कार्य करना d. लॉकर सुविधा देना

उत्तर - 1- b 2-d 3 - d 4 - c 5 - b 6 - d 7 - d
8 - b 9 - a 10 - d 11 - a 12 - c 13 - a 14- a
15 - d 16 - a 17 - b 18 - d 19 - d 20- b 21-c

Jharkhandlab.com

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Very short Answer question)

प्रश्न 1. ATM का पूर्ण रूप क्या है ?

उत्तर- ऑटोमेटेड टेलर मशीन (Automated Teller Machine)।

प्रश्न 2. अधिविकर्ष से क्या समझते हैं ?

उत्तर- अधिविकर्ष प्रणाली में चालू खाते के जमा कर्ताओं को अपनी जमा राशि के ऊपर भी एक निश्चित सीमा तक रकम निकालने की अनुमति दे दी जाती है। बैंक अधिविकर्ष की राशि निश्चित कर देता है, और ऋणी इस राशि के भीतर राशि निकाल सकता है। ऋणी वास्तविक रूप में निकाली गई रकम पर ब्याज देता है।

प्रश्न 3. साख गुणक का सूत्र बताइए

उत्तर- साख गुणक = 1/ जमाओं पर नकद कोष अनुपात

$$\text{साख गुणक} = \frac{1}{\text{CRR}}$$

प्रश्न 4. कौन सा बैंक साख निर्माण करता है

उत्तर- व्यापारिक बैंक

प्रश्न 5. बैंक दर किसे कहते हैं ?

उत्तर- वह दर जिस पर केंद्रीय बैंक वाणिज्यिक बैंकों को ऋण देते हैं।

प्रश्न 6. नकद कोष अनुपात (CRR) क्या है ?

उत्तर- व्यापारिक बैंकों को अपनी कुल जमा राशि का एक निश्चित प्रतिशत केंद्रीय बैंक के पास नकद कोष के रूप में जमा करना पड़ता है जिसे नकद कोष अनुपात कहते हैं।

प्रश्न 7. वैधानिक तरलता अनुपात (SLR) क्या है ?

उत्तर- वैधानिक तरलता अनुपात के अंतर्गत प्रत्येक व्यापारिक बैंकों को अपनी कुल जमा का एक निश्चित प्रतिशत अपने पास तरल रूप में रखना पड़ता है।

प्रश्न 8. मौद्रिक नीति क्या है ?

उत्तर- मौद्रिक नीति देश के केंद्रीय बैंक द्वारा निर्धारित की जाती है। मौद्रिक नीति का उद्देश्य साख एवं मुद्रा के प्रवाह को नियमित करना है।

केंद्रीय बैंक अपनी मौद्रिक नीति के उपकरणों बैंक दर, रेपो दर, नकद- कोष, वैधानिक तरलता अनुपात में समय-समय पर परिवर्तन करता है।

प्रश्न 9. उच्च शक्तिशाली मुद्रा के प्रमुख घटक लिखिए

उत्तर- लोगों के पास नकदी (सिक्के तथा पत्र मुद्रा) तथा बैंक के पास नकद आरक्षण को उच्च शक्ति वाली मुद्रा कहा जाता है क्योंकि इसी मुद्रा के आधार पर बैंक साख का निर्माण कर सकते हैं।

H = C + R

H = उच्च शक्ति मुद्रा

C = जनता के पास चलन मुद्रा

R = सरकार एवं बैंकों का RBI के पास जमा

प्रश्न 10. बैंक मुद्रा क्या है ?

उत्तर- वाणिज्यिक बैंकों के द्वारा मांग जमाओं के माध्यम से सृजित मुद्रा बैंक मुद्रा कहलाती है।

प्रश्न 11. मुद्रा क्या है ?

उत्तर- एक वस्तु जो विनिमय के माध्यम के रूप में सामान्य रूप से स्वीकार की जाती है मुद्रा कहलाती है। भारत में रूपया एक मुद्रा है क्योंकि यह भारत में सामान्य रूप से विनिमय का माध्यम है।

प्रश्न 12. मुद्रा की पूर्ति कौन करते हैं ?

उत्तर- (i) देश की सरकार तथा

(ii) केंद्रीय बैंक (जो मुद्रा जारी करने का प्राधिकारी है) एवं वाणिज्यिक बैंक (जो मांग जमाओं द्वारा मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि करते हैं) को सम्मिलित किया जाता है।

प्रश्न13. रेपो दर क्या है ?

उत्तर - ब्याज की वह दर जिस पर वाणिज्यिक बैंक, केंद्रीय बैंक से अल्पकालीन ऋण ले सकते हैं।

प्रश्न 14. खुले बाजार की क्रियाओं से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर - इसका अभिप्राय देश के केंद्रीय बैंक द्वारा सरकारी प्रतिभूतियों को खुले बाजार में खरीदने तथा बेचने से है।

प्रश्न 15. सावधि जमाओं से क्या अभिप्राय है?

उत्तर - सावधि जमाएँ एक निश्चित समय के लिए जमा होती हैं, उन्हें चेक के माध्यम से नहीं निकाला जा सकता है।

प्रश्न 16. प्राथमिक जमा किसे कहते हैं ?

उत्तर - जो धनराशि बैंकों में नकदी के रूप में लोगों द्वारा जमा कराई जाती है उसे ही प्राथमिक जमा कहते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Short Question Answer)

प्रश्न 1. मुद्रा का 'लेखा की इकाई' या 'मूल्य की इकाई' कार्य समझाइए ?

उत्तर - मुद्रा मूल्य का मापदंड करती है। लेखे की इकाई से अभिप्राय यह है कि प्रत्येक वस्तु तथा सेवा का मूल्य मुद्रा के रूप में मापा जाता है। वस्तु विनिमय प्रणाली में मूल्य का माप बहुत कठिन था। एक वस्तु का मूल्य दूसरी वस्तु के रूप में मापा जाता था। मूल्य की कोई साझी इकाई नहीं होती थी। मुद्रा के आने से यह कठिनाई दूर हो गई है अब प्रत्येक वस्तु का मूल्य मुद्रा के रूप में मापा जाता है।

- मूल्य की सामान्य इकाई के कारण परिसंपत्तियों के क्रय तथा विक्रय के लिए बाजार में बड़े पैमाने पर विस्तार हुआ है जिससे अर्थव्यवस्था में निवेश का विस्तार हुआ है।
- मूल्य की सामान्य इकाई ने राष्ट्रीय आय तथा संबंधित समुच्चयों के अध्ययन को सुविधा जनक बनाया है।अब जीडीपी का आकलन संभव हो गया है।

प्रश्न 2. आदेश मुद्रा (Fiat money) तथा न्यास मुद्रा (Fiduciary money) क्या है?

उत्तर - आदेश मुद्रा- वह मुद्रा जो सरकार के आदेश द्वारा जारी की जाती है आदेश मुद्रा कहलाती है। इसमें सभी नोट तथा सिक्के सम्मिलित होते हैं।

न्यास मुद्रा- वह मुद्रा होती है जो विनिमय के माध्यम के रूप में स्वीकार की जाती है क्योंकि यह प्राप्तकर्ता तथा अदाकर्ता के बीच परस्पर विश्वास पर आधारित होती है। जैसे- चेक एक न्यास मुद्रा है।

प्रश्न 3. पूर्ण- काय मुद्रा (Full Bodied Money) तथा साख मुद्रा (Credit Money) क्या है ?

उत्तर- पूर्ण-काय मुद्रा - इससे अभिप्राय उस मुद्रा से है जो सिक्कों के रूप में होती है जब यह मुद्रा जारी की जाती है तो इनका वस्तु मूल्य मौद्रिक मूल्य के बराबर होता है।

साख मुद्रा - इससे अभिप्राय उस मुद्रा से है जिसका मौद्रिक मूल्य वस्तु मूल्य से अधिक होता है।

Jharkhandlab.com

प्रश्न 4. भारत में मुद्रा पूर्ति की वैकल्पिक परिभाषा क्या है ?

उत्तर - भारतीय रिजर्व बैंक मुद्रा की पूर्ति के वैकल्पिक मापों को चार रूपों में प्रकाशित करता है , M1 , M2 ,M3 ,M4 के रूप में यह सभी निम्नलिखित तरह से परिभाषित किए जाते हैं-

M1 = C + DD + OD

जहां , C = जनता के पास चलन मुद्रा

DD = बैंकों के पास मांग जमाएँ

OD = रिजर्व बैंक के पास अन्य जमाएँ ।

M2 = M1 + डाकघर के पास जनता की बचतें

M3 = M1 + व्यापारिक बैंकों के पास शुद्ध सावधि जमाएँ

M4 = M3 + पोस्ट ऑफिसों के पास कुल जमा (राष्ट्रीय बचत पत्र को छोड़कर) ।

प्रश्न 5. केंद्रीय बैंक तथा वाणिज्यिक बैंक में अंतर बताएं ?

उत्तर -

अंतर का आधार	केंद्रीय बैंक	वाणिज्यिक बैंक
1. अर्थ	केंद्रीय बैंक उस बैंक को कहते हैं जो देश की बैंकिंग प्रणाली का नियमन करता है और निर्देशन देता है।	वाणिज्यिक बैंक उस बैंक को कहते हैं जो लाभ कमाने के उद्देश्य से जमा स्वीकार करते हैं तथा ऋण देते हैं।
2. उद्देश्य	इनका उद्देश्य मुद्रा तथा साख पर नियंत्रण कर के देश में स्थिरता लाना है।	इसका मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना है।
3. जनता के साथ संबंध	इसका जनता के साथ प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता।	इसका जनता के साथ प्रत्यक्ष संबंध होता है।
4. प्रतियोगिता	केंद्रीय बैंक किसी भी बैंक के साथ कोई प्रतियोगिता नहीं करता।	वाणिज्यिक बैंकों में प्रतियोगिता पाई जाती है।
5.विदेशी मुद्रा	रिजर्व बैंक देश की विदेशी मुद्रा आरक्षण का संरक्षक है।	वाणिज्यिक बैंक केवल विदेशी मुद्रा का लेन-देन करते हैं।
6.सरकार	इस पर सरकार का नियंत्रण होता है।	इस पर नियंत्रण सरकार का भी हो सकता है और निजी व्यक्तियों का भी।

प्रश्न 6. मांग जमा तथा सावधि जमा में अंतर बताएं ?

उत्तर -

मांग जमा	सावधि जमा
1. मांग जमा की स्थिति में जमाकर्ता बिना किसी नोटिस के कभी भी जमाराशि निकाल सकता है।	1. सावधि जमा की स्थिति में एक निश्चित अवधि के पश्चात ही जमाराशि निकाला जा सकता है।
2. मांग जमा पर कोई ब्याज नहीं मिलता।	2. सावधि जमा पर ऊंचे दर से ब्याज मिलता है।
3. मांग जमा में चेक द्वारा राशि निकाल सकते हैं।	3. सावधि जमा में चेक द्वारा राशि नहीं निकाल सकते।
4. मांग जमा मुद्रा का एक घटक है।	4. सावधि जमा, समीप मुद्रा है।

प्रश्न 7. अंतिम ऋण दाता के रूप में केंद्रीय बैंक का कार्य समझाएं ?

उत्तर - केंद्रीय बैंक देश के अन्य बैंकों का अंतिम ऋण दाता के रूप में कार्य करता है। इसका अर्थ है कि जब एक बैंक पर वित्तीय संकट आते हैं और सहायता के अन्य रास्ते बंद हो जाते हैं ,तब केंद्रीय बैंक उस बैंक को ऋण देकर उसे वित्तीय संकट से बाहर निकालते हैं। अंतिम ऋण दाता के रूप में केंद्रीय बैंक ,एक देश की संपूर्ण बैंकिंग प्रणाली को नियंत्रित करता है ।इस कार्य का मुख्य उद्देश्य यह है कि धन के अभाव में किसी लेनदेन में रुकावट उत्पन्न न हो।

प्रश्न 8. 'खुले बाजार की क्रियायें' पर टिप्पणी लिखें ?

उत्तर- खुले बाजार की क्रियाओं के अंतर्गत केंद्रीय बैंक बाजार में सरकारी प्रतिभूतियों का क्रय- विक्रय करता है। जब केंद्रीय बैंक प्रतिभूतियों को बेचता है तो मुद्रा बाजार में मुद्रा की मात्रा कम होने लगती है ,और जब बाजार से केंद्रीय बैंक प्रतिभूतियों को खरीदता है तो मुद्रा बाजार में मुद्रा की मात्रा बढ़ जाती है।

जब मुद्रा बाजार में मुद्रा की अधिकता (अर्थात मुद्रास्फीति) होती है, तब केंद्रीय बैंक खुले बाजार में प्रतिभूतियां बेचना प्रारंभ कर देता है। जनता अपनी नकदी अथवा बचत कोषों से केंद्रीय बैंक द्वारा बेचे जाने वाली प्रतिभूतियों का क्रय करना शुरू कर देती है। इस प्रकार नकदी केंद्रीय बैंक को लौट जाती है और प्रचलित मुद्रा की मात्रा कम हो जाती है जिससे बैंकों के नकद कोषों में कमी आ जाती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Long Question Answer)

प्रश्न 1. वस्तु विनिमय प्रणाली क्या है? वस्तु विनिमय प्रणाली की कठिनाइयों का वर्णन करें ?

उत्तर - जब एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ प्रत्यक्ष आदान-प्रदान होता है तो उसे वस्तु विनिमय प्रणाली कहते हैं।

वस्तु विनिमय प्रणाली की कठिनाइयां -

(i) **दोहरे संयोग का अभाव**- इसमें आवश्यकताओं के दोहरे संयोग का अभाव पाया जाता है। आवश्यकताओं के दोहरे संयोग का मतलब यह है कि दो व्यक्ति ऐसे होने चाहिए जिनको एक दूसरे की वस्तु की आवश्यकता हो और वह उन्हें बदल सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि मोहन के पास गेहूं है और उसके बदले वह दूध चाहता है तो उसे एक ऐसे व्यक्ति की खोज करनी होगी जिसके पास दूध हो और वह दूध के बदले में गेहूं लेने के लिए तैयार, हो लेकिन वास्तविक जीवन में इस प्रकार का दोहरा संयोग मिलना बहुत ही कठिन है।

(ii) **मूल्य के सामान्य मापक का अभाव** - इसमें मूल्य के एक सामान्य मापक का अभाव पाया जाता है। इसके फलस्वरूप दो वस्तुओं के बीच विनिमय की मात्रा निश्चित करना कठिन हो जाता है। उदाहरण के लिए, यह बतलाना बहुत ही कठिन है कि एक बकरी के बदले कितना कपड़ा दिया जाए अथवा एक गाय के बदले कितनी बकरियां दी जाए।

(iii) **वस्तुओं में विभाजकता का अभाव** - कुछ वस्तुएं ऐसी होती हैं जिनका विभाजन नहीं किया जा सकता तथा विभाजन करने से उनकी उपयोगिता समाप्त हो जाती है। यदि एक अविभाज्य एवं अधिक मूल्य वाली वस्तु का विनिमय कम मूल्य वाली कई वस्तुओं से करना होता है तो इस कठिनाई का सामना करना पड़ता है। मान लिया जाए कि किसी व्यक्ति के पास एक गाय है जिसके बदले वह गेहूं , कपड़ा और कंबल लेना चाहता है इसके लिए उसे एक ऐसे व्यक्ति की खोज करनी होगी जिसके पास यह तीनों वस्तुएं हो और उनके बदले वह गाय लेने के लिए तैयार हो।

(iv) **मूल्य के संचय का अभाव** - वस्तु विनिमय प्रणाली में संचय का काम केवल वस्तुओं के रूप में किया जा सकता है। वस्तुओं को अधिक दिनों तक संचय करने में सड़ने-गलने का भय बना रहता है। यदि संचय गाय ,घोड़ा, बकरी , मुर्गा

Jharkhandlibrary.com

आदि जानवरों के रूप में किया जाए और बीमारी के कारण उनकी मृत्यु होने लगे तो सारा संचित धन समाप्त हो जाएगा।

(v) **भविष्य में भुगतान के साधन का अभाव**- वस्तु-विनिमय प्रणाली में उधार तथा लेनदेन का काम बहुत कम हो सकता है क्योंकि इसमें भविष्य में भुगतान के साधन का अभाव होता है। उदाहरण के लिए, मान लिया जाए कि कोई व्यक्ति एक दूसरे व्यक्ति से 5 वर्षों के लिए एक गाय उधार लेता है और 5 वर्षों के बाद गाय को लौटाता है। ऐसी अवस्था में हो सकता है कि वस्तुओं के रूप में गाय का मूल्य कम हो गया हो तथा गाय उतनी स्वस्थ न रहे जितनी पहले थी तथा उतना दूध ना दे जितना दूध पहले देती थी।

(vi) **मूल्य के हस्तांतरण का अभाव** - वस्तु विनिमय प्रणाली में मूल्य के हस्तांतरण में भी कठिनाई होती है। उदाहरण के लिए मान लिया जाए कि वस्तु विनिमय प्रणाली के समय किसी व्यक्ति का मकान दिल्ली में था और वह मुंबई जाकर बसना चाहता था ऐसी अवस्था में उसे अपना मकान छोड़कर ही दिल्ली जाना पड़ता क्योंकि मकान के बदले उसे देने योग्य वस्तु का अभाव था और ऐसे व्यक्ति का मिलना कठिन था जिस का मकान मुंबई में हो और उसके बदले वह उस व्यक्ति का दिल्ली वाला मकान लेने को तैयार हो।

प्रश्न 2. मुद्रा क्या है ? मुद्रा के कार्यों का वर्णन करें ?

उत्तर - मुद्रा ऐसी वस्तु है जिसे विनिमय के माध्यम, मूल्य के मापक तथा मूल्य के संचय के साधन के रूप में स्वतंत्र एवं सामान्य रूप से स्वीकार किया जाता है।

हार्टले विदर्स के अनुसार, "मुद्रा वह है जो मुद्रा का कार्य करे।"

नैप के अनुसार, "कोई भी वस्तु जो राज्य द्वारा मुद्रा घोषित कर दी जाती है मुद्रा कहलाती है।"

मुद्रा के कार्य निम्नलिखित हैं -

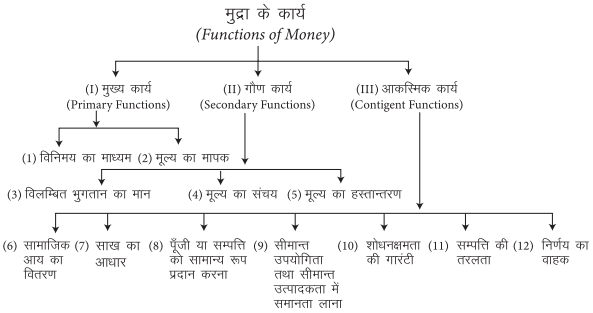

(I) मुख्य कार्य-

(1) **विनिमय का माध्यम** - मुद्रा ने विनमय के कार्य को सरल और सुविधा पूर्ण बना दिया है। वर्तमान युग में सभी वस्तुएं और सेवाएं मुद्रा के माध्यम से ही खरीदी तथा बेची जाती हैं।

(2) **मूल्य का मापक** - मुद्रा का कार्य सभी वस्तुओं और सेवाओं का मूल्यांकन करना है। वर्तमान समय में सभी वस्तुओं और सेवाओं को मुद्रा के द्वारा मापा जाता है।

(II) गौण कार्य -

(1) **विलंबित भुगतान का माप** - जिन लेन-देनों का भुगतान तत्काल न कर के भविष्य के लिए स्थगित कर दिया जाता है, उन्हें स्थगित भुगतान कहा जाता है। मुद्रा को स्थगित भुगतानों का मान इसलिए माना गया है क्योंकि मुद्रा के मूल्य में स्थिरता रहती है, इसमें सामान्य स्वीकृति का गुण पाया जाता है, अन्य वस्तुओं की तुलना में यह अधिक टिकाऊ है।

(2) **मूल्य का संचय** - मनुष्य अपनी आय का कुछ भाग भविष्य के लिए अवश्य बचाता है। मुद्रा के प्रयोग द्वारा मूल्य संचय का कार्य सरल और सुविधा पूर्ण हो गया है।

(3) **मूल्य का हस्तांतरण** - मुद्रा क्रय शक्ति के हस्तांतरण का सर्वोत्तम साधन है। इसका कारण मुद्रा का सर्वग्राही और व्यापक होना है। मुद्रा के द्वारा चल व अचल संपत्ति का हस्तांतरण सरलता से हो सकता है।

(III) आकस्मिक कार्य -

(1) **सामाजिक आय का वितरण**- मुद्रा सामाजिक आय के वितरण में सहायता प्रदान करती है। किसी देश में उत्पादन के विभिन्न साधनों के सहयोग से जिन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है उनके कुल योग को राष्ट्रीय आय या राष्ट्रीय लाभांश कहते हैं। इसी राष्ट्रीय आय का वितरण उत्पादन के साधनों के बीच किया जाता है और इसके लिए मुद्रा सहायक होती है।

(2) **साख का आधार** - वर्तमान समय में चेक, ड्राफ्ट, बिल आदि साख पत्रों का प्रयोग मुद्रा के समान ही होने लगा है। लेकिन इन साख पत्रों को मुद्रा के आधार पर ही जारी किया जाता है। बैंक जब इन साख पत्रों को जारी करता है तो इस साख-मुद्रा के पीछे अपने पास एक निश्चित अनुपात में नकद मुद्रा रख लेता है ताकि मांग होने पर साख मुद्रा को नकद मुद्रा में बदला जा सके।

(3) **पूँजी या संपत्ति को सामान्य रूप प्रदान करना** - पूंजी का निर्माण बचत पर निर्भर करता है और यह बचत मुद्रा के रूप में ही की जाती हैं। मुद्रा के द्वारा पूंजी में तरलता और गतिशीलता आती हैं जिससे पूंजी की विनियोग में सुविधा होती है। इस प्रकार मुद्रा पूंजी को सामान्य रूप देकर पूंजी के संचय एवं विनियोग दोनों को सरल बना देती है।

(4) **सीमांत उपयोगिता तथा सीमांत उत्पादकता में समानता लाना**- मुद्रा से उपभोक्ता एवं उत्पादक दोनों को लाभ है। अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने के लिए उपभोक्ता को अपनी आय को विभिन्न मदों पर इस प्रकार खर्च करना चाहिए कि उसे सभी मदों से बराबर सीमांत उपयोगिता प्राप्त हो, इस कार्य में मुद्रा ही सहायक होती है। पुनः उत्पादक के लिए विभिन्न साधनों से मिलने वाली सीमांत उत्पादकता को समान बनाने में मुद्रा सहायक होते है। जिससे अधिकतम उत्पादन एवं अधिकतम लाभ प्राप्त होता है।

(5) **शोधन-क्षमता की गारंटी** - मुद्रा के द्वारा किसी व्यक्ति या फर्म को ऋण भुगतान करने की क्षमता या शोधन क्षमता प्राप्त होती है। अतः प्रत्येक फर्म अपनी शोधन क्षमता को बनाए रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में अपने पास मुद्रा रखता है।

(6) **संपत्ति की तरलता** - मुद्रा संपत्ति को तरलता प्रदान करती है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी संपत्ति के कुछ भाग को तरल रूप में रखना पसंद करता है और यह तरलता नकद मुद्रा का ही दूसरा नाम है।

(7) **निर्णय का वाहक** - प्रो० ग्राहम के अनुसार मुद्रा निर्णय का वाहक होती है। मुद्रा के रूप में भविष्य के लिए क्रय- शक्ति का संचय किया जाता है ताकि लोग अपनी भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह अपनी इच्छा एवं निर्णय के अनुसार भविष्य में अपने संचित धन का प्रयोग करे।

प्रश्न 3. व्यवसायिक बैंकों के कार्यों का वर्णन करें?

उत्तर - व्यवसायिक बैंक के निम्नलिखित कार्य हैं-

(1) **जमा प्राप्त करना** - व्यवसायिक बैंक का मुख्य कार्य जनता से जमा प्राप्त करना है। लोग अपनी आय का एक हिस्सा उपभोग पर खर्च करते हैं एवं उसके बाद जो कुछ बचता है उसे बचत करते हैं। व्यवसायिक बैंक निम्नलिखित प्रकार के खातों में रकम जमा करते हैं।

(i) **बचत खाता** - बैंक में कोई भी व्यक्ति जब चाहे तब बचत खाता खोल सकता है तथा किसी भी दिन धन को जमा कर सकता है। इस खाते में जमा राशि पर सामान्य दर से ब्याज दी जाती है।

Jharkhandeep.com

(ii) **चालू खाता** - चालू खाता में दिन में कई बार चेक द्वारा रकम निकाली जा सकती है और जमा भी की जा सकती है । इसलिए चालू जमा को मांग पर जमा भी कहते हैं । चालू खाते में मुख्यतः व्यापारी वर्ग एवं बड़ी-बड़ी संस्थाएं रकम जमा करते हैं । बैंक चालू खाते पर कोई ब्याज का भुगतान नहीं करता ।

(iii) **स्थायी जमा खाता** - स्थाई जमा खाते में बैंक एक निश्चित अवधि के लिए रकम जमा करते हैं । यह अवधि 3 महीने से लेकर 10 वर्ष तक की हो सकती है । इस अवधि के पूर्व इस खाते से रकम नहीं निकाली जा सकती । रकम जमा करते समय जमाकर्ता को एक रसीद दी जाती है जिसे स्थाई जमा रसीद कहते हैं ।

(2) **ऋण देना** - व्यवसायिक बैंक उपर्युक्त खातों में जो जमा की रकम प्राप्त करते हैं उसे विभिन्न उत्पादक कार्यों के लिए अपने ग्राहकों को ऋण के रूप में देते हैं ।व्यवसायिक बैंकों का ऋण प्रायः अल्पकालीन ऋण होता है । बैंक अपने ग्राहकों को दिए गए ऋण पर उनसे ब्याज वसूलते हैं । ऋण देते समय बैंक दो बातों पर ध्यान देते हैं तरलता तथा लाभदायकता ।

व्यवसायिक बैंक निम्नलिखित प्रकार से ऋण देते हैं -

(i) **अधिविकर्ष** - कभी-कभी बैंक अपने ग्राहकों को चालू खाता में जमा रकम से भी अधिक रकम निकालने की अनुमति दे देते हैं इस अधिक रकम को ही अधिविकर्ष कहा जाता है । बैंक अपने ग्राहकों से यह तय कर लेता है कि वह उनको एक निश्चित रकम तक उनके खाते में जमा रकम के अतिरिक्त निकालने की अनुमति देगा ।

(ii) **नकद साख** - जब बैंक अपने ग्राहकों को व्यापारिक माल की जमानत के आधार पर ऋण देते हैं तो उसे नकद साख कहते हैं। जमानत के आधार पर बैंक अपने ग्राहकों के लिए साख की सीमा निश्चित कर देते हैं जिस सीमा तक बैंक से ऋणी अपनी आवश्यकतानुसार ऋण ले सकते हैं ।

(iii) **ऋण एवं अग्रिम** - जब बैंक अपने ग्राहकों से उचित जमानत लेकर एक पूर्व निश्चित अवधि के लिए ऋण देते हैं तो उसे ऋण.एवं अग्रिम कहते हैं ।ऋण एवं अग्रिम सोने चांदी के आभूषण, सरकारी प्रतिभूतियां , कंपनियों के हिस्से, बीमा की पॉलिसी, तथा स्थायी जमा खातों की रसीदों आदि के आधार पर लिए जा सकते हैं ।

(iv) **विनिमय बिलों अथवा हुंडियों का बट्टा करना** - विनिमय बिल अथवा हुंडी वे साख पत्र हैं जिन्हें उधार माल बेचने पर विक्रेता क्रेता के नाम लिखता है । विनिमय बिल में विक्रेता एक निश्चित अवधि के बाद एक निश्चित रकम की मांग करता है । क्रेता इस बिल को स्वीकार कर विक्रेता के पास लौटा देता है जिसके बाद यह विनिमय बिल एक विनिमय-साध्य पत्र हो जाता है ।

(v) **याचना तथा अल्प सूचना ऋण** - जब बैंक अति अल्प-अवधि के लिए अपने ग्राहकों को ऋण देते हैं तो उसे याचना तथा अल्प सूचना ऋण कहते हैं । यह ऋण प्रायः 3 दिन से लेकर 10 दिन तक के होते हैं ।

(3) **सामान्य उपयोगिता संबंधी कार्य** - बैंकों के सामान्य उपयोगिता संबंधी कार्य में विदेशी विनिमय का क्रय - विक्रय ,बहुमूल्य वस्तुओं की सुरक्षा ,साख प्रमाण पत्र एवं अन्य साख पत्रों को जारी करना, ग्राहकों को दूसरों की साख के बारे में जानकारी देना, व्यवसायिक सूचना तथा आर्थिक आंकड़े एकत्रित करना, वित्तीय मामलों के संबंध में सलाह देना, मुद्रा को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने की सुविधा प्रदान करना, सरकार तथा अन्य संस्थाओं के ऋणों का अभिगोपन करना आदि कार्य आते हैं ।

(4) **एजेंसी के कार्य** - बैंक ग्राहकों के एजेंट के रूप में भी कार्य करते हैं जैसे -प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय करना, ग्राहकों की ओर से भुगतान का काम करना, ग्राहकों के लिए भुगतान प्राप्त करना, चेक एवं अन्य साख पत्रों के भुगतान को इकट्ठा करना, प्रतिनिधि के समान कार्य करना ग्राहकों की ओर से विनिमय बिलों को स्वीकार करना आदि कार्य करते हैं ।

प्रश्न 4. केंद्रीय बैंक क्या है ? केंद्रीय बैंक के कार्यों का वर्णन करें ?

उत्तर- सभी देशों में विभिन्न बैंकों के शीर्ष स्थान पर एक केंद्रीय बैंक होता है जिस पर सरकार का स्वामित्व एवं नियंत्रण रहता है । केंद्रीय बैंक देश की संपूर्ण मौद्रिक एवं बैंकिंग व्यवस्था का नियंत्रण करता है तथा सभी बैंकों के बैंक का कार्य करता है । भारत का केंद्रीय बैंक रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया है जिसकी स्थापना 1935 ई० में हुई थी ।

केंद्रीय बैंक के कार्य -

1. **कागजी नोट जारी करने का कार्य** - सभी देशों में केंद्रीय बैंक को कागजी नोट जारी करने का एकाधिकार होता है । मुद्रा एवं साख की मात्रा पर नियंत्रण रखने के लिए केंद्रीय बैंक को नोट जारी करने का अधिकार देना आवश्यक है । निम्नलिखित कारणों से केंद्रीय बैंक को नोट जारी करने का अधिकार दिया जाता है -

- केंद्रीय बैंक द्वारा जारी किए गए नोटों में जनता का स्थाई विश्वास होता है ।
- केंद्रीय बैंक को नोट निर्गम का अधिकार देने से वह मुद्रा तथा साख की मात्रा का सफलतापूर्वक नियमन एवं नियंत्रण कर सकता है ।
- केंद्रीय बैंक द्वारा जारी किए नोटों में अधिक एकरूपता रहती है जिससे जाली नोटों का बनना कम संभव है ।
- नोट जारी करने का अधिकार प्राप्त होने से केंद्रीय बैंक की प्रतिष्ठा बढ़ जाती है जिससे संकट काल में भी वह अपने कार्यों को आसानी से निपटा सकता है ।
- केंद्रीय बैंक द्वारा नोट जारी करने के कार्य से अर्जित लाभ का आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है और सरकार इस लाभ का अधिकांश भाग स्वयं प्राप्त कर सकती है।

2. **बैंकों का बैंक का कार्य** - केंद्रीय बैंक अन्य सभी बैंकों के बैंक का कार्य करता है जैसे केंद्रीय बैंक, बैंकों की रकम को अपने पास जमा रखता है । केंद्रीय बैंक को अंतिम ऋण दाता भी कहते हैं क्योंकि जब बैंकों को कहीं से भी ऋण प्राप्त नहीं होते तो आपात काल में केंद्रीय बैंक ही ऋण देते हैं । केंद्रीय बैंक बैंकों को कुछ अन्य सुविधाएं भी प्रदान करते हैं जैसे मुद्रा को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने की सुविधा, समाशोधन गृह की सुविधा इत्यादि।

3. **सरकार का बैंकर, एजेंट एवं सलाहकार** - केंद्रीय बैंक सरकार का बैंकर, एजेंट एवं सलाहकार के रूप में कार्य करता है । सरकार के बैंकर के रूप में केंद्रीय बैंक सरकार के लिए उन सब कार्यों को करता है जो व्यवसायिक बैंक जनता के लिए करते हैं ।

- सरकार के एजेंट के रूप में केंद्रीय बैंक सरकार की ओर से जनता से ऋण लेता है और उसे सरकार के खाते में जमा कर देता है । केंद्रीय बैंक सरकार के सरकारी प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय करता है यह सरकार के लिए विदेशी मुद्रा का क्रय-विक्रय करता है ।
- केंद्रीय बैंक सरकार को मौद्रिक मामलों में सलाह भी देता है उदाहरण के लिए सरकार को बतलाता है कि देश की वर्तमान परिस्थिति में जनता से ऋण लेना अनुकूल है या प्रतिकूल है ।

4. **साख नियंत्रण का कार्य** - व्यवसायिक बैंक देश में साख का सृजन कर उद्योग एवं व्यवसाय की सहायता करते हैं । लेकिन कभी-कभी बैंक आवश्यकता से अधिक साख का प्रसार करने लगते हैं

jharkhandlive.com

या कभी आवश्यकता से कम साख का सृजन कर पाते हैं। इससे या तो मुद्रास्फीति या मुद्रा संकुचन की स्थिति उत्पन्न हो जाती हैं। अतः देश में साख की मात्रा पर नियंत्रण रखना आवश्यक है और साख नियंत्रण का यह कार्य केंद्रीय बैंक करता है। वह बैंक दर की नीति, खुले बाजार की नीति, बैंकों के नकद कोष के अनुपात में परिवर्तन, ऋणों की सीमा आवश्यकता में परिवर्तन, साख की राशनिंग, प्रत्यक्ष कार्यवाही, नैतिक दबाव तथा प्रचार करके साख का नियंत्रण करता है।

5. **विदेशी विनिमय कोष का संरक्षक** - केंद्रीय बैंक विदेशी विनिमय कोष का संरक्षक के रूप में कार्य करता है। यह भुगतान शेष की कठिनाइयों को दूर करने एवं विदेशी विनिमय दर को स्थिर बनाये रखने में सहायक होता है।

6. **विकासात्मक कार्य** - भारत में केंद्रीय बैंक ने बैंकिंग व्यवस्था का विकास करने, बचत और निवेश को प्रोत्साहित करने और औद्योगिक विकास के लिए विभिन्न संस्थाओं की स्थापना करने का कार्य किया है। पूंजी बाजार को विकसित करने तथा सरकारी आंदोलन को मजबूत बनाने का कार्य रिजर्व बैंक द्वारा ही किया गया है।

प्रश्न 5. भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति के मुख्य उपकरण कौन से हैं? वर्णन करें

उत्तर-

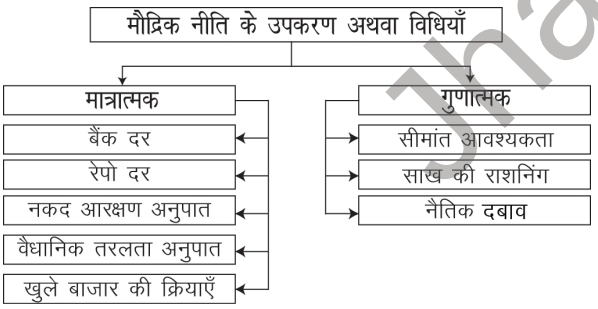

(I) **मात्रात्मक विधियां** - मौद्रिक नीति के वे उपकरण हैं जिनका संबंध अर्थव्यवस्था की समग्र मुद्रा पूर्ति से है। मात्रात्मक उपकरणों का वर्णन इस प्रकार से है -

a. **बैंक दर** - वह दर जिस पर किसी देश का केंद्रीय बैंक व्यापारिक बैंक को सरकारी एवं अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियों की जमानत पर ऋण प्रदान करता है। इसे कटौती की दर भी कहते हैं।

b. **रेपो दर**- वह दर, जिस पर देश का केंद्रीय बैंक अपने अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों को अल्पकालीन ऋण प्रदान करता है। मुद्रास्फीति के दबाव को कम करने के लिए केंद्रीय बैंक रेपो दर को बढ़ा देता है।

c. **नकद आरक्षित अनुपात** - व्यापारिक बैंकों को अपनी कुल जमा का एक निश्चित प्रतिशत केंद्रीय बैंक के पास जमा रखना अनिवार्य होता है। केंद्रीय बैंक नकद कोष अनुपात में परिवर्तन करके व्यापारिक बैंकों के नकद कोषों को प्रभावित कर सकते हैं।

d. **वैधानिक तरलता अनुपात** - प्रत्येक बैंक को अपनी परिसंपत्तियों के एक निश्चित प्रतिशत को अपने पास नकद रूप में या अन्य तरल संपत्तियों के रूप में कानूनी तौर पर रखना पड़ता है जिसे वैधानिक तरलता अनुपात कहते हैं।

e. **खुले बाजार की क्रियाएं**- खुले बाजार की क्रियाओं से अभिप्राय है केंद्रीय बैंक द्वारा स्वयं मुद्रा बाजार एवं पूंजी बाजार में सरकारी तथा अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों को खरीदना अथवा बेचना। जब केंद्रीय बैंक प्रतिभूतियों को बेचता है तो मुद्रा बाजार में मुद्रा की पूर्ति मात्रा कम होने लगती है इसके विपरीत जब बाजार से केंद्रीय बैंक प्रतिभूतियां खरीदता है तो मुद्रा बाजार में मुद्रा की मात्रा बढ़ जाती हैं।

(II) **गुणात्मक विधियां**- गुणात्मक साख नियंत्रण वह साख नियंत्रण है जो कुछ विशेष उद्देश्यों के लिए दी जाने वाली तथा विशेष बैंकों द्वारा दी गई साख की मात्रा को नियमित करता है जो निम्नलिखित है -

a. **सीमांत आवश्यकताओं में परिवर्तन**- प्रतिभूतियों के मूल्य और उधार दी जाने वाली राशि के अंतर को 'सीमा' कहते हैं। केंद्रीय बैंक विभिन्न वस्तुओं के लिए सीमांत आवश्यकता अनुपात निर्धारित करता है। जैसे यदि सीमांत आवश्यकता अनुपात 10% है। एक व्यक्ति अपने मकान जिसकी कीमत 10 लाख है को बैंक के पास जमानत रखकर ऋण लेना चाहता है तो उसे 9 लाख ऋण मिलेगा। सीमांत आवश्यकता को बदलकर साख पूर्ति को नियंत्रित किया जाता है।

b. **साख की राशनिंग** - केंद्रीय बैंक साख की राशनिंग चार प्रकार से करता है -

- केंद्रीय बैंक विभिन्न बैंकों को दिए जाने वाले ऋण में कमी कर सकता है।
- केंद्रीय बैंक विभिन्न बैंकों को दी जाने वाली साख का कोटा निश्चित कर सकता है।
- किसी विशेष बैंक को रुपया उधार देने से इंकार कर देता है।
- केंद्रीय बैंक उद्योगों और व्यवसायों को दी जाने वाली साख की सीमा निश्चित कर सकता है।

c. **नैतिक दबाव** - कभी-कभी केंद्रीय बैंक सदस्य बैंकों को मना कर या उन पर नैतिक दबाव डालकर उन्हें अपनी दिशा-निर्देशों के अनुसार काम करने के लिए सहमत कर लेता है। यदि देश में मुद्रास्फीति उत्पन्न हो रही हो तो केंद्रीय बैंक अन्य बैंकों से अनुरोध करता है कि वे उससे ऋण लेने ना आए, जनता को अधिक ऋण स्वीकृत ना करें तथा अनावश्यक व्यवसायों में राशि न लगाएं।

jharkhandlab.com

अध्याय 4 आय और रोजगार का निर्धारण

बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Question)

1. बाजार का नियम किसने प्रस्तुत किया ?
a. जे० बी० क्लार्क ने b. जे० बी० से० ने
c. जे० एम० कीन्स ने d. ए० सी० पीगू ने

2. जे० बी०. से० का बाजार नियम किस पर लागू होता है?
a. वस्तु विनियम पर
b. मुद्रा विनियम पर
c. उपरोक्त (A) और (B) दोनों पर
d. उपरोक्त में से किसी पर नहीं

3. प्रतिष्ठित सिद्धांत यह मानकर चलता है कि-
a. जो कुछ बचाया जाता है वह पूर्णरूपेण विनियोग कर दिया जाता है।
b. जो कुछ बचाया जाता है उससे कम विनियोग किया जाता है।
c. जो कुछ बचाया जाता है उससे अधिक विनियोग किया जाता है।
d. उपर्युक्त सभी स्थितियाँ सम्भव है।

4. प्रतिष्ठित सिद्धान्त के अनुसार निम्न में से कौन-सा कथन सही है?
a. अर्थव्यवस्था सदैव पूर्ण रोजगार की स्थिति में रहती है।
b. अति अथवा न्यून उत्पादन असंभव है।
c. (A) और (B) दोनों
d. इनमें से कोई नहीं

5. "पूर्ति स्वयं मांग का सृजन करती है" यह कथन किसका है?
a. जे० बी० से० b. रिकॉर्डो
c. पीगू d. कीन्स

6. Trained Economic politique नामक पुस्तक के लेखक कौन हैं।
a. पीगू b. जे. बी. से
c. कीन्स d. रिकॉर्डो

7. The General Theory of Employment, Interest and Money नामक पुस्तक किसने लिखी है ?
a. रिकार्डो ने b. जे० एम० कीन्स ने
c. जे० बी० से० ने d. मार्शल ने

8. कीन्स का रोजगार सिद्धांत निम्नलिखित में किस पर निर्भर है?
a. प्रभावपूर्ण मांग b. पूर्ति
c. उत्पादन क्षमता d. इनमें से कोई नहीं

9. एक खुली अर्थव्यवस्था में सामूहिक माँग के निम्न में से कौन से तत्व हैं?
a. उपभोग
b. निवेश
c. सरकारी व्यय एवं शुद्ध निर्यात
d. उपरोक्त सभी

10. किस तत्व को कीन्स ने स्थिर माना है।
a. कुल पूर्ती फलन b. कुल मांग फलन
c. प्रभावपूर्ण मांग d. इनमें से कोई नहीं

11. एक निश्चित समयावधि में अर्थव्यवस्था में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के कुल मूल्य को क्या कहते हैं?
a. समग्र माँग b. समग्र पूर्ति
c. समग्र निवेश d. समग्र ब्याज

12. केन्सियन विचारधारा के अन्तर्गत आय के संतुलन का निर्धारक निम्न में से कौन है ?
a. सामूहिक माँग b. सामूहिक पूर्ति
c. (A) और (B) दोनों d. इनमें से कोई नहीं

13. आय के संतुलन स्तर पर -
a. बचत और निवेश बराबर होते हैं।
b. बचत निवेश से कम होती है।
c. बचत निवेश से अधिक होती है।
d. बचत का निवेश से कोई संबंध नहीं होता है ।

14. आय एवं उत्पादन के संतुलन स्तर पर सामूहिक माँग में वृद्धि होने पर निम्न में से किसमें वृद्धि होती है?
a. आय b. रोजगार
c. उत्पादन d. उपरोक्त सभी

15. उपभोग फलन का विचार किसने प्रतिपादित किया है?
a. मार्शल ने b. कीन्स ने
c. सम्युल्सन ने d. हिक्स ने

16. उपभोग निर्भर करता है -
a. आय पर b. बचत पर
c. विनियोग पर
d. उपयुक्त में से किसी पर निर्भर नहीं

17. निवेश के निर्धारक तत्व कौन से हैं ?
a. पूंजी की सीमांत क्षमता b. ब्याज की दर
c. (A) और (B) दोनों d. इनमें से कोई नहीं

18. कीन्स के अनुसार विनियोग से अभिप्राय है-
a. वित्तीय विनियोग से b. वास्तविक विनियोग से
c. (A) और (B) दोनों d. इनमें से कोई नही

19 निम्नलिखित में से वास्तविक निवेश कौन है?
a. शेयर खरीदना
b. पुरानी फैक्ट्री खरीदना
c. भवनों का निर्माण
d. बैंक में जमा खाता खोलना

20. विनियोग गुणक का विचार दिया है -
a. मार्शल ने b. कीन्स ने
c. हिक्स ने d. एडम स्मिथ ने

21. गुणक और सीमांत उपभोग प्रवृत्ति का संबंध है ।
a. विपरीत b. सीधा
c. अनुपातिक d. कोई संबंध नहीं है

22. कौन-सा कथन सत्य है ?
a. MPC + MPS = 0 b. MPC + MPS = 1
c. MPC + MPS < 1 d. MPC + MPS > 0

Jharkhandlab.com

23. APC + APS = ?

a. 0 b. 1

c. अनंत d. इनमें से कोई नहीं

24. MPC+MPS= ?

a. 0 b. 1

c. 2 d. 5

25. गुणक को निम्नलिखित में से किस सूत्र द्वारा व्यक्त किया जा सकता है?

a. $K = \Delta S/\Delta I$ b. $K = \Delta Y/\Delta I$

c. $K = I - S$ d. इनमें से कोई नहीं

26. सीमान्त उपभोग प्रवृति का मूल्य क्या होगा यदि सीमान्त बचत प्रवृत्ति 0.2 है ?

a. 0.8 b. 0.7

c. 0.6 d. 0.4

27. सीमांत उपभोग प्रवृत्ति 1 हो तो गुणक क्या होगा?

a. 0 b. 1

c. 0 और 1 के बीच d. अनन्त

28. कीन्स की अर्थव्यवस्था में न्यून मांग की दशा को निम्नलिखित में से किस नाम से पुकारा जाता है?

a. पूर्ण रोजगार संतुलन b. अपूर्ण रोजगार संतुलन

c. (A) और (B) दोनों d. कोई नहीं

29. अतिरेक मांग उत्पन्न होने के कौन से कारण हैं?

a. सार्वजनिक व्यय में वृद्धि b. मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि

c. करों में कमी d. उपर्युक्त सभी

30. घरेलू अर्थव्यवस्था में शामिल हैं।

a. परिवार क्षेत्र b. उत्पादक क्षेत्र

c. शासकीय क्षेत्र d. उपर्युक्त सभी

31. कीन्स के अनुसार अति उत्पादन और बेरोजगारी का मुख्य कारण -

a. बचत में कमी b. विनियोग में कमी

c. कुल माँग में कमी d. कुल माँग में वृद्धि

32. बेरोजगारी की समस्या का तात्पर्य है?

a. ऐच्छिक बेरोजगारी की समस्या से

b. अनैच्छिक बेरोजगारी से

c. उपयुक्त (A) और (B) दोनों

d. उपरोक्त दोनों नहीं

33. कीन्स के अनुसार बेरोजगारी दूर की जा सकती है

a. समग्र माँग बढ़ाकर

b. समग्र माँग एवं समग्र पूर्ति बढाकर

c. समग्र पूर्ति बढ़ाकर

d. उपरोक्त में से कोई नहीं

34. मन्दी दूर करने के लिए कीन्स के विचार में -

a. सार्वजनिक व्यय को बढ़ाना चाहिए ।

b. सार्वजनिक व्यय को घटाना चाहिए ।

c. सार्वजनिक कर को बढ़ाने चाहिए ।

d. आयात को बढ़ाने चाहिए ।

उत्तर -

1- b	2- c	3- a	4- c	5- a	6- b	7- b
8- a	9- d	10- a	11- b	12- c	13- a	14- d
15- b	16- a	17- c	18- b	19- c	20- b	21- b
22- b	23- b	24- b	25- b	26- a	27- d	28- b
29- d	30- d	31- c	32- c	33- a	34- a	

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Very short Answer question)

प्रश्न 1. 1936 में प्रकाशित कीन्स के ग्रंथ का नाम क्या है?

उत्तर - 'द जेनेरल थ्योरी ऑफ इम्पलाइमेंट, इंटरेस्ट, एण्ड मनी' (The General Theory of Employment Interest and Money).

प्रश्न 2. बचत फलन की परिभाषा दें।

उत्तर - बचत (S) तथा आय (Y) के बीच के फलनात्मक सम्बन्ध को बचत फलन कहते हैं।

$S = f(Y)$

प्रश्न 3 . विनियोग क्या है?

उत्तर - एक अर्थव्यवस्था में एक वित्तीय वर्ष में पूंजीगत वस्तुओं के स्टॉक में वृद्धि को विनियोग कहते हैं। जैसे मशीन, औजार, भवन, आदि के भंडारों में वृद्धि।

प्रश्न 4. उपभोग फलन किन चरों के बीच संबंध को व्यक्त करता है ?

उत्तर - उपभोग फलन, आय (Y) एवं उपभोग (C) के बीच के संबंध को व्यक्त करता है।

$C = f(Y)$

प्रश्न 5. सीमांत बचत की प्रवृत्ति को परिभाषित कीजिए।

उत्तर - सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPS), बचत में परिवर्तन (ΔS) तथा आय में परिवर्तन (ΔY) के अनुपात को व्यक्त करता है।

$MPS = \Delta S/\Delta Y$

प्रश्न 6. औसत उपभोग प्रवृत्ति से क्या समझते हैं?

उत्तर - औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC), कुल उपभोग व्यय (C) तथा कुल आय (Y) के अनुपात को बताती है।

$APC = \frac{C}{Y}$

प्रश्न 7. सीमांत उपभोग प्रवृत्ति का मूल्य क्या होगा? यदि सीमांत बचत प्रवृत्ति का मूल्य शून्य होगा।

उत्तर - एक के बराबर, क्योंकि

$MPC + MPS = 1$ होता है।

$MPC + 0 = 1$

$MPC = 1-0$

$MPC = 1$

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Short Question Answer)

प्रश्न 1. सीमांत उपभोग प्रवृत्ति क्या है? इसे कैसे मापा जाता है?

उत्तर - सीमांत उपभोग की प्रवृत्ति - सीमांत उपभोग की प्रवृत्ति (MPC) उपभोग में परिवर्तन (ΔC) तथा आय में परिवर्तन (ΔY) के अनुपात को बताता है। यह बताता है कि आय में परिवर्तन के साथ-साथ उपभोग में किस प्रकार का परिवर्तन होगा।

अर्थात,

$MPC = \frac{\Delta C}{\Delta Y}$

इसकी माप आय में परिवर्तन से उपभोग व्यय में होने वाले परिवर्तन के बीच के अनुपात से ज्ञात किया जाता है। अल्पकाल में यह स्थिर होता है। इसे हम निम्न उदाहरण से स्पष्ट कर सकते हैं।

आय (Y)	उपभोग (C)	आय में परिवर्तन (ΔY)	उपभोग में परिवर्तन (ΔC)	$MPC = \frac{\Delta C}{\Delta Y}$
0	100	-	-	-
100	150	100	50	0.5

Jharkhandlab.com

200	200	100	50	0.5
300	250	100	50	0.5
400	300	100	50	0.5
500	350	100	50	0.5

प्रश्न 2. रेखा चित्र की सहायता से सीमांत बचत की प्रवृत्ति की व्याख्या कीजिए।

उत्तर - सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPS) बचत में परिवर्तन (ΔS) तथा आय में परिवर्तन (ΔY) के अनुपात को व्यक्त करता है।

अर्थात, MPS = ΔS/ΔY

इस प्रकार, यह बताता है की यदि आय में परिवर्तन होगा तो बचत में क्या परिवर्तन होगा। यह बचत में परिवर्तन तथा आय में परिवर्तन का अनुपात होता है।

इसे निम्न तालिका एवं रेखाचित्र से स्पष्ट किया जा सकता है ।

तालिका

आय (Y)	**उपभोग** (C)	**बचत** (S)	**आय में परिवर्तन** (ΔY)	**बचत में परिवर्तन** (ΔS)	MPS = $\frac{\Delta S}{\Delta Y}$
0	100	-100	-	-	-
100	150	-50	100	-50	0.5
200	200	0	100	50	0.5
300	250	50	100	50	0.5
400	300	100	100	50	0.5
500	350	150	100	50	0.5

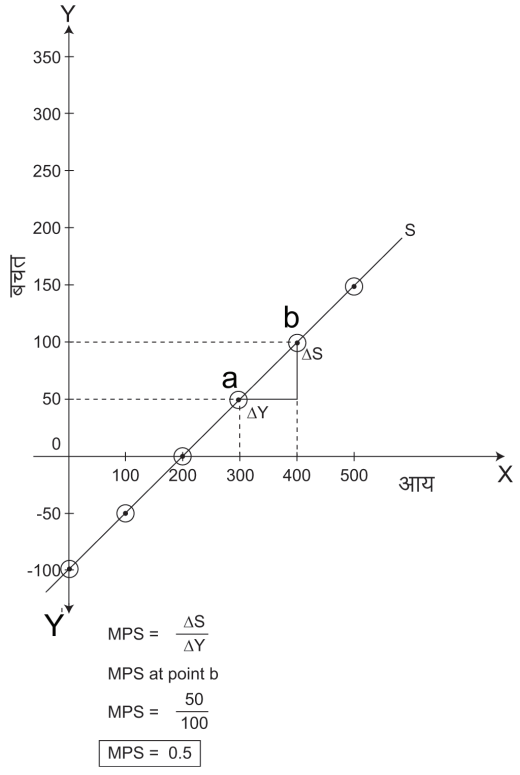

रेखा चित्र से स्पष्ट है आय में जैसे-जैसे वृद्धि होती है बचत बढ़ती जाती है। लेकिन प्रारंभ में बचत ऋणात्मक होती है इसका अर्थ है कि आय की तुलना में उपभोग व्यय अधिक होता है। जब आय और उपभोग व्यय बराबर होते हैं (200) तब बचत शुन्य होता है। इसके बाद बचत धनात्मक हो जाती है। कीन्स के अनुसारअल्पकाल में बचत की प्रवृत्ति स्थिर होती है।

प्रश्न 3. औसत बचत प्रवृत्ति एवं सीमांत बचत प्रवृत्ति में क्या अंतर है?

औसत बचत की प्रवृत्ति	**सीमांत बचत की प्रवृत्ति**
1. औसत बचत की प्रवृत्ति कुल बचत एवं कुल आय का अनुपात होता है	सीमांत बचत की प्रवृत्ति बचत में परिवर्तन तथा आय में परिवर्तन का अनुपात होता है
2. APS = S/Y	MPS = ΔS/ΔY
3. अल्पकाल में भी इसमें परिवर्तन होता है।	अल्पकाल में यह स्थिर होता है।

प्रश्न 4. सामूहिक पूर्ति का क्या अर्थ है? इसके मुख्य तत्वों को स्पष्ट करें।

उत्तर - सामूहिक पूर्ति या समग्र पूर्ति - यह देश में उत्पादित समस्त वस्तुओं और सेवाओं की पूर्ति को बताता है। अर्थात यह देश के उत्पादन स्तर पर निर्भर करता है।

सामूहिक पूर्ति को तीन रूपों में व्यक्त किया जा सकता है -

i. अर्थव्यवस्था में 1 वर्ष में उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं के मौद्रिक मूल्य के रूप में अर्थात राष्ट्रीय आय।

AS = Y (राष्ट्रीय आय)

ii. उपभोग एवं बचत के योग के रूप में अर्थात कुल आय।

AS = C+ S

iii. फर्मों द्वारा अपने उत्पादों को बेचने से प्राप्त होने वाली न्यूनतम आय के रूप में।

अर्थात,

सामूहिक पूर्ति या समग्र पूर्ति = सकल घरेलू उत्पाद =कुल साधन आय = लगान + ब्याज + मजदूरी + लाभ

समग्र पूर्ति के दो तत्व हैं -

a. उपभोग (C) - अर्थव्यवस्था में आय का वह भाग जिसे वस्तुओं तथा सेवाओं पर व्यय किया जाता है, उसे उपभोग कहते हैं।

b. बचत (S) - आय का वह भाग जिसे उपभोग पर व्यय नहीं किया जाता, उसे बचत कहते हैं।

इस प्रकार AS = C+ S

प्रश्न 5. प्रत्याशित निवेश और यथार्थ निवेश में क्या अंतर है?

उत्तर - **प्रत्याशित अथवा इच्छित निवेश** - प्रत्याशित निवेश, वह निवेश है जो निवेशकर्ता किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आय तथा रोजगार के विभिन्न स्तरों पर निवेश करने की इच्छा रखते हैं।

यथार्थ अथवा वास्तविक निवेश - यथार्थ निवेश, वह निवेश है, जो निवेशकर्ता किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आय तथा रोजगार के विभिन्न स्तरों पर वास्तव में निवेश करते हैं।

उदाहरण- जैसे मान लीजिए कि एक उत्पादक एक वर्ष के अंत तक अपने माल-सूची स्टॉक में 500 ₹ के मूल्य की वस्तु जमा की योजना बनाता है। अतः उस वर्ष उसका प्रत्याशित निवेश 500 ₹ है। किंतु बाजार में उसकी वस्तुओं की माँग में अप्रत्याशित वृद्धि होने के कारण उसकी विक्रय में उस परिमाण से अधिक वृद्धि होती है, जितना कि उसने बेचने की योजना बनाई थी। इस अतिरिक्त माँग की पूर्ति के लिए उसे अपने स्टाक से 120 ₹ के मूल्य की वस्तु बेचनी पड़ती है। अतः वर्ष के अंत में उसकी माल-सूची स्टाक में केवल 500 ₹ – 120 ₹ = 380 ₹ की वृद्धि होती है। इस प्रकार, उसको प्रत्याशित निवेश 500 ₹ है, जबकि उसका यथार्थ निवेश केवल 380 ₹ है।

Jharkhandlab.com

प्रश्न 6. ऐच्छिक एवं अनैच्छिक बेरोजगारी में अंतर स्पष्ट करें।

उत्तर - ऐच्छिक बेरोजगारी - यह बेरोजगारी की वह स्थिति होती है जिसमें बाजार में प्रचलित मजदूरी दर पर काम उपलब्ध होता है किंतु काम करने योग्य व्यक्ति काम करने के लिए तैयार नहीं होते हैं।

अनैच्छिक बेरोजगारी - बेरोजगारी की ऐसी स्थिति होती है जिसमें लोग काम करने के योग्य होते हैं और प्रचलित मजदूरी दर पर काम करने के लिए तैयार होते हैं किंतु उन्हें काम नहीं मिलता है।

प्रश्न 7. यदि गुणांक का मूल्य 5 है तो सीमांत उपभोग प्रवृत्ति का मूल्य बताइए।

उत्तर - दिया हुआ है,

गुणक K= 5 , सीमांत उपभोग प्रवृत्ति MPC = ?

हम जानते हैं,

K = 1 / 1 - MPC

5 = 1 / 1 - MPC

5 - 5 MPC = 1

5 - 1 = 5 MPC

4 = 5 MPC

4/5 = MPC

MPC=0.8

प्रश्न 8 . विनियोग गुणक क्या है? इसकी गणना कैसे की जाती है?

उत्तर - कीन्स द्वारा प्रतिपादित आय, उत्पादन एवं रोजगार सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण अंग है गुणक का सिद्धांत। कीन्स के अनुसार जब अर्थव्यवस्था में स्वतंत्र निवेश किया जाता है तब आय में जो वृद्धि होती है वह स्वतंत्र निवेश से कई गुणा अधिक होती है। निवेश की तुलना में आय में जितनी गुणा की वृद्धि होती है उसे ही निवेश गुणक कहते हैं।

अर्थात,

K= ΔY/ΔI

या, ΔY= K.ΔI

इस प्रकार गुणक आय में परिवर्तन से निवेश में परिवर्तन का अनुपात है ,या यह वह अंक है जिसे निवेश में परिवर्तन से गुणा करके आय में हुई वृद्धि को प्राप्त किया जा सकता है।

गुणक की माप MPC पर निर्भर करती है।

K = 1 / 1 - MPC

इस प्रकार स्पष्ट है कि गुणक की माप MPC पर निर्भर करती है MPC का मान जितना बड़ा होगा गुणांक का मान भी उतना ही बड़ा होगा। गुणक का मान 1 से अनंत के बीच होता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Long Question Answer)

प्रश्न 1. सामूहिक मांग की धारणा को उचित चित्र द्वारा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - एक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं के संपूर्ण मांग को सामूहिक मांग कहा जाता है। यह अर्थव्यवस्था के कुल व्यय के रूप में भी व्यक्त किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, सामूहिक मांग कुल व्यय को बताती है जिसे एक देश के निवासी, आय के दिए हुए स्तर पर वस्तुओं तथा सेवाओं को खरीदने के लिए खर्च करने को तैयार है।

सामूहिक या समग्र मांग = उपभोग व्यय + निवेश व्यय

समग्र मांग के तत्व निम्न हैं -

उपभोग व्यय - अर्थव्यवस्था में आय का वह भाग जिसे वस्तुओं तथा सेवाओं पर व्यय किया जाता है, उसे उपभोग व्यय या उपभोग कहते हैं। आय का वह भाग जिसे उपभोग पर व्यय नहीं किया जाता, उसे बचत कहते हैं। उपभोग एवं बचत का योग आय के बराबर होता है।

निवेश व्यय - निवेश व्यय का अर्थ उन व्ययों से है जिसके द्वारा पूंजीगत पदार्थों जैसे मशीन, औजार, भवन आदि के भंडारों में वृद्धि की जाती है।

समग्र मांग को हम निम्न तालिका एवं रेखा चित्र से स्पष्ट कर सकते हैं

तालिका -

राष्ट्रीय आय(करोड़ में) (Y)	उपभोग (C)	बचत (S)	निवेश (I)	AD= C+I
0	100	-100	100	200
100	150	-50	100	250
200	200	0	100	300
300	250	50	100	350
400	300	100	100	400
500	350	150	100	450

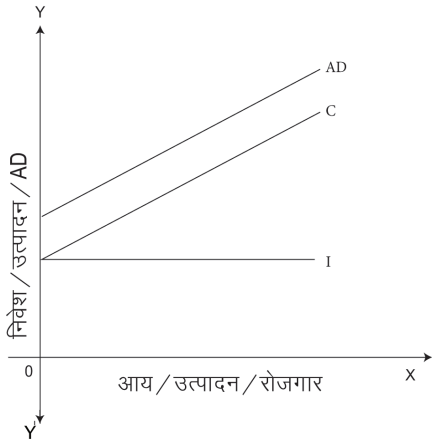

ऊपर के रेखा चित्र से स्पष्ट है कि समग्र मांग, उपभोग और निवेश के स्तर पर निर्भर करती है। निवेश से आय, उत्पादन एवं रोजगार बढ़ता है जो उपभोग को बढ़ा देता है। समग्र मांग का आय, उत्पादन एवं रोजगार के साथ सीधा संबंध पाया जाता है अर्थात यह आय में वृद्धि से बढ़ती जाती है किसी समय में निवेश शून्य हो सकता है किंतु उपभोग कभी भी शून्य नहीं होगा इसलिए AD सदैव धनात्मक Y अक्ष के किसी बिंदु से प्रारंभ होगा। रेखाचित्र में AD रैखिक है किंतु यह अरैखिक भी हो सकती है। इसकी आकार एवं ढाल इसकी मान्यताओं एवं आंकड़ों के प्रवृत्ति पर निर्भर करती है।

प्रश्न 2. गुणक क्या है? यह MPC से किस प्रकार संबंधित है? उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

उत्तर - कीन्स द्वारा प्रतिपादित आय, उत्पादन एवं रोजगार सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण अंग है गुणक का सिद्धांत। कीन्स के अनुसार जब अर्थव्यवस्था में स्वतंत्र निवेश किया जाता है तब आय में जो वृद्धि होती है वह स्वतंत्र निवेश से कई गुणा अधिक होती है। निवेश की तुलना में आय में जितनी गुणा की वृद्धि होती है उसे ही निवेश गुणक कहते हैं।

अर्थात ,

K= ΔY/ΔI

या, ΔY= K.ΔI

Sharkhandlab.com

इस प्रकार गुणक आय में परिवर्तन से निवेश में परिवर्तन का अनुपात है ,या यह वह अंक है जिसे निवेश में परिवर्तन से गुणा करके आय में हुई वृद्धि को प्राप्त किया जा सकता है।

गुणक और MPC के बीच संबंध-

गुणक की माप MPC पर निर्भर करती है।

$K = 1 / 1 - MPC$

इसे हम निम्न रूप से स्पष्ट कर सकते हैं

चुकीं $K = \Delta Y/\Delta I$ ..... (i)

हम जानते हैं $Y = C + I$

इसलिए $\Delta Y = \Delta C + \Delta I$

या, $\Delta Y - \Delta C = \Delta I$ .....(ii)

समीकरण (i) में समीकरण (ii) का मान रखने पर

$$K = \frac{\Delta Y}{\Delta Y - \Delta C}$$

समीकरण के दाहिनी भाग को ΔY से भाग देने पर

$$K = \frac{\frac{\Delta Y}{\Delta Y}}{\frac{\Delta Y}{\Delta Y} - \frac{\Delta C}{\Delta Y}}$$

$K = 1/ 1-MPC$ (क्योंकि $\Delta C/\Delta Y = MPC$)

या $K = 1/MPS$. (क्योंकि MPC+ MPS = 1)

इस प्रकार स्पष्ट है की गुणक का मान MPC पर निर्भर करता है MPC का मान जितना अधिक होगा गुणक का मान भी उतना ही अधिक होगा। MPC का मान 0 से 1 के बीच होता है अतः गुणांक का मान भी 1 से अनंत के बीच होगा। MPC का गुणक से सीधा संबंध है जबकि MPS से इसका संबंध उल्टा है। इसे हम निम्न उदाहरण से स्पष्ट कर सकते हैं।

MPC	MPS	K = 1/1-MPC	K
0	1	1/1-0 =1/1	1
1/2	1/2	$1/1-\frac{1}{2} = 1/\frac{1}{2}$	2
2/3	1/3	$1/1-\frac{2}{3} = 1/\frac{1}{3}$	3
4/5	1/5	$1/1-\frac{4}{5} = 1/\frac{1}{4}$	4
1	0	1/1-0 = 1/0	∞

प्रश्न 3. "किसी रेखा में पैरामेट्रिक शिफ्ट" से आप क्या समझते हैं? रेखा में किस प्रकार का शिफ्ट होता है जब

a. ढाल घटती है b. इसके अंत खंड में वृद्धि होती है।

उत्तर - एक सरल रेखा समीकरण को $Y = mx + c$ के रूप में दर्शाया जाता है x और Y दो चर हैं। $m > 0$ को सरल रेखा की ढाल (प्रवणता) कहा जाता है और $c > 0$ उर्ध्वाधर अक्ष पर अन्तःखण्ड है। जब x में 1 इकाई से वृद्धि होती तो Y के मूल्य में m गुना इकाइयों से वृद्धि हो जाती है। इसे रेखा पर परिवर्तों का संचलन कहते हैं। परन्तु जब m या c में परिवर्तन होता है तो इसे रेखा का पैरामिट्रिक शिफ्ट कहते हैं, क्योंकि m और c को रेखा का पैरामीटर कहा जाता है। अन्य शब्दों में रेखा की प्रवणता अथवा अन्तःखण्ड में परिवर्तन के कारण जो परिवर्तन होते हैं उसे रेखा का पैरामिट्रिक शिफ्ट कहते हैं। इसे उपभोग फलन द्वारा समझा जा सकता है।

उपभोग फलन $C = a + bY$

यदि Y में परिवर्तन से C में परिवर्तन हों तो इसे रेखा पर परिवर्तनों का संचलन (एक ही रेखा पर गति) कहेंगे। परन्तु यदि a या b है में परिवर्तन हों तो इसे रेखा का पेरामिट्रिक शिफ्ट कहा जायेगा। इसे दो भागों में बाँटा जा सकता है।

a. ढाल में परिवर्तन - ढाल में परिवर्तन होने पर रेखा इस प्रकार खिसकता है कि ढाल (प्रवणता) बढ़ने पर रेखा अधिक ढाल वाला हो जाता है और ढाल (प्रवणता) के घटने पर रेखा कम ढाल वाला हो जाता है।

b. अन्तखण्ड में परिवर्तन- अन्तखण्ड बढ़ने पर रेखा उतनी ही मात्रा से समान्तर रूप से (क्योंकि प्रवणता समान है) ऊपर की ओर खिसक जाता है और इसके विपरीत अन्तःखण्ड घटने पर उतनी ही मात्रा से समान्तर रूप से नीचे की ओर खिसक जाता है।

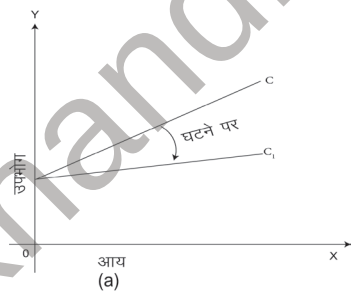

(a)

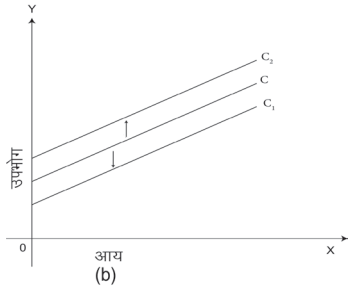

(b)

a. जब रेखा की ढाल घटती है तो रेखा पहले से कम ढाल वाली हो जाती है। उदाहरण के लिए यदि $C = a + bY$ में $C = 100 + 0.8Y$ था b घटकर 0.6 हो गया तो नया $C1 = 100 + 0.6Y$ हो जायेगा। यह वक्र पिछले C वक्र से कम ढाल वाला होगा। क्योंकि पहले आय 100 बढ़ने पर उपभोग 80 बढ़ रहा था, परन्तु अब आय 100 बढ़ने पर उपभोग 60 बढ़ेगा। रेखाचित्र के a भाग से स्पष्ट है।

b. जब रेखा के अन्तःखण्ड आय में वृद्धि होती है तो रेखा समान्तर रूप से ऊपर की ओर खिसक जाती है, क्योंकि दो समान्तर रेखाओं की प्रवणता समान होती है। जैसे $C = 100 + 0.8Y$ की तुलना में a का मन कम होने से $C1 = 90 + 0.8Y$ या a का मन बढ़ने पर $C2 = 150 + 0.8Y$ जबकि ढाल सामान है। इसे रेखाचित्र के b भाग में इसे दर्शाया गया है।

प्रश्न 4. प्रभावी मांग क्या है? जब अंतिम वस्तुओं की कीमत और ब्याज की दर दी हुई हो तब आप स्वायत्य व्यय गुणांक कैसे प्राप्त करेंगे?

उत्तर: प्रभावी माँग का अर्थ समग्र माँग के उस बिंदु से जहाँ यह समग्र पूर्ति के बराबर होता। प्रभावी माँग अर्थव्यवस्था की माँग का वह स्तर है जो समस्त पूर्ति से पूर्णतया संतुष्ट होता है।अन्य शब्दों में, समग्र माँग का वह स्तर जो पूर्ण संतुलन उपलब्ध करता है, प्रभावी माँग कहलाता है। वैकल्पिक रूप में संतुलन के बिंदु पर समग्र माँग को प्रभावी माँग कहते हैं, क्योंकि राष्ट्रीय आय के निर्धारण में यह प्रभावी होती है। कैसे? केन्स के अनुसार आय का साम्य स्तर उस बिंदु पर निर्धारित होता है जहाँ समग्र माँग, समग्र पूर्ति के बराबर होती है। जब अंतिम उत्पादन व आय, वस्तुओं की कीमत और ब्याज की दर दी गई हो, तो स्वायत्त व्यय गुणक की गणना निम्नलिखित प्रकार से की जाएगी।

Jharkhandeb.com

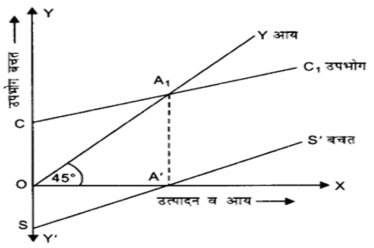

प्रश्न 5. जब स्वायत्य निवेश और उपभोग व्यय (A) 50 करोड़ हो और सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPC) 0.2 तथा आय का स्तर ₹4000 हो तो प्रत्याशित समग्र मांग ज्ञात करें? यह भी बताएं कि अर्थव्यवस्था संतुलन में है या नहीं?

उत्तर - दिया हुआ है,

आय का स्तर Y = 4000 करोड़
स्वायत्तय निवेश और उपभोग व्यय A = 50 करोड़
सीमांत बचत प्रवृत्ति MPS = 0.2
सीमांत उपभोग प्रवृत्ति MPC = 1- 0.2 = 0.8 (MPC + MPS = 1)
हम जानते हैं, AD = C + I
या, AD = (a + bY) + I चूँकि, (C = a + bY)
AD = a + bY + I
AD = a + I + bY
यदि, A = a + I
AD = A + bY = 50+0.8 (4000)
AD = 50+3200
AD = 3250
प्रत्याशित समस्त माँग = ₹ 3,250 करोड़

चूँकि वर्तमान आय का स्तर ₹ 4,000 करोड़ है जो प्रत्याशित समस्त माँग में ₹ 750 करोड़ अधिक है तो वह स्थिति अधिपूर्ति की होगी। अतः अर्थव्यवस्था संतुलन में नहीं है।

प्रश्न 6. अर्थव्यवस्था में विनियोग ₹1000 से बढ़कर ₹1200 करोड़ हो जाता है जिससे कुल आय में ₹ 800 करोड़ की वृद्धि होती है? सीमांत उपभोग प्रवृत्ति की गणना करें।

उत्तर - दिया हुआ है,

प्रारंभिक विनियोग - 1000 करोड़
परिवर्तित विनियोग - 1200 करोड़
विनियोग में परिवर्तन - ΔI = 1200-1000=200 करोड़
कुल आय में वृद्धि ΔY = 800 करोड़
चुंकि, K = ΔY/ΔI
= 800/200
K = 4
पुनः, K = 1/1-MPC
4= 1/1-MPC
4 - 4MPC = 1
4 -1= 4MPC
MPC = $\frac{3}{4}$
MPC = 0.75 **उत्तर**।

प्रश्न 7. यदि किसी अर्थव्यवस्था में उपभोग फलन C = 50 + 0. 5 Y है तो स्वायत्तता व्यय में ₹50 करोड़ की वृद्धि करने पर संतुलन निर्गत पर पड़ने वाले प्रभाव की व्याख्या करें।

उत्तर दिया है, C = 50 + 0.5 Y

स्वायत्त व्यय ΔI = 50 करोड़
संतुलन निर्गत ΔY = ?
चूँकि C = a + bY
जहां , b = MPC
अतः b = MPC = 0.5
K = 1/ 1 - MPC
इसलिए K = 1 / 1 - 0.5
K = 1 / 0.5
K = 2
पुनः K = ΔY/ΔI
2 = ΔY/ 50
ΔY = 100 करोड़ **उत्तर**.

प्रश्न 8. अर्थव्यवस्था में सीमांत उपभोग प्रवृत्ति 0. 75 है अगर निवेश व्यय में 200 करोड़ की वृद्धि की जाती है तो आय में वृद्धि ज्ञात करें।

उत्तर - दिया हुआ है, MPC = 0.75

ΔI = 200
ΔY= ? ΔC = ?
K = 1/ 1- MPC
K = 1/ 1- 0.75
K = 1/ 0.25
K = 4
ΔY = K ΔI
ΔY = 4 x 200
ΔY = 800
ΔC = MPC x ΔY
ΔC = 0.75 x 800
ΔC = 600 करोड़
अतः ΔY = 800 तथा
ΔC = 600 **उत्तर।**

प्रश्न 9. यदि ΔY= 1600 ΔI = 400 सीमांत उपभोग प्रवृत्ति का मान निकाले ?

उत्तर - दिया हुआ है,

ΔI= 400
ΔY = 1600
चूँकि K = ΔY/ΔI
K = 1600/ 400
K= 4
पुनः K = 1/ 1- MPC
4 = 1/ 1- MPC
4 - 4 MPC = 1
4- 1 = 4MPC
$\frac{3}{4}$ = MPC

MPC = 0.75 **उत्तर** ।

Jharkhandlab.com

अध्याय 5 सरकारी बजट एवं अर्थव्यवस्था

बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Question)

1. बजट एक ऐसा दस्तावेज होता है जिसमें एक वित्तीय वर्ष की अवधि में सरकार के -------- ब्यौरा होता है?
a. आय का b. व्यय का
c. आय और व्यय का d. बचत का

2. भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद का सम्बन्ध बजट से है?
a. अनुच्छेद- 108 b. अनुच्छेद- 356
c. अनुच्छेद - 248 d. अनुच्छेद - 112

3. भारत में वित्तीय वर्ष की अवधि कब से कब तक मानी जाती है?
a. 1 अगस्त से 31 मार्च तक b. 31 मार्च से 30 जून तक
c. 1 अप्रैल से 31 मार्च तक d. 1 दिसंबर से 31 मई तक

4. जिन प्राप्तियों से सरकार की कोई देयता उत्पन्न नहीं होती है और न ही सरकार की परिसंपत्तियों में कोई कमी होती है उसे क्या कहा जाता है?
a. बजट प्राप्ति b. राजस्व प्राप्ति
c. पूँजीगत प्राप्ति d. बजट व्यय

5. जब किसी कर का कराघात तथा करापात एक ही व्यक्ति पर पड़ता है तो इस कर को क्या कहा जाता है?
a. अप्रत्यक्ष कर b. बिक्री कर
c. प्रत्यक्ष कर d. उत्पादन कर

6. प्रत्यक्ष कर के अंतर्गत निम्न में से किसे शामिल किया जाता है?
a. उपहार कर
b. आय कर
c. बिक्री कर
d. उपहार कर एवं आय कर दोनों को

7. जब आय के बढ़ने पर कर की दर भी बढ़ जाए तो इस प्रकार के कर को कौन-सा कर कहेंगे ?
a. प्रत्यक्ष कर b. अप्रत्यक्ष कर
c. प्रगतिशील कर d. आनुपातिक कर

8. आय के सभी स्तरों पर जब एक समान दर से कर लगे तो इस कर को कौन सा कर कहते हैं ?
a. आनुपातिक कर b. प्रतिगामी कर
c. अप्रत्यक्ष कर d. प्रगतिशील कर

9. आय में वृद्धि के साथ यदि कर की दर घट जाए तो इसे कौन-सा कर कहेंगे ?
a. प्रगतिशील कर b. अप्रत्यक्ष कर
c. आनुपातिक कर d. प्रतिगामी कर

10. पूर्ण विलासिता सम्बन्धी वस्तुओं पर कर की दर होती है-
a. कम होती है b. शून्य होती है
c. अधिक होती है d. एक समान होती है

11. एक वित्तीय वर्ष में किया जानेवाला वह अनुमानित व्यय जिसके फलस्वरूप न तो सरकार की परिसम्पत्ति का निर्माण होता है और न ही देयता में कमी होती है, उसे क्या कहा जाता है ?
a. राजस्व प्राप्ति b. राजस्व व्यय
c. पूँजीगत व्यय d. पूँजीगत प्राप्ति

12. सरकार की वे सभी प्राप्तियाँ जो दायित्वों का सृजन या वित्तीय परिसम्पत्तियों को कम करती है, उसे क्या कहते हैं?
a. राजस्व प्राप्ति b. राजस्व व्यय
c. पूँजीगत व्यय d. पूँजीगत प्राप्ति

13. सरकार के वे व्यय जिसके परिणामस्वरूप भौतिक या वित्तीय परिसम्पतियों का सृजन या वित्तीय दायित्वों में कमी होती है, उसे क्या कहते हैं?
a. राजस्व प्राप्ति b. राजस्व व्यय
c. पूँजीगत व्यय d. राजकोषीय व्यय

14. जब सरकार राजस्व प्राप्ति से अधिक व्यय करती है तो इस स्थिति को क्या कहते हैं?
a. राजस्व घाटा b. राजकोषीय घाटा
c. प्राथमिक घाटा d. बजटीय घाटा

15. निम्न में से राजस्व घाटा की सही व्याख्या कौन करता है?
a. राजस्व घाटा = राजस्व प्राप्तियाँ - राजस्व व्यय
b. राजस्व घाटा = राजस्व व्यय - राजस्व प्राप्तियाँ
c. राजस्व घाटा = राजस्व प्राप्तियां + राजस्व व्यय
d. राजस्व घाटा = बजटीय प्राप्ति - बजटीय व्यय

16. प्राथमिक घाटा को दर्शाया जाता है?
a. राजकोषीय घाटा + ब्याज का भुगतान
b. राजकोषीय घाटा - ब्याज का भुगतान
c. राजस्व व्यय - राजस्व आय
d. राजस्व व्यय + राजस्व आय

17. संतुलित बजट किसे कहा जाता है?
a. जब कुल प्राप्तियाँ कुल व्यय से अधिक होती है।
b. जब कुल व्यय और कुल प्राप्तियां बराबर हों।
c. जब कुल प्राप्ति कुल व्यय से कम हो।
d. जब कुल व्यय शून्य हो।

18. निम्नलिखित में से कौन राजकोषीय नीति का एक उद्देश्य है?
a. अर्थव्यवस्था में स्थिरता लाना
b. अर्थव्यवस्था में मंदी का सृजन करना
c. अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी को बढ़ावा देना
d. अर्थव्यवस्था में संवृद्धि दर को हतोत्साहित करना

19. यदि उपभोग की सीमांत प्रवृति 0.5 है तो कर गुणक का मान क्या होगा?
a. -1 b. 1
c. 0.5 d. 2

20. यदि सरकार संतुलित बजट का सृजन करती है तो सरकार के द्वारा अर्थव्यवस्था में 100 करोड़ का व्यय करने से आय मे कितनी वृद्धि होगी?
a. 100 करोड़ b. 100 करोड़ से अधिक
c. 100 करोड़ से कम d. ज्ञात नहीं किया जा सकता

jharkhandiah.com

उत्तर - 1- c 2- d 3- c 4- b 5- c 6- d 7- c
8- a 9- d 10- c 11- b 12- d 13- c 14- a
15- b 16- b 17- b 18- a 19- a 20- a

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Very short Answer question)

प्रश्न 1. सार्वजनिक वस्तुओं से आप क्या समझते हैं?

उत्तर : सामूहिक आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए जिन वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन किया जाता है, उन्हें सार्वजनिक वस्तुएँ कहा जाता है।

प्रश्न 2. बजट से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : बजट, प्रत्येक वित्तीय वर्ष के लिए सरकार की अनुमानित प्राप्तियों और व्ययों का एक लेखा-जोखा होता है।

प्रश्न 3. प्रगतिशील कर क्या है?

उत्तर : जैसे-जैसे व्यक्ति की आय बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे कर की दर ऊंची होती जाती है एसा कर प्रगतिशील कर कहलाती है।

प्रश्न 4. कर राजस्व से आप क्या समझते हैं?

उत्तर : कर राजस्व में कर की प्राप्तियाँ और केंद्र सरकार द्वारा लगाए गए अन्य शुल्क शामिल होते हैं।

प्रश्न 5. निगम कर क्या है?

उत्तर : फर्म एवं कंपनियों की आय पर लगाया जाने वाला कर, निगम कर कहलाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Short Question Answer)

प्रश्न 1. प्रत्यक्ष कर क्या है? उदाहरण सहित बतलाइए।

उत्तर : प्रत्यक्ष कर वह कर है जो जिस व्यक्ति पर लगाया जाता है, वह व्यक्ति ही उसका भार उठाता है। इस कर को किसी अन्य व्यक्ति पर टाला नहीं जा सकता है।

इस कर में कराघात एवं करापात एक ही व्यक्ति पर पड़ता है। ये अनिवार्य भुगतान होते हैं और इनसे बचा नहीं जा सकता है। किसी व्यक्ति पर प्रत्यक्ष कर आरोपित किए जाने पर उसे अनिवार्य रूप से उसका भुगतान करना होता है।

प्रत्यक्ष कर प्रगतिशील होते हैं और आय में वृद्धि के साथ इनमें वृद्धि होती है। जैसे-जैसे व्यक्ति की आय बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे इसे कर की दर ऊंची होती जाती है।

प्रत्यक्ष कर के कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नांकित हैं -

- आय कर
- निगम कर
- सम्पति कर
- उपहार कर

प्रश्न 2. अप्रत्यक्ष कर क्या है? उदाहरण सहित बतलाइए।

उत्तर : अप्रत्यक्ष कर वह कर है जिसे किसी अन्य व्यक्ति पर टाला जा सकता है। अप्रत्यक्ष कर में जिस व्यक्ति को यह कर चुकाना होता है, वह इस कर के बोझ को किसी दूसरे व्यक्ति पर टाल सकता है।

इस कर में कराघात एवं करापात अलग-अलग व्यक्तियों पर पड़ता है। अप्रत्यक्ष कर प्रगतिशील नहीं होते हैं अर्थात आय में वृद्धि के साथ इनमें वृद्धि नहीं होती है।

अप्रत्यक्ष कर सभी आय वर्ग के लोगों को समान रूप से वहन करने होते हैं।

अप्रत्यक्ष कर से बचा जा सकता है, अतः ये अनिवार्य भुगतान नहीं होते हैं। यदि कोई व्यक्ति संबंधित वस्तुओं को न खरीदे जिन पर यह कर लगाया गया है।

अप्रत्यक्ष कर के कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नांकित हैं -

- उत्पाद शुल्क
- सीमा शुल्क
- वस्तु एवं सेवा कर

प्रश्न 3. प्रत्यक्ष कर एवं अप्रत्यक्ष कर में अंतर बतलाइए।

उत्तर : प्रत्यक्ष कर एवं अप्रत्यक्ष कर के बीच अंतर निम्नांकित प्रकार से हैं-

a. प्रत्यक्ष कर वह कर है जो जिस व्यक्ति पर लगाया जाता है, वह व्यक्ति ही उसका भार उठाता है। इस कर को किसी अन्य व्यक्ति पर टाला नहीं जा सकता है।

जबकि अप्रत्यक्ष कर में जिस व्यक्ति को यह कर चुकाना होता है, वह इस कर के बोझ को किसी दूसरे व्यक्ति पर टाल सकता है।

b. प्रत्यक्ष कर अनिवार्य भुगतान होते हैं और इनसे बचा नहीं जा सकता है। किसी व्यक्ति पर ये आरोपित किए जाने पर उन्हें अनिवार्य रूप से उसका भुगतान करना होता है।

जबकि अप्रत्यक्ष कर अनिवार्य भुगतान नहीं होते हैं। यदि कोई व्यक्ति संबंधित वस्तुओं को न खरीदे जिन पर यह कर लगाया गया है तो अप्रत्यक्ष कर से बचा जा सकता है।

c. प्रत्यक्ष कर प्रगतिशील होते हैं और आय में वृद्धि के साथ इनमें वृद्धि होती है।

जबकि अप्रत्यक्ष कर प्रगतिशील नहीं होते हैं अर्थात आय में वृद्धि के साथ इनमें वृद्धि नहीं होती है।

d. प्रत्यक्ष कर के कुछ प्रमुख उदाहरण - आय कर, निगम कर, सम्पति कर तथा उपहार कर आदि हैं।

जबकि अप्रत्यक्ष कर कुछ प्रमुख उदाहरण - उत्पाद शुल्क,

सीमा शुल्क तथा वस्तु एवं सेवा कर आदि हैं।

प्रश्न 4. राजस्व प्राप्तियाँ क्या हैं?

उत्तर : सरकार की वे मौदिक प्राप्तियाँ जो न तो देयताओं का निर्माण करती है और न ही परिसंपत्तियों को कम करती है, राजस्व प्राप्तियाँ कहलाती हैं। राजस्व प्राप्तियाँ सरकार की बजट प्राप्तियों का एक मुख्य भाग है।

राजस्व प्राप्तियों से सरकार को कोई देयता उत्पन्न नहीं होती है। उदा० - कर अर्थात् सरकार कर के बदले कुछ देने के लिए बाध्य नहीं होती है।

राजस्व प्राप्तियों से सरकार की परिसंपत्तियों में कोई कमी नहीं होती है। उदा० - कर प्राप्तियाँ तथा गैर-कर प्राप्तियाँ।

इस प्रकार राजस्व प्राप्तियाँ सरकार की वे मौदिक प्राप्तियाँ जो न तो देयताओं का निर्माण करती है और न ही परिसंपत्तियों को कम करती है।

प्रश्न 5. पूंजीगत प्राप्तियाँ क्या हैं?

उत्तर : सरकार की वे मौद्रिक प्राप्तियाँ जो देयताओं का निर्माण करती है और जो परिसंपत्तियों को कम करती है, पूँजीगत प्राप्तियाँ कहलाती है। पूँजीगत प्राप्तियाँ सरकार की बजट प्राप्तियों का एक मुख्य भाग है।

पूँजीगत प्राप्तियों से सरकार की देयता उत्पन्न होती है। उदा० - सरकार द्वारा लिये जाने वाले ऋण देयता हैं। इन्हें वापस किया जाता है।

इसके अतिरिक्त पूँजीगत प्राप्तियों से सरकार की परिसंपत्ति कम होती है। उदा० - सरकार द्वारा किसी सार्वजनिक उद्योग के शेयर बेचने से सरकार की परिसंपत्ति कम हो जाती है।

इस प्रकार पूंजीगत प्राप्तियाँ सरकार की वे मौद्रिक प्राप्तियाँ जो देयताओं का निर्माण करती है और जो परिसंपत्तियों को कम करती है।

Jharkhandlab.com

प्रश्न 6. राजस्व प्राप्तियाँ एवं पूंजीगत प्राप्तियाँ में भेद किजिये?

उत्तर : राजस्व प्राप्तियाँ और पूँजीगत प्राप्तियाँ, बजट प्राप्तियों के दो मुख्य भाग हैं।

- **राजस्व प्राप्तियाँ**-

  सरकार की वे मौदिक प्राप्तियाँ जो न तो देयताओं का निर्माण करती है और न ही परिसंपत्तियों को कम करती है, राजस्व प्राप्तियाँ कहलाती हैं।

- **पूँजीगत प्राप्तियाँ**-

  सरकार की वे मौद्रिक प्राप्तियाँ जो देयताओं का निर्माण करती है और जो परिसंपत्तियों को कम करती है, पूँजीगत प्राप्तियाँ कहलाती है।

इन दोनों में अंतर को निम्नांकित प्रकार से दर्शाया जा सकता है-

1. राजस्व प्राप्तियों से सरकार को कोई देयता उत्पन्न नहीं होती है। उदा० - कर अर्थात् सरकार कर के बदले कुछ देने के लिए बाध्य नहीं होती है।

   जबकि पूँजीगत प्राप्तियों से सरकार की देयता उत्पन्न होती है। उदा० - सरकार द्वारा लिये जाने वाले ऋण देयता हैं। इन्हें वापस किया जाता है।

2. राजस्व प्राप्तियों से सरकार की परिसंपत्तियों में कोई कमी नहीं होती है। उदा० - कर प्राप्तियाँ तथा गैर-कर प्राप्तियाँ।

   जबकि पूँजीगत प्राप्तियों से सरकार की परिसंपत्ति कम होती है। उदा०- सरकार द्वारा किसी सार्वजनिक उद्योग के शेयर बेचने से सरकार की परिसंपत्ति कम हो जाती है।

प्रश्न 7. राजस्व व्यय और पूँजीगत व्यय में अंतर बतलाइए।

उत्तर : राजस्व व्यय और पूँजीगत व्यय, बजट व्यय के दो मुख्य भाग हैं।

राजस्व व्यय-

एक वित्तीय वर्ष में सरकार का वह अनुमानित व्यय जिससे न तो सरकार की परिसंपत्तियों का निर्माण होता है और न ही देयताओं में कमी आती है राजस्व व्यय कहलाता है।

पूँजीगत व्यय-

एक वित्तीय वर्ष में सरकार का वह अनुमानित व्यय जो सरकार की परिसंपत्तियों में वृद्धि करता है या देयताओं को कम करता है, पूँजीगत व्यय कहलाता है।

इन दोनों में अंतर को निम्नांकित प्रकार से दर्शाया जा सकता है -

1. राजस्व व्यय सरकार के लिए परिसंपत्तियों का निर्माण नहीं करते हैं। उदा- सरकार द्वारा वृद्धावस्था पेंशन व छात्रवृत्ति आदि पर किया जाने वाला व्यय के फलस्वरूप सरकार की परिसंपत्ति का निर्माण नहीं होता है।

   जबकि पूँजीगत व्यय सरकार के लिए परिसंपत्तियों का निर्माण करते हैं। उदा- सरकार द्वारा किसी घरेलू या बहु-राष्ट्रीय कंपनी के शेयर खरीदने पर सरकार की परिसंपत्ति में वृद्धि होती है।

2. राजस्व व्यय सरकार की देयता को कम नहीं करते हैं। जबकि पूँजीगत व्यय सरकार की देयता को कम करते हैं। उदा- सरकार द्वारा ऋण की वापसी से उसकी देयता कम होती है।

प्रश्न 8. निजी वस्तु और सार्वजनिक वस्तु में अंतर बतलाइए।

उत्तर : सामान्यतः निजी वस्तु का तात्पर्य ऐसी वस्तुओं से होता है जिसका मूल्य का भुगतान कर उत्पादन या उपभोग निजी तौर पर किया जाता है।

सार्वजनिक वस्तु का तात्पर्य ऐसी वस्तुओं से होता है जिसका उपादन या उपयोग सामूहिक तौर पर सामान्यतः निःशुल्क किया जाता है।

अंतर -

1. निजी वस्तुएं वे हैं जो निजी फर्मों द्वारा उपभोक्ताओं की जरूरतों और इच्छाओं को पूरा करने के लिए उत्पादित और बेचे जाते हैं। उदा- कपड़े, कार, खाद्य पदार्थ आदि।

   जबकि सार्वजनिक वस्तुएँ वे हैं जो सरकार या प्रकृति द्वारा सबों को निःशुल्क उपयोग के लिए प्रदान किये जाते हैं। उदा- सड़क, पार्क, राष्ट्रीय प्रतिरक्षा, लोक प्रशासन, नदी, पर्वत आदि।

2. निजी वस्तुओं की प्राप्ति बाजार तंत्र के द्वारा होती है जबकि सार्वजनिक वस्तुओं की प्राप्ति सरकार के द्वारा होती है।

3. निजी वस्तुओं की गुणवत्ता भिन्न होती है जबकि सार्वजनिक वस्तुओं की गुणवत्ता स्थिर या एकसमान होती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Long Question Answer)

प्रश्न 1. राजस्व घाटा, राजकोषीय घाटा और प्राथमिक घाटा के बारे में बतलाइए ।

उत्तर : जब सरकार राजस्व प्राप्ति से अधिक व्यय करती है, तो इस स्थिति को बजटीय घाटा कहते हैं। सरकार के वार्षिक बजट में निम्नांकित तीन प्रकार के घाटे सम्मिलित किये जाते हैं।

a. राजस्व घाटा

b. राजकोषीय घाटा तथा

c. प्राथमिक घाटा

a. राजस्व घाटा- राजस्व व्यय और राजस्व प्राप्तियों के अंतर को राजस्व घाटा कहते हैं। अर्थात्

राजस्व घाटा = राजस्व व्यय - राजस्व प्राप्तियाँ

इस प्रकार राजस्व घाटा, सरकार के राजस्व व्यय की राजस्व प्राप्तियों पर अधिकता को दर्शाता है। अर्थात्

राजस्व घाटा की स्थिति में,

राजस्व व्यय > राजस्व प्राप्तियाँ

यह इस बात को स्पष्ट करता है कि राजस्व प्राप्तियाँ राजस्व व्यय से कम है, जिसकी पूर्ति सरकार को उधार लेकर अथवा परिसंपत्तियों को बेचकर पूरी करनी पड़ेगी। अतः अर्थव्यवस्था के विकास के लिए सरकार को राजस्व घाटे को नियंत्रण में रखना चाहिए।

b. राजकोषीय घाटा - राजकोषीय घाटा सरकार के कुल व्यय और ऋण- ग्रहण को छोड़कर कुल प्राप्तियों का अंतर है। अर्थात्

राजकोषीय घाटा = कुल व्यय- (राजस्व प्राप्तियाँ + गैर-ऋण से सृजित पूँजीगत प्राप्तियाँ)

इस प्रकार, राजकोषीय घाटा कुल व्यय की उधार छोड़कर कुल प्राप्तियों पर अधिकता है। दूसरे शब्दों में, राजकोषीय घाटे की स्थिति में, राजस्व प्राप्तियों तथा अन्य गैर-ऋण प्रकार की पूँजीगत प्राप्तियों की तुलना में कुल व्यय का अधिक होना है। राजकोषीय घाटा बजट में घाटे का एक प्रमुख मापदंड है।

c. प्राथमिक घाटा - प्राथमिक घाटा, राजकोषीय घाटे में ब्याज अदायगी को घटाने पर प्राप्त होता है। अर्थात्

प्राथमिक घाटा = राजकोषीय घाटा - ब्याज का भुगतान

वर्तमान व्यय के राजस्व से अधिक होने के कारण होने वाले ऋण-ग्रहण के आकलन के लिए प्राथमिक घाटा का आकलन किया जाता है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि सरकार को कितने ऋण की आवश्यकता है। इस प्रकार, प्राथमिक घाटे के माप का लक्ष्य वर्तमान राजकोषीय असंतुलन पर प्रकाश डालना है।

Jharkhandlab.com

प्रश्न 2. सरकारी बजट से क्या तात्पर्य है? उसके मुख्य घटकों को लिखें।

उत्तर : बजट में सरकार की एक वित्तीय वर्ष की प्राप्तियों एवं व्यय का विवरण होता है। यह एक विस्तृत आर्थिक विवरण है।

दूसरे शब्दों में, बजट एक ऐसा दस्तावेज होता है जिसमें सरकार के वित्तीय वर्ष, जो 1 अप्रैल से 31 मार्च तक होता है, से संबंधी सरकार की अनुमानित प्राप्तियों और व्ययों का विवरण होता है।

इस वार्षिक वित्तीय विवरण को सरकार के द्वारा संसद के समक्ष प्रस्तुत करना एक संवैधानिक अनिवार्यता होती है, जिससे मुख्य बजट का दस्तावेज बनता है। संविधान के अनुच्छेद 112 में इसका उल्लेख है।

सरकारी बजट के मुख्य घटक-

सरकारी बजट के मुख्यतः दो घटक होते हैं -

i) राजस्व बजट तथा ii) पूँजीगत बजट

सरकारी बजट के मुख्य घटकों को एक तालिका द्वारा निम्नांकित प्रकार से दर्शाया जा सकता है-

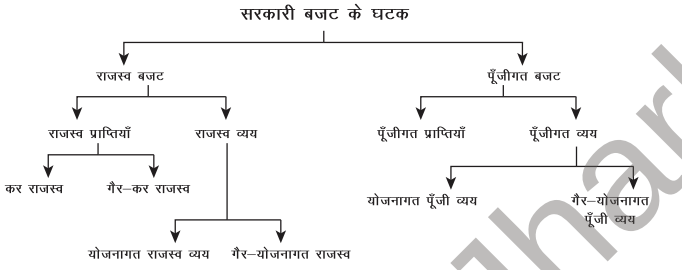

उपर्युक्त तालिका सरकारी बजट की संरचना को भी दर्शाती है।

राजस्व बजट में सरकार की चालू प्राप्तियों और उन प्राप्तियों से किये जाने वाले व्यय के विवरण को दर्शाया जाता है। इसे राजस्व लेखा भी कहा जाता है। इसके अंतर्गत सरकार की राजस्व प्राप्तियाँ एवं राजस्व व्यय शामिल होती हैं।

राजस्व प्राप्तियों में कर राजस्व तथा गैर-कर राजस्व सम्मिलित होते हैं जबकि राजस्व व्यय में योजनागत राजस्व व्यय तथा गैर-योजनागत राजस्व व्यय सम्मिलित होती हैं। पूँजीगत बजट के अंतर्गत सरकार की पूँजीगत प्राप्तियाँ तथा पूँजीगत व्यय शामिल होती हैं। इसे पूंजीगत लेखा भी कहा जाता है। यह सरकार की वित्तीय आवश्यकता तथा उसकी वित्तीय प्रबंधन को भी दर्शाता है। पूँजीगत प्राप्तियों की मुख्य मदें सार्वजनिक कर्ज है, जिसे सरकार द्वारा जनता से लिया जाता है। इसे बाजार ऋण ग्रहण कहते हैं। इसके अतिरिक्त पूँजीगत व्यय में योजनागत पूँजीगत व्यय तथा गैर-योजनागत पूँजीगत व्यय सम्मिलित होते हैं।

प्रश्न 3. सार्वजनिक वस्तु क्या है? सरकार इसकी पूर्ति क्यों करती है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : सामूहिक आवश्यकताओं को संतुष्ट करने वाली वस्तुएँ सामान्यतः सार्वजनिक वस्तुएं कहलाती है। सार्वजनिक वस्तुओं का निजी वस्तुओं से अलग सामूहिक उपयोग होता है ।

सार्वजनिक वास्तुओं की दो मुख्य विशेषतायें -

i) ये अप्रतिस्पर्धी होते है तथा

(ii) ये अवर्ज्य होती है।

सार्वजनिक वस्तुओं के कुछ उदाहरण सड़क, सार्वजनिक पार्क, सार्वजनिक परिवहन व लोक प्रशासन आदि है।

सार्वजनिक वस्तुओं की पूर्ति सरकार के द्वारा की जाती है। क्योंकि ये निजी वस्तुओं से अलग होती हैं और इनकी पूर्ति बाजार-तंत्र द्वारा नहीं हो सकती है। सरकार द्वारा इसकी पूर्ति के निम्नांकित मुख्य कारण हो सकते हैं-

1. सार्वजनिक वस्तुएं निजी वस्तुओं से अलग होते हैं और इनकी पूर्ति बाजार- तंत्र द्वारा नहीं हो सकती है। अतः इसकी पूर्ति सरकार करती है।
2. सार्वजनिक वस्तुओं की प्राप्ति वैयक्तिक उपभोक्ताओं और उत्पादकों के बीच संव्यवहार से नहीं हो सकता है। अतः इसकी पूर्ति सरकार करती है।

Jharkhandlab.com

अध्याय 6 खुली अर्थव्यवस्था

बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Question)

1. भुगतान शेष के वित्तीय लेन-देन से संबंधित खाता कहलाता है -

a. पूँजी खाता b. चालु खाता
c. ऋण खाता d. भुगतान खाता

2. विदेशों से पूँजी निवेश से आय है -

a. देनदारी
b. लेनदारी
c. लेनदारी और देनदारी दोनों
d. इनमें से कोई नहीं।

3. व्यापार शेष = ...?

a. दृश्य वस्तुओं के निर्यात - दृश्य वस्तुओं के आयात
b. अदृश्य वस्तुओं के निर्यात - अदृश्य वस्तुओं के आयात
c. दृश्य मदों के आयात- अदृश्य मदों के निर्यात
d. इनमें से कोई नहीं।

4. भुगतान शेष के घटक हैं ?

a. चालू खाते पर भुगतान संतुलन
b. पुंजी खाते पर भुगतान संतुलन
c. (A) तथा (B) दोनों
d. इनमें से कोई नहीं।

5. भुगतान शेष का चालू खाता --------- वास्तविक लेन-देन को दर्शाता है।

a. अल्पकालीन b. दीर्घकालीन
c. अति दीर्घकालीन d. इनमें से कोई नहीं।

6. खुली तथा मुक्त अर्थव्यवस्था में विनिमय दर कौन निश्चित करता है?

a. सरकार b. विश्व बैंक
c. माँग तथा पूर्ति d. इनमें से कोई नहीं।

7. स्थिर विनिमय दर कौन निर्धारित करता है?

a. विश्व बैंक b. मौद्रिक अधिकारी
c. वित्त मंत्री d. बाजार शक्तियाँ

8. विदेशी विनिमय दर में परिवर्तन क्यों आता है?

a. क्रय शक्ति में परिवर्तन के कारण
b. विदेशी विनिमय की मांग में परिवर्तन से
c. विदेशी विनिमय की पूर्ति में परिवर्तन से
d. इनमें से किसी से भी।

उत्तर- 1- a 2- b 3- a 4- c 5- a 6- c 7- b 8- d

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Very short Answer question)

1. खुली अर्थव्यवस्था क्या है ?

उत्तर- खुली अर्थव्यवस्था एक ऐसी अर्थव्यवस्था है, जिसमें अन्य राष्ट्रों के साथ वस्तुओं और सेवाओं तथा वित्तीय परिसंत्तियों का व्यापार किया जाता है।

2. बंद अर्थव्यवस्था क्या है?

उत्तर- बंद अर्थव्यवस्था एक ऐसी अर्थव्यवस्था है, जिसमें अन्य राष्ट्रों के साथ वस्तुओं और सेवाओं तथा वित्तीय परिसंपत्तियों का व्यापार नहीं किया जाता है।

3. विनिमय दर क्या है ?

उत्तर- यह विनिमय की वह दर है जिस पर किसी देश की मुद्रा की एक इकाई दूसरे देश की मुद्रा में बदली जा सकती है।

4. स्वर्णमान क्या है?

उत्तर- स्वर्णमान में सभी देशों की मुद्रा सोने के रूप में परिभाषित की जाती है। लगभग 1870 से 1914 ,प्रथम विश्व युद्ध के आरंभ होने तक स्वर्णमान प्रचलित था ।

5. विश्व बैंक की स्थापना कब हुई?

उत्तर- 1944 ई. में ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में ।

6. अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की स्थापना कब हुई ?

उत्तर- 1944 ई. में ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में ।

7. 'विशेष आहरण अधिकार' (SDRs) कब शुरू की गई?

उत्तर- 1969 ई. में ।

8. भुगतान शेष लेखा में दृश्य मदों का शेष क्या दर्शाता है ?

उत्तर- व्यापार शेष ।

9. भुगतान शेष के घटक को लिखें।

उत्तर- 1 चालु खाता तथा 2. पूँजी खाता ।

10. दृश्य व्यापार क्या है?

उत्तर- वस्तुओं के निर्यात और आयात को दृश्य व्यापार कहते हैं।

11. पूंजी खाता क्या है?

उत्तर- यह वित्तीय लेन-देन से संबंधित होता है इसमें सभी प्रकार के अल्पकालीन और दीर्घकालीन पूंजी अंतरण शामिल किए जाते हैं।

12. चालू खाता क्या है?

उत्तर- भुगतान शेष का चालू खाता अल्पकालीन प्राप्ति तथा भुगतान को दर्शाता है। यह संतुलित या असंतुलित हो सकता है। इसमें दृश्य एवं अदृश्य दोनों प्रकार के मदें शामिल की जाती है।

13. दोहरा घाटा क्या है?

उत्तर- जब अर्थव्यवस्था में व्यापार घाटा और बजटीय घाटा दोनों हों, तब उसे दोहरा घाटा कहा जाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Short Question Answer)

प्रश्न 1. भुगतान शेष से क्या अभिप्राय है?

अथवा

भुगतान संतुलन से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर- एक देश का भुगतान शेष देश के निवासियों तथा शेष विश्व के बीच एक वर्ष में होने वाले सभी प्रकार के आर्थिक लेन-देन का एक विधिवत लेखा (रिकॉर्ड) होता है।

Jharkhandlab.com

प्रश्न 2. व्यापार शेष तथा चालु खाता शेष में अंतर बतायें।

उत्तर- एक देश के निर्यात तथा आयात के मूल्य में अन्तर को व्यापार शेष कहते हैं।व्यापार शेष में केवल दृश्य मदों का निर्यात तथा आयात शामिल किया जाता है। परन्तु, भुगतान शेष का चालु खाता अल्पकालीन वास्तविक सौदों को दर्शाता है। व्यापार शेष में अदृश्य मदें तथा शुद्ध हस्तांतरण जोड़ कर चालु खाता शेष प्राप्त किया जाता है। समीकरण के रूप में-

चालू खाते का शेष = व्यापार शेष + अदृश्य व्यापार शेष +शुद्ध हस्तान्तरण ।

प्रश्न 3. मुद्रा का अवमूल्यन और मूल्यह्रास में अन्तर स्पष्ट करें।

उत्तर- अवमूल्यन- जब एक देश द्वारा अपने देश की मुद्रा का मूल्य दूसरे देश की मुद्रा के मूल्य से कम कर दिया जाता है तो उसे अवमूल्यन कहते हैं । ऐसा प्रायः देश के मौद्रिक प्राधिकार के द्वारा किया जाता है। एक देश द्वारा अवमूल्यन निर्यात को बढ़ाने तथा आयात को कम करने के उद्देश्य से किया जाता है।

मूल्यहास- जब किसी देश की मुद्रा का सापेक्ष मूल्य घट जाता है, तो उसे मूल्यह्रास कहा जाता है। यह बाजार की शक्ति पर निर्भर करता है। इसमें सरकार की भूमिका नहीं होती हैं।

प्रश्न 4. विदेशी मुद्रा बाजार की परिभाषा दें ।

अथवा

विदेशी विनिमय बाजार को परिभाषित कीजिए ।

उत्तर- जिस बाजार में विदेशी मुद्राओं का लेन-देन होता है, उसे विदेशी विनिमय बाजार कहते हैं। इसमें विदेशी विनिमय दर विदेशी विनिमय की मांग तथा पूर्ति द्वारा निर्धारित होती है।

प्रश्न 5. एक देश का व्यापार शेष ₹100 करोड़ हैं। इसके वस्तुओं के निर्यात का मूल्य ₹ 175 करोड़ है। वस्तुओं के आयात का मूल्य ज्ञात करें।

उत्तर- दिया है,

व्यापार शेष = ₹100 करोड़

निर्यात मुल्य = 175 करोड़

आयात का मूल्य = ?

व्यापार शेष = निर्यात का मूल्य - आयात का मूल्य

100 = 175 - आयात का मूल्य

आयात का मूल्य = 175-100

आयात का मूल्य = 75 करोड़ रुपये **-उत्तर**

प्रश्न 6. निर्यात का मूल्य ज्ञात करें, जब व्यापार शेष ₹ (-) 400. करोड. है और वस्तुओं के आयात का मूल्य ₹ 700 करोड़ है।

उत्तर- दिया है,

व्यापार शेष= (-) 400 करोड़ रुपये

आयात का मूल्य = 700 करोड़ रुपये

निर्यात का मूल्य = ?

व्यापार शेष = निर्यात का मूल्य- आयात का मूल्य

-400 = निर्यात का मूल्य - 700

निर्यात का मूल्य = 700 -400 =300

अतः

निर्यात का मूल्य = ₹300 करोड़ । **-उत्तर**

प्रश्न 7. पूँजी खाते की मुख्य मदों को लिखें।

उत्तर- 1. निजी ऋण
2. बैंक पूँजी का प्रवाह
3. सोने का प्रवाह
4. सरकारी पूँजी
5. मौद्रिक सोने का सुरक्षित भण्डार आदि।

प्रश्न 8. चालू खाते पर भुगतान शेष की मुख्य तीन मदों को लिखें।

उत्तर- 1 वस्तुएँ (दृश्य) 2- सेवाएँ (अदृश्य) 3. हस्तान्तरण (उपहार, दान)।

प्रश्न 9. व्यापार शेष क्या है?

उत्तर- वस्तुओं के निर्यात मूल्य तथा आयात मूल्य का अन्तर व्यापार शेष कहलाता है।
सूत्र के रूप में,
व्यापार शेष =दृश्य वस्तुओं का निर्यात मूल्य- दृश्य वस्तुओं का आयात मूल्य ।

प्रश्न 10. व्यापार शेष कब आधिक्य को दर्शाता है?

उत्तर- व्यापार शेष आधिक्य उस स्थिति में पाया जाता है जब निर्यात वस्तुओं का मूल्य ,आयात वस्तुओं के मूल्य से अधिक होता है। इसे अनुकूल व्यापार शेष भी कहा जाता है।

प्रश्न 11. असंतुलित भुगतान शेष को ठीक करने के उपाय बताइए।

उत्तर- असंतुलित भुगतान शेष को ठीक करने के उपाय निम्न है-

1. स्वर्ण का निर्यात करके।
2. विदेशों से ऋण या अनुदान लेकर।
3. देश में संचित कोष से मुद्रा निकालकर।
4. विदेशों में स्थित संपत्ति का बिक्री करके।

प्रश्न 12. विदेशी मुद्रा की मांग के दो स्रोत तथा पूर्ति के दो स्रोत लिखिए।

उत्तर- मांग के स्रोत -

1. विदेशों से वस्तुओं तथा सेवाओं का आयात ।
2. दूसरे देशों में उपहार, दान आदि के रूप में हस्तांतरण भुगतान करना।

पूर्ति के स्रोत-

1. विदेशों को वस्तुओं तथा सेवाओं का निर्यात तथा
2. विदेशों से दान, उपहार आदि के रूप में हस्तांतरण प्राप्तियां ।

प्रश्न 13. विदेशी मुद्रा की मांग क्यों की जाती है?

उत्तर- निम्न कारणों से विदेशी मुद्रा की मांग की जाती है:-

1. अन्य देशों से वस्तुएं और सेवाएं खरीदने के लिए ।
2. किसी देश में वित्तीय परिसंपत्तियों खरीदने के लिए ।
3. विदेशों को उपहार भेजने के लिए ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Long Question Answer)

प्रश्न 1. विदेशी विनिमय दर का क्या अर्थ है? विदेशी विनिमय की माँग इसकी कीमत कम होने से क्यों बढ़ती है ?

उत्तर- विदेशी विनिमय दर, एक मुद्रा के बदले में दूसरे देश की दी जाने वाली मुद्रा की इकाईयाँ होती हैं।जब विदेशी विनिमय दर कम होती है तो घरेलू मुद्रा का मूल्य बढ़ जाता है तथा उसकी क्रय शक्ति बढ़ जाती है जिससे घरेलू मुद्रा की एक इकाई से पहले की तुलना मे अधिक वस्तुएँ खरीदी जा सकेंगी। इससे विदेशी मुद्रा की माँग बढ़ जाएगी। जिस प्रकार यदि रुपए की तुलना में अमेरिकी डॉलर की

Jharkhandlab.com

कीमत कम हो जाती है तो कम रुपयों से डॉलर खरीदा जा सकेगा। इससे भारत के लोग अमेरिका से अधिक वस्तुएँ आयात करेंगे तथा डॉलर की माँग पहले से अधिक होगी। इसलिए विदेशी मुद्रा की माँग वक्र ऋणात्मक दाल वाली होती है ।जैसा कि चित्र में स्पष्ट है-

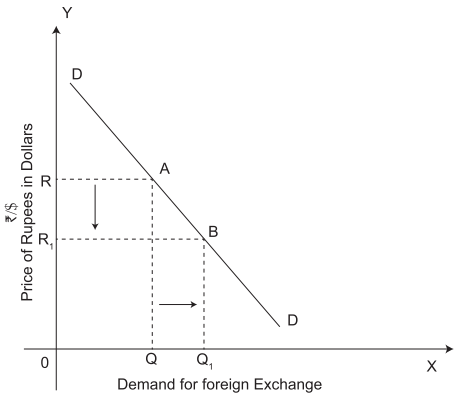

प्रश्न 2. स्थिर तथा लोचशील विनिमय दरों की तुलना करें।

उत्तर- स्थिर विनिमय दर सरकार अथवा मौद्रिक अधिकारी निश्चित करते हैं जो विदेशी व्यापार को बढ़ावा देती है। इनसे सट्टेबाजी क्रियाएँ समाप्त होती हैं, तथा आर्थिक विकास को प्रोत्साहन मिलता है। किन्तु यह वास्तविक विनिमय दर नहीं होती।

परन्तु, लोचशील विनिमय दर विदेशी विनिमय की माँग तथा पूर्ति से निर्धारित होती है। यह स्वतंत्र आर्थिक नीति पर आधारित होती है। इस पर एक देश की प्रचलित दशाओं का प्रभाव नहीं पड़ता । परन्तु, इन दरों में अनिश्चितता की सम्भावना बनी रहती है तथा इसके निर्धारण में सट्टेबाजी क्रियाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

प्रश्न 3. लोचशील विनिमय दर से विनिमय दर कैसे निर्धारित होती है? चित्र के सहायता से स्पष्ट करें।

उत्तर- सन्तुलित विनिमय दर वहाँ पर निर्धारित होती हैं जहाँ पर विदेशी विनिमय की माँग इसकी पूर्ति के बराबर हो जाती है। उसे चित्र द्वारा प्रकट किया गया है,

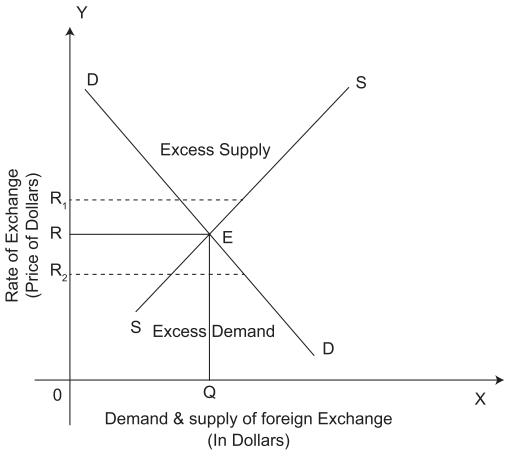

चित्र में OR विनिमय दर सन्तुलित दर निर्धारित हुई है जहाँ पर डालरों की माँग तथा पूर्ति वक्र एक- दूसरे को काट रही है। इस दर पर डॉलरों की माँग तथा पूर्ति OQ है। यह विनिमय दर सामान्य प्रकृति की है तथा दीर्घकाल के लिए प्रचलित रहती है। अल्पकल में यह आवश्यक नहीं कि विदेशी विनिमय की माँग तथा पूर्ति, प्रचलित दरों पर बराबर रहें। इस अवस्था में विदेशी विनिमय की अतिरिक्त माँग अथवा अतिरिक्त पूर्ति हो सकती है। अतिरिक्त पूर्ति की अवस्था में, दीर्घकाल में प्रतियोगिता के कारण, विनिमय दर तब तक कम होती जाएगी जब तक कि विदेशी विनिमय की माँग तथा पूर्ति आपस में बराबर नहीं हो जाते? इसी प्रकार अतिरिक्त माँग की दशा में, दीर्घकालीन प्रतियोगिता के कारण, विनिमय दर तब तक बढ़ेगी जब तक कि विदेशी विनिमय की माँग तथा पूर्ति बराबर नहीं होते ।

प्रश्न 4. व्यापार शेष और भुगतान शेष में अंतर स्पष्ट करें ।

उत्तर- व्यापार शेष

1. व्यापार शेष एक देश के निर्यात और आयात का अन्तर होता है।
2. यह अनुकूल तथा प्रतिकूल हो सकता है।
3. इसके प्रतिकूल होने पर इसमें समायोजन की कोई आवश्यकता नहीं होती ।

भुगतान शेष

1. भुगतान शेष में आयात एवं निर्यात के दृश्य और अदृश्य तथा अन्य सभी लेन-देन का लेखा-जोखा होता है।
2. यह हमेशा सन्तुलित रूप में प्रदर्शित किया जाता है।
3. भुगतान शेष को समायोजित करना पड़ता है।

प्रश्न 5. भुगतान शेष के असन्तुलन का क्या अर्थ है ? भुगतान शेष के असन्तुलन का क्या कारण है ?

उत्तर- भुगतान सन्तुलन (शेष) के असंतुलन का अर्थ है ,इसमें घाटा अथवा बचत का पाया जाना। 'घाटा' उस समय पाया जाता है जब भुगतान अधिक तथा प्राप्ति कम होता है। इसके विपरीत 'बचत' उस समय होती है जब भुगतान कम तथा प्राप्ति अधिक हो।

असन्तुलन निम्न कारणों से हो सकता है:-

1. आर्थिक कारण (Economic Factors)

(a). बड़े स्तर के विकास व्यय के कारण अधिक आयात हो सकते हैं जिससे भुगतान संतुलन प्रतिकूल हो जाता है।

(b). ऊँची घरेलू कीमतें निर्यातों को घटाती हैं तथा अधिक आयात करना पड़ता है।

2. राजनीतिक कारण (Political Factors)

राजनीतिक अस्थिरता से पूँजी का भारी मात्रा में बाहरी प्रवाह होने लगता है। अन्तर्प्रवाह पर दबाव पड़ने लगता है। इससे भी भुगतान सन्तुलन में असन्तुलन उत्पन्न होता है।

3. सामाजिक कारण (Social Factors)

स्वाद, रुचियों तथा फैशन में परिवर्तन आयातों तथा निर्यातों को प्रभावित करते हैं। इससे भुगतान शेष में असन्तुलन उत्पन्न होता है।

jharkhandlab.com

झारखंड अधिविद्य परिषद्
ANNUAL INTERMEDIATE EXAMINATION - 2023

ECONOMICS
Arts
SOLVED PAPER

बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर

भाग - A

1. अर्थव्यवस्था की किस समस्या का संबंध उत्पादन की तकनीकी के चयन से है ?
a. क्या उत्पादन करें ?
b. कितनी मात्रा में उत्पादन करें ?
c. कैसे उत्पादन करें ?
d. किसके लिए उत्पादन करें ?

2. कुल उपयोगिता अधिकतम होती है, जब सीमांत उपयोगिता का मान ..... होता है ।
a. शून्य b. ऋणात्मक
c. धनात्मक d. न्यूनतम

3. सामान्यत: एक उदासीनता वक्र होता है -
a. वृत्ताकार b. 'U' आकार का
c. मूल बिंदु की ओर उतल d. मूल बिंदु की ओर अ्वतल

4. सामान्यत: एक मांग वक्र की ढाल होती है -
a. धनात्मक
b. ऋणात्मक
c. पहले धनात्मक, फिर ऋणात्मक
d. पहले ऋणात्मक, फिर धनात्मक

5. एक सरल रेखा माँग वक्र के मध्य बिंदु पर मांग की कीमत लोच..... होती है ।
a. शून्य b. एक
c. एक से अधिक d. एक से कम

6. निम्न में से किस वक्र का आकार उल्टा 'U' आकार का होता है ?
a. औसत स्थिर लागत b. औसत परिवर्ती लागत
c. सीमांत लागत d. औसत उत्पाद

7. उत्पादन फलन $Q = AL^{\alpha} K^{\beta}$ में पैमाने का प्रतिफल की माप है ?
a. $\alpha + \beta$ b. $\alpha - \beta$
c. $\alpha \times \beta$ d. α / β

8. सीमांत लागत और औसत लागत एक दूसरे के बराबर होती हैं, जब -
a. सीमांत लागत घटती है
b. सीमांत लागत बढ़ती है
c. सीमांत लागत न्यूनतम होती है
d. औसत लागत न्यूनतम होती है

9. निम्नलिखित में से कौन-सा वक्र उत्पाद अक्ष के समांतर होता है?
a. कुल स्थिर लागत वक्र b. औसत परिवर्ती लागत वक्र
c. सीमांत लागत वक्र d. औसत लागत वक्र

10. पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में किस प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन होता है ?
a. असंबंधित b. घटिया
c. समरूप d. विभेदीकृत

11. अन्य बातें समान रहने पर किसी वस्तु की कीमत में 5% की वृद्धि होने से उस वस्तु की पूर्ति की मात्रा 6% बढ़ जाती है तो वस्तु की पूर्ति की कीमत लोच का मान क्या होगा ?
a. 30 b. 0.83
c. 1.2 d. 2

12. अल्पकाल में एक पूर्ण प्रतियोगी फर्म को हानि होती है, जब -
a. MR > MC b. MR < MC
c. P > AC d. P < AC

13. यदि किसी वस्तु की बाजार मांग तथा बाजार पूर्ति क्रमश: D और S हैं तो बाजार संतुलन को निम्न में से किस स्थिति से दर्शाया जा सकता है ?
a. D = S b. D-S = 0
c. D/S =1 d. इनमें से सभी

14. पूर्ति आधिक्य की स्थिति में किसी वस्तु की कीमत में..... होने की प्रवृत्ति होती है ।
a. वृद्धि b. कमी
c. अपरिवर्तित d. इनमें से सभी

15. फर्मों के मुक्त प्रवेश तथा निकास की स्थिति में बाजार कीमत सदैव..... के बराबर होती है ।
a. न्यूनतम सीमांत लागत b. कुल स्थिर लागत
c. न्यूनतम औसत लागत d. औसत परिवर्ती लागत

16. उच्चतम निर्धारित कीमत से बाजार में .....की स्थिति उत्पन्न होती है ।
a. संतुलन b. मांग आधिक्य
c. पूर्ति आधिक्य d. न्यून मांग

17. एकाधिकार में फर्मों की संख्या कितनी होती है ?
a. 1 b. 2
c. 4 d. 10

18. एक एकाधिकारी नियंत्रित कर सकता है ?
a. केवल कीमत को
b. केवल उत्पादन मात्रा को

Jharkhandlab.com

c. कीमत और उत्पादन मात्रा दोनों को
d. कीमत या उत्पादन मात्रा में किसी एक को

19. जिस बाजार संरचना में केवल दो फर्म हों, उसे कहा जाता है
a. एकाधिकार b. द्वि-अधिकार
c. अल्पाधिकार d. पूर्ण प्रतियोगिता

20. कार्टेल निर्माण किस प्रकार की बाजार संरचना में संभव है ?
a. पूर्ण प्रतियोगिता b. एकाधिकार
c. द्वि-अधिकार d. इनमें से सभी

21. 'द जेनरल थ्योरी ऑफ एंप्लॉयमेंट इंटरेस्ट एंड मनी' नामक पुस्तक के लेखक कौन है?
a. अलफ्रेड मार्शल b. एडम स्मिथ
c. जे. एम. केन्स d. जे. एन. केन्स

22. GDP और NDP में क्या संबंध है?
a. GDP = NDP - मूल्यह्रास b. GDP = NDP x मूल्यह्रास
c. GDP = NDP + मूल्यह्रास d. NDP = GDP + मूल्यह्रास

23. निम्न में किस वस्तु के निर्माण में गेहूं एक मध्यवर्ती वस्तु है ?
a. चपाती b. बिस्कुट
c. ब्रेड d. इनमें से सभी

24. किसी वर्ष में GDP की गणना में निम्न में से किस मद को शामिल नहीं किया जाएगा?
a. नई कार का मूल्य b. प्रयुक्त कार का विक्रय मूल्य
c. शिक्षक का शिक्षण शुल्क d. ब्रेड का मूल्य

25. निम्नलिखित में से किस विधि से GDP की गणना की जा सकती है?
a. मूल्यवृद्धि विधि b. आय विधि
c. व्यय विधि d. इनमें से सभी

26. सन 2016 में किए गए विमुद्रीकरण में किस मूल्य के नोट को बाजार प्रचलन से बाहर किया गया था ?
a. 50 रुपए एवं 100 रुपए
b. 100 रुपए एवं 500 रुपए
c. 500 रुपए एवं 1000 रुपए
d. 500 रुपए एवं 50 रुपए

27. वस्तु विनिमय प्रणाली का एक दोष निम्न में से कौन- सा है ?
a. वस्तु की कीमत का निर्धारण आसान
b. आवश्यकता के दोहरे संयोग का अभाव
c. मूल्यों के बीच तुलना करना आसान
d. मूल्य का संचय करना आसान

28. भारत का केंद्रीय बैंक निम्न में से कौन- सा है ?
a. भारतीय स्टेट बैंक b. सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
c. भारतीय रिजर्व बैंक d. बैंक ऑफ इंडिया

29. निम्न में से किस परिस्थिति में मुद्रा की पूर्ति में कमी हो सकती है?
a. बैंक दर में कमी
b. नगद आरक्षित अनुपात (CRR) में वृद्धि
c. RBI के द्वारा प्रतिभूतियों का क्रय
d. इनमें से सभी

30. उपभोग फलन C = 100 + 0.5 Y में स्वायत्त उपभोग है ?
a. 0.5 b. 0.5Y
c. 100 d. C

31. MPC के मान के संबंध में निम्न में से कौन- सा कथन सत्य है ?
a. $0 > MPC > 1$ b. $1< MPC < 0$
c. $0 \leq MPC \leq 1$ d. $1 > MPC < 0$

32. यदि किसी अर्थव्यवस्था में MPC का मान 0.4 है, तो MPS का मान क्या होगा ?
a. 0.4 b. 0.6
c. 2.5 d. 4

33. यदि अर्थव्यवस्था में MPS में वृद्धि हो, तो कुल बचत में-
a. हमेशा वृद्धि होगी
b. हमेशा कमी होगी
c. कमी होगी या अपरिवर्तित रहेगी
d. हमेशा अपरिवर्तित रहेगी

34. भारत में वित्तीय वर्ष की कालावधि होती है ?
a. 1 जनवरी से 31 दिसंबर b. 1 जुलाई से 30 जून
c. 1 अप्रैल से 31 मार्च d. 1 अगस्त से 31 जुलाई

35. निम्न में से कौन - सा प्रत्यक्ष कर का एक उदाहरण है ?
a. वस्तु एवं सेवा कर b. उत्पादन कर
c. निगम कर b. प्रशुल्क

36. राजस्व घाटा क्या होता है ?
a. राजस्व व्यय और राजस्व प्राप्ति का अंतर
b. पूंजीगत व्यय और पूंजीगत प्राप्ति का अंतर
c. निर्यात और आयात का अंतर
d. कुल व्यय और कुल प्राप्ति का अंतर

37. किस प्रकार की वस्तुओं के उपभोग में प्रतिद्वंदिता नहीं होती है?
a. सार्वजनिक वस्तु b. उपभोक्ता वस्तु
c. प्राकृतिक वस्तु d. निजी वस्तु

38. विश्व बैंक की स्थापना किस वर्ष में हुई थी ?
a. 1945 b. 1944
c. 1947 d. 1950

39. जब किसी देश की विदेशी विनिमय दर का निर्धारण बाजार शक्तियों के द्वारा होता है, तो इस प्रकार की विनिमय दर को क्या कहा जाता है ?
a. स्थिर विनिमय दर b. तिरती विनिमय दर
c. प्रतिबंधित तिरती दर d. इनमें से सभी

40. निम्नलिखित में से भुगतान संतुलन के चालू खाते का एक घटक कौन - सा है ?
a. पोर्टफोलियो निवेश b. विदेशी सहायता
c. वस्तुओं का आयात d. विदेशी ऋण

उत्तर-	1- c	2- a	3- c	4- b	5- b
	6- d	7- a	8- d	9- a	10- c
	11- c	12- d	13- d	14- b	15- c
	16- b	17- a	18- d	19- b	20- c
	21- c	22- c	23- d	24- b	25- d
	26- c	27- b	28- c	29- b	30- c
	31- c	32- b	33- c	34- c	35- c
	36- a	37- a	38- b	39- b	40- c

Jharkhandlab.com

झारखंड अधिविद्य परिषद्
ANNUAL INTERMEDIATE EXAMINATION - 2023

ECONOMICS
Arts
SOLVED PAPER

विषयनिष्ठ प्रश्नोत्तर

भाग - B

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (उत्तर अधिकतम 30 शब्दों में)

1. आर्थिक समस्या 'क्या उत्पादन करें ?' से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर- साधन सीमित होने के कारण प्रत्येक अर्थव्यवस्था में चयन की यह समस्या होती है कि किन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन किया जाए जिससे व्यक्तियों की अधिकतम आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।

2. बाजार में मांग आधिक्य की स्थिति कब उत्पन्न होती है ?

उत्तर- जब बाजार में वस्तु की कीमत घटती है तब मांग आधिक्य की स्थिति उत्पन्न होती है।

3. यदि एक एकाधिकारी वस्तु के लिए बाजार मांग वक्र Q = 25 - 2P है, तो एकाधिकारी के लिए कुल आगम वक्र ज्ञात कीजिए।

हल - दिया हुआ है कि,

मांग वक्र Q = 25 - 2P

चूँकि, TR = P.Q

सूत्र में Q का मान रखने पर,

TR = P(25 - 2P)

या, TR = 25P - 2P2

इसलिए TR = 25P - 2P2 उत्तर।

4. सीमांत आगम को परिभाषित कीजिए।

उत्तर- किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई की बिक्री से कुल आय में जो परिवर्तन होता है, उसे सीमांत आगम कहते हैं।

i.e., $MR = \frac{\Delta TR}{\Delta Q}$

या, $MR = TR_n - TR_{n-1}$

5. मंदी से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर- जब देश की अर्थव्यवस्था लंबे समय तक धीमी और सुस्त रहती है तथा बेरोजगारी की स्थिति भी होती है तो उसे मंदी कहते हैं।

6. सरकार के राजस्व प्राप्ति से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर- राजस्व प्राप्तियाँ वह प्राप्तियाँ हैं जिससे न तो कोई देयता उत्पन्न होती है और न ही परिसंपत्तियों में कमी होती है। जैसे - कर ,शुल्क आदि।

7. मुद्रा के अवमूल्यन का क्या अर्थ है ?

उत्तर- जब एक देश द्वारा अपने देश की मुद्रा का मूल्य दूसरे देश की मुद्रा के मूल्य से कम कर दिया जाता है तो उसे अवमूल्यन कहते हैं। ऐसा प्रायः देश के मौद्रिक प्राधिकार के द्वारा किया जाता है। एक देश द्वारा अवमूल्यन निर्यात को बढ़ाने तथा आयात को कम करने के उद्देश्य से किया जाता है।

खंड - B

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (उत्तर अधिकतम 50 शब्दों में)

8. रेखा चित्र से स्पष्ट कीजिए कि सीमांत उपयोगिता के शून्य होने पर कुल उपयोगिता अधिकतम होती है।

उत्तर- सीमांत उपयोगिता के शून्य होने पर कुल उपयोगिता अधिकतम होती है। इसे हम निम्न रेखा चित्र से स्पष्ट कर सकते हैं।

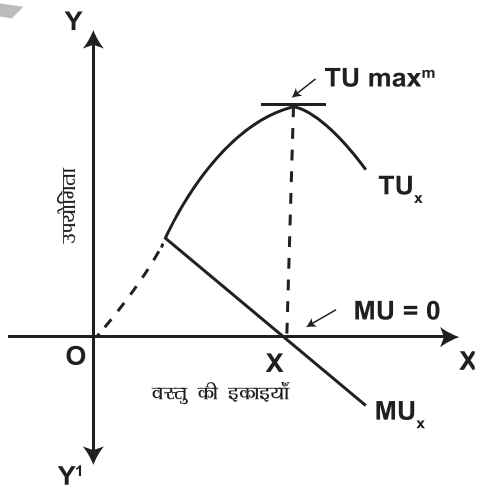

रेखा चित्र से स्पष्ट है कि प्रारंभ में जब कुल उपयोगिता बढ़ रही होती है, तो सीमांत उपयोगिता गिरती है। गिरते हुए सीमांत उपयोगिता जिस बिंदु पर शून्य हो जाती है वही कुल उपयोगिता अधिकतम होती है। जैसा कि रेखा चित्र में वस्तु की X इकाई पर है। इस प्रकार स्पष्ट है कि जब सीमांत उपयोगिता शून्य होती है, तब कुल उपयोगिता अधिकतम होती है।

9. अल्पकालीन औसत लागत वक्र U आकार का क्यों होता है?

उत्तर- अल्पकालीन औसत लागत वक्र (SAC) U आकार का होता है, इसके दो कारण है। पहला, उत्पादन में परिवर्तनशील अनुपात के नियम का लागू होना। इस नियम के अनुसार जैसे-जैसे उत्पादन के साधनों को बढ़ाया जाता है प्रारंभ में उत्पादन तेजी से बढ़ता है, अपने अधिकतम स्तर को प्राप्त करने के बाद उत्पादन में कमी आने लगती है। जिसके कारण प्रारंभ में SAC वक्र गिरती है, न्यूनतम होती है और फिर बढ़ने लगती है।

दूसरा, SAC वक्र, औसत परिवर्तनशील लागत (AVC) तथा औसत स्थिर लागत (AFC) का योग होता है। प्रारंभ में AVC तथा AFC दोनों वक्र गिरते हैं AFC में लगातार कमी होती है जबकि AVC अपनी न्यूनतम को प्राप्त करने के बाद बढ़ने लगती है। यही कारण है कि पहले SAC वक्र गिरता है अपनी न्यूनतम बिंदु को प्राप्त करने के बाद बढ़ने लगता है। अतः इसका आकार, अंग्रेजी के 'U' अक्षर के समान होता है।

Jharkhandlab.com

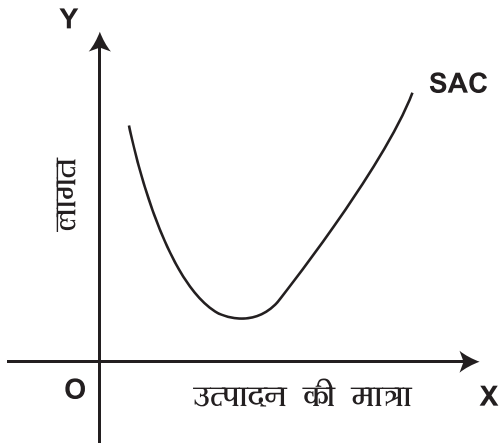

10. उपभोक्ता की आय में वृद्धि का बाजार संतुलन पर क्या प्रभाव होगा? रेखा चित्र से स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- उपभोक्ता की आय में वृद्धि से बाजार में सामान्य वस्तु की मांग में वृद्धि होगी। अतः मांग वक्र ऊपर दाहिनी ओर खिसक जाएगा। इसे हम निम्न रेखाचित्र से दर्शा सकते हैं-

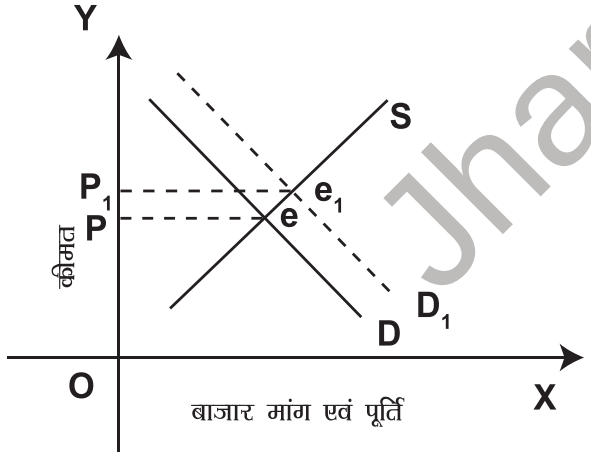

चित्र से स्पष्ट है कि बाजार में मांग और पूर्ति का संतुलन e बिंदु पर है जहां कीमत P है। उपभोक्ता की आय बढ़ने से मांग बढ़कर D_1 हो जाती है, जिससे समान पूर्ति वक्र पर कीमत बढ़कर P_1 हो जाती है। इस प्रकार उपभोक्ता की आय बढ़ने से, बाजार में संतुलन कीमत में वृद्धि होती है।

11. जीडीपी क्या है? तीन विधियों से जीडीपी की गणना के लिए तीन निष्पत्तियों को लिखिए।

उत्तर- जीडीपी - एक देश के घरेलू सीमा के अंदर, एक लेखा वर्ष में सभी उत्पादकों चाहे वे देश के निवासी हो या गैर - निवासी के द्वारा जितनी भी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है, उनके बाजार कीमत के योग को सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) कहा जाता है।

जीडीपी की गणना तीन विधियों से हो सकती है-

(A) आय विधि -

जीडीपी = कर्मचारियों का पारिश्रमिक + परिचालन अधिशेष + स्व- नियोजितों की आय + घिसावट मूल्य + शुद्ध अप्रत्यक्ष कर

(B) उत्पाद विधि -

जीडीपी = बाजार कीमत पर प्राथमिक क्षेत्र का सकल मूल्यवृद्धि + द्वितीय क्षेत्र का सकल मूल्य वृद्धि + तृतीय क्षेत्र का सकल मूल्य वृद्धि

(C) व्यय विधि -

जीडीपी = निजी अंतिम उपभोग व्यय + सरकारी अंतिम उपभोग व्यय + सकल घरेलू स्थिर पूंजी निर्माण + शुद्ध निर्यात

12. निम्नलिखित को परिभाषित कीजिए:

a. रेपो दर

b. वैधानिक तरलता अनुपात (SLR)

उत्तर -

a. रेपो दर - ब्याज की वह दर, जिस पर वाणिज्य बैंक केंद्रीय बैंक से अल्पकालीन ऋण ले सकते हैं रेपो दर कहलाती है।

b. वैधानिक तरलता अनुपात (SLR) - वैधानिक तरलता अनुपात के अंतर्गत प्रत्येक व्यापारिक बैंकों को अपनी कुल जमा का एक निश्चित प्रतिशत अपने पास तरल रूप में रखना पड़ता है।

13. उपभोग की सीमांत प्रवृत्ति (MPC) और बचत की सीमांत प्रवृत्ति (MPS) को परिभाषित कीजिए। स्पष्ट कीजिए कि MPC+MPS=1

उत्तर- सीमांत उपभोग की प्रवृत्ति - सीमांत उपभोग की प्रवृत्ति (MPC) उपभोग में परिवर्तन (ΔC) तथा आय में परिवर्तन (ΔY) के अनुपात को बताता है। यह बताता है कि आय में परिवर्तन के साथ-साथ उपभोग में किस प्रकार का परिवर्तन होगा।

अर्थात,

$MPC = \Delta C/\Delta Y$

सीमांत बचत की प्रवृत्ति-सीमांत बचत की प्रवृत्ति (MPS) बचत में परिवर्तन (ΔS) तथा आय में परिवर्तन (ΔY) के अनुपात को व्यक्त करता है।

$MPS = \Delta S/\Delta Y$

$MPC + MPS = 1$ होता है,

स्पष्टीकरण,

$MPC + MPS = 1$ ..... समीकरण 1

जानते हैं

$MPC = \Delta C/\Delta Y$

तथा, $MPS = \Delta S/\Delta Y$

अतः समीकरण में MPC तथा MPS का मान रखने पर

LHS,

$\Rightarrow \Delta C/\Delta Y + \Delta S/\Delta Y$

(चूंकि , $C + S = Y$

अतः $\Delta C + \Delta S = \Delta Y$)

$\Rightarrow \frac{\Delta C + \Delta S}{\Delta Y}$ ..... समीकरण 2

अतः $\Delta C + \Delta S = \Delta Y$ को समीकरण 2 में रखने पर

$\Rightarrow \Delta Y/\Delta Y = 1$ RHS प्राप्त हुआ।

इस प्रकार स्पष्ट है $MPC + MPS = 1$ होता है।

Jharkhandlab.com

14. यदि किसी अर्थव्यवस्था में उपभोग फलन C = 150 + 0.6Y है, तो MPC तथा गुणक का मान ज्ञात कीजिए।

उत्तर-

दिया है,

C = 150 + 0.6Y

चूंकि, C = A + bY

जहां, MPC = b

अतः. MPC = 0.6

चूंकि गुणक K = 1/ 1- MPC

K = 1 / 1 - 0.6

K = 1 / 0.4

K = 2.5 ans

खंड - C

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर (उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में)

15. मांग की कीमत लोच से आप क्या समझते हैं ? निम्नलिखित स्थितियों को रेखाचित्र के माध्यम से दर्शाइए -

a) पूर्णतया लोचदार मांग वक्र

b) पूर्णतया बेलोचदार मांग वक्र

c) इकाई के बराबर लोचदार मांग वक्र।

उत्तर- अन्य बातें समान रहने पर, मांग की कीमत लोच से तात्पर्य किसी वस्तु की कीमत में आनुपातिक परिवर्तन के फलस्वरूप; किसी वस्तु की मांग-मात्रा में होने वाले आनुपातिक परिवर्तन से है। यह किसी वस्तु की मांग-मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन तथा वस्तु की कीमत में आनुपातिक परिवर्तन के अनुपात को बतलाता है। अर्थात,

$$\text{कीमत लोच} = \frac{\text{वस्तु की मांग-मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन}}{\text{वस्तु की कीमत में आनुपातिक परिवर्तन}}$$

दूसरे शब्दों में, मांग की कीमत लोच वस्तु की मांग मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन तथा वस्तु की कीमत में प्रतिशत परिवर्तन के अनुपात को बतलाता है। अर्थात,

$$\text{कीमत लोच} = \frac{\text{वस्तु की मांग-मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{वस्तु की कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

रेखाचित्र के माध्यम से मांग की लोच के विभिन्न स्थितियों का प्रस्तुतीकरण -

a) पूर्णतया लोचदार मांग वक्र -

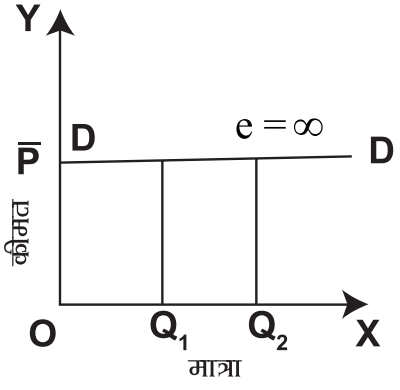

ऊपर चित्र में, पूर्णतया लोचदार मांग वक्र DD है, जो कि X - अक्ष के समानांतर एक पड़ी रेखा के रूप में है। वस्तु की कीमत में थोड़ी सी वृद्धि से मांग में भारी परिवर्तन हो जाती है, ऐसी मांग को पूर्णतया लोचदार मांग कहा जाता है। ऐसी स्थिति में, मांग की लोच अनंत के बराबर होती है।

b) पूर्णतया बेलोचदार मांग वक्र -

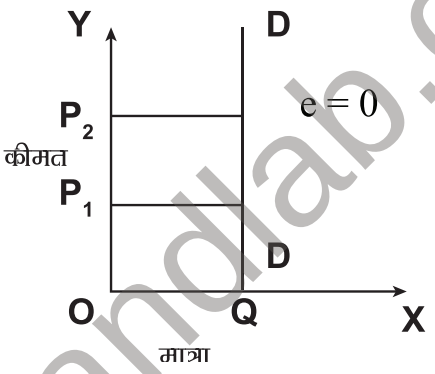

ऊपर चित्र में, पूर्णतया बेलोचदार मांग वक्र DD है, जो कि Y - अक्ष के समानांतर एक खड़ी रेखा के रूप में है। वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरुप उसकी मांग में कोई परिवर्तन नहीं होता है, ऐसी मांग को पूर्णतया बेलोचदार मांग कहते हैं। ऐसी स्थिति में, मांग की लोच शून्य के बराबर होती है।

c) इकाई के बराबर लोचदार मांग वक्र -

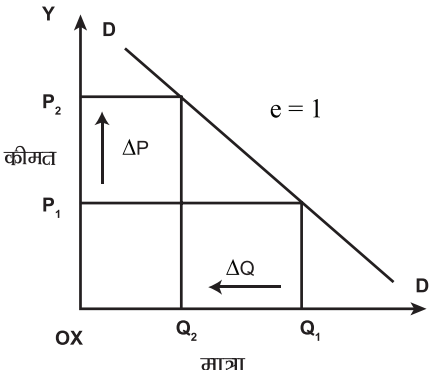

ऊपर चित्र में, इकाई बेलोचदार मांग वक्र DD है। वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरुप उसकी मांग में भी उसी अनुपात में परिवर्तन होता है, ऐसी मांग को इकाई लोचदार मांग कहते हैं। ऐसी स्थिति में, मांग की लोच इकाई अर्थात एक के बराबर होती है।

16. लागत क्या है? स्पष्ट कीजिए कि अल्पकाल में औसत लागत, औसत स्थिर लागत और औसत परिवर्ती लागत के योग के बराबर होता है।

उत्तर- किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन के दृष्टिकोण से लागत अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है। प्रत्येक उत्पादक या फर्म को उत्पादन करने के लिए उत्पत्ति के विभिन्न साधनों को एकत्रित करना पड़ता है। उत्पादन के विभिन्न साधनों पर उत्पादक को जो व्यय करना पड़ता है उसे लागत कहते हैं। इसे सामान्यतः उत्पादन लागत कहा जाता है। इस प्रकार, उत्पादक द्वारा उत्पादन में लगे हुए उत्पादन के विभिन्न साधनों पर किया जाने वाला खर्च उत्पादन लागत कहलाता है।

अल्पकाल में औसत लागत, औसत स्थिर लागत और औसत परिवर्ती लागत के योग के बराबर होती है -

औसत लागत - किसी वस्तु की प्रति इकाई लागत को औसत लागत कहा जाता है। औसत लागत, कुल लागत तथा उत्पादन की मात्रा का भागफल होती है। अर्थात्,

औसत लागत = कुल लागत / उत्पादन की मात्रा

या, AC = TC/Q ..... (1)

sarkhandlab.com

हम जानते हैं कि अल्पकाल में,

कुल लागत = कुल स्थिर लागत + कुल परिवर्तनशील लागत

या, TC = TFC + TVC ..... (2)

दोनों पक्षों में Q से भाग देने पर,

TC/Q = (TFC + TVC) / Q

या, TC/Q = TFC/Q + TVC/Q

या, AC = AFC + AVC

इस प्रकार, अल्पकाल में औसत लागत, औसत स्थिर लागत और औसत परिवर्ती लागत के योग के बराबर होती है।

17. पूर्ण प्रतियोगी बाजार की विशेषताओं को लिखिए। एक पूर्ण प्रतियोगी फर्म कब संतुलन में होगा ? रेखा चित्र के माध्यम से दर्शाइए।

उत्तर- जब प्रत्येक उत्पादक या फर्म की वस्तु की मांग पूर्णत: लोचदार होती है तो वह बाजार पूर्ण प्रतियोगी बाजार कहलाता है।

पूर्ण प्रतियोगी बाजार की विशेषताएं -

- ◊ क्रेताओं एवं विक्रेताओं की संख्या - पूर्ण प्रतियोगी बाजार में अत्यधिक क्रेता और विक्रेता विद्यमान होते हैं।
- ◊ वस्तु की प्रकृति - एकसमान एवं समरूप वस्तुओं का उत्पादन होता है।
- ◊ बाजार दशाओं का ज्ञान - क्रेता एवं विक्रेता दोनों को बाजार दशाओं का पूर्ण ज्ञान होता है।
- ◊ साधनों की गतिशीलता - साधनों में पूर्ण गतिशीलता पाई जाती है।
- ◊ कीमत और लागत - कीमत सीमांत लागत के बराबर होती है। अर्थात, AR = MC
- ◊ आय वक्र - औसत आगम और सीमांत आगम दोनों बराबर होते हैं। अर्थात, AR = MR तथा X - अक्ष के समांतर पड़ी रेखा के रूप में होते हैं।
- ◊ वस्तु कीमत पर प्रभाव - फर्म कीमत प्राप्तकर्ता होती है। फर्म कीमत को प्रभावित नहीं कर सकती है।

एक पूर्ण प्रतियोगी फर्म का संतुलन -

एक पूर्ण प्रतियोगी फर्म संतुलन की अवस्था में उस समय होती है जब उसके लाभ अधिकतम होते हैं। पूर्ण प्रतियोगिता में सीमांत आगम - सीमांत लागत विधि से फर्म के संतुलन की निम्नलिखित दो शर्तें पूरी होनी चाहिए -

i) सीमांत आगम = सीमांत लागत (MR = MC) तथा

ii) सीमांत लागत वक्र, सीमांत आगम वक्र को नीचे से काटे।

चित्र द्वारा प्रस्तुतीकरण -

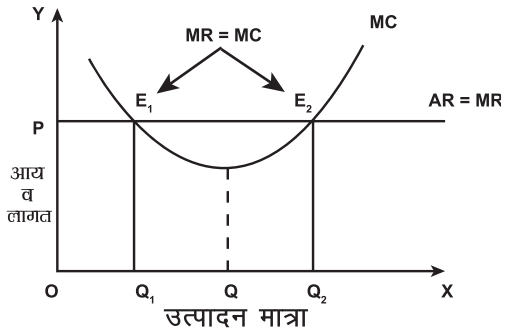

चित्र में, पूर्ण प्रतियोगी बाजार में फर्म OP कीमत प्राप्त करती है तथा इस कीमत पर वाह जितनी भी इकाई चाहे बेच सकती है। फर्म का कीमत प्राप्तकर्ता होने के कारण औसत आगम और सीमांत आगम सदैव बराबर रहते हैं। अर्थात, AR = MR

चित्र में, सीमांत लागत वक्र (MC) सीमांत आगम वक्र (MR) को 2 बिंदुओं E1 तथा E2 पर काटता है। ये दोनों सम-विच्छेद बिंदु कहलाते हैं। किन्तु E1 बिंदु पर संतुलन की दूसरी शर्त पूरी नहीं होती है।

इस प्रकार, एक पूर्ण प्रतियोगी फर्म का संतुलन बिंदु E1 पर नहीं होकर बिंदु E2 पर होता है क्योंकि बिंदु E2 पर संतुलन की आवश्यक दोनों शर्तें पूरी होती हैं।

18. जीडीपी से राष्ट्रीय आय की गणना आप कैसे करेंगे? व्याख्या कीजिए।

उत्तर- जीडीपी - एक देश के घरेलू सीमा के अंदर, एक लेखा वर्ष में सभी उत्पादकों चाहे वे देश के निवासी हो या गैर निवासी के द्वारा जितनी भी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है , उनके बाजार कीमत के योग को सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) कहा जाता है।

राष्ट्रीय आय - एक देश के घरेलू सीमा के अंदर एक लेखा वर्ष में सभी उत्पादकों द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के कुल मूल्य (साधन कीमत पर) तथा विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय का योग राष्ट्रीय आय कहलाता है।

जीडीपी की सहायता से राष्ट्रीय आय की गणना तीन विधियों से हो सकती है-

A) आय विधि -

जीडीपी = कर्मचारियों का पारिश्रमिक + परिचालन अधिशेष + स्व- नियोजितों की आय + घिसावट+ शुद्ध अप्रत्यक्ष कर

राष्ट्रीय आय = जीडीपी + विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय (NFIA)

B) उत्पाद विधि -

जीडीपी = बाजार कीमत पर प्राथमिक क्षेत्र का सकल मूल्यवृद्धि + द्वितीय क्षेत्र का सकल मूल्य वृद्धि + तृतीय क्षेत्र का सकल मूल्य वृद्धि

राष्ट्रीय आय = जीडीपी + विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय (NFIA) - घिसावट व्यय - शुद्ध अप्रत्यक्ष कर

C) व्यय विधि -

जीडीपी = निजी अंतिम उपभोग व्यय + सरकारी अंतिम उपभोग व्यय + सकल घरेलू स्थिर पूंजी निर्माण + शुद्ध निर्यात

राष्ट्रीय आय = जीडीपी + विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय (NFIA) - घिसावट व्यय - शुद्ध अप्रत्यक्ष कर

इस प्रकार, राष्ट्रीय आय की गणना में जीडीपी एक महत्वपूर्ण पक्ष है।

19. केंद्रीय बैंक अर्थव्यवस्था में किस प्रकार साख पर नियंत्रण करता है? व्याख्या कीजिए।

उत्तर- केंद्रीय बैंक देश की सर्वोच्च मौद्रिक संस्था होती है। यह किसी देश की संपूर्ण मौद्रिक एवं बैंकिंग व्यवस्था को नियंत्रित करता है। आधुनिक समय में केंद्रीय बैंक का प्रमुख कार्य - 'साख पर नियंत्रण करके अर्थव्यवस्था का मौद्रिक प्रबंधन करना' है।

केंद्रीय बैंक अर्थव्यवस्था में साख पर नियंत्रण मुख्यत: निम्नांकित दो विधियों से करता है।

I) मात्रात्मक विधियां तथा

II)गुणात्मक विधियां।

Jharkhandlab.com

I) **मात्रात्मक विधियां** - मात्रात्मक विधियों के द्वारा केंद्रीय बैंक, बैंकों के ऋणों की मात्रा अथवा आकार को नियंत्रित करती हैं तथा साख के प्रयोग को प्रभावित नहीं करती हैं। इसके अंतर्गत साख नियंत्रण हेतु केंद्रीय बैंक निम्नांकित उपाय अपनाती है-

a) बैंक दर,
b) खुले बाजार की क्रियाएं,
c) नगद कोष अनुपात तथा
d) वैधानिक तरलता अनुपात।

◊ **बैंक दर** - बैंक दर वह दर है, जिस पर केंद्रीय बैंक सदस्य बैंकों के प्रथम श्रेणी के व्यापारिक बिलों की पुनर्कटौती करता है और उन्हें ऋण देता है।

◊ **खुले बाजार की क्रियाएं** - इसके अंतर्गत केंद्रीय बैंक, मुद्रा बाजार में सरकारी तथा निजी संस्थाओं की प्रतिभूतियों का क्रय विक्रय करता है।

◊ **नगद कोष अनुपात** - इसके अंतर्गत देश के प्रत्येक व्यापारिक बैंक को अपने कुल जमा राशि का एक निश्चित भाग केंद्रीय बैंक के पास नगद कोष के रूप में जमा करना पड़ता है।

◊ **वैधानिक तरलता अनुपात** - इसके अंतर्गत व्यापारिक बैंकों को अपने कुल परिसंपत्ति का एक निश्चित अनुपात वैधानिक रूप से अपने पास जमा/ तरल रूप में रखना पड़ता है।

II) **गुणात्मक विधियां** - गुणात्मक साख नियंत्रण के अंतर्गत केंद्रीय बैंक कुछ विशेष उद्देश्यों के लिए दी जाने वाली तथा विशेष बैंकों द्वारा दी गई साख की मात्रा को नियमित करता है। इसे चयनात्मक साख नियंत्रण भी कहा जाता है। इसके अंतर्गत साख नियंत्रण हेतु केंद्रीय बैंक निम्नांकित उपाय अपनाती है-

a) साख की राशनिंग,
b) प्रत्यक्ष कार्यवाही,
c) नैतिक दबाव तथा
d) प्रचार आदि।

◊ **साख की राशनिंग** - केंद्रीय बैंक, व्यापारिक बैंकों की साख की राशनिंग कर साख नियंत्रण करता है। इससे अर्थव्यवस्था में साख का संकुचन होता है।

◊ **प्रत्यक्ष कार्यवाही** - केंद्रीय बैंक, आवश्यकता पड़ने पर व्यापारिक बैंक के प्रति प्रत्यक्ष कार्यवाही जैसे - दंड अथवा जुर्माना आदि के द्वारा भी साख का संकुचन करती है।

◊ **नैतिक दबाव** - केंद्रीय बैंक, आवश्यकता पड़ने पर व्यापारिक बैंकों से निवेदन अथवा प्रार्थना आदि जैसे नैतिक दबाव डालकर साख नियंत्रण हेतु कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

◊ **प्रचार** - केंद्रीय बैंक, अपनी नीतियों का उचित प्रचार करके भी जनता का सक्रिय सहयोग प्राप्त करता है और आधुनिक समय में साख का संकुचन करता है।

इस प्रकार केंद्रीय बैंक, मात्रात्मक साख नियंत्रण की विभिन्न विधियों द्वारा व्यापारिक बैंकों के नगद कोषों पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है जबकि गुणात्मक साख नियंत्रण के द्वारा कुल मात्रा को प्रभावित न करके साख के विभिन्न उद्देश्यों को नियंत्रित करता है।

Jharkhandlab.com

झारखंड अधिविद्य परिषद्
ANNUAL INTERMEDIATE EXAMINATION - 2023

ECONOMICS
Science/Commerce
SOLVED PAPER

बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर

भाग - A

1. अर्थव्यवस्था की किस समस्या का संबंध उत्पादन की तकनीक के चयन से है ?
a. क्या उत्पादन करें ? b. कैसे उत्पादन करें ?
c. कितनी मात्रा में उत्पादन करें? d. किसके लिए उत्पादन करें ?

2. किसी वस्तु की मानवीय आवश्यकता को संतुष्ट करने की क्षमता है ?
a. उपभोग b. उपयोगिता
c. गुण d. रूचि

3. उपयोगिता के क्रम वाचक विश्लेषण का प्रतिपादन किसने किया था ?
a. एडम स्मिथ b. हिक्स और एलेन
c. मार्शल d. पीगू

4. निम्नलिखित चित्र प्रदर्शित करता है ?

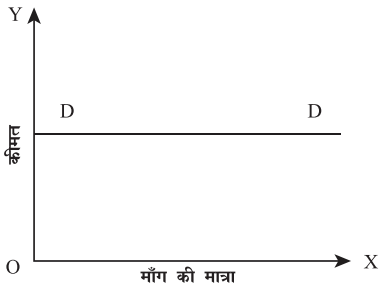

a. बेलोचदार मांग b. अधिक लोचदार मांग
c. पूर्णतः लोचदार मांग d. पूर्णतः बेलोचदार मांग

5. उपभोक्ता की आय बढ़ने पर किस प्रकार की वस्तु की मांग घटती है ?
a. सामान्य वस्तु b. घटिया वस्तु
c. पूरक वस्तु d. इनमें से कोई नहीं

6. दीर्घकालीन उत्पादन फलन का संबंध निम्न में से किससे है ?
a. पैमाने के प्रतिफल से
b. परिवर्तनशील अनुपात के नियम से
c. मांग की लोच से
d. इनमे से कोई नहीं

7. उत्पादन फलन को व्यक्त करता है ?
a. Qx = Dx b. Qx = Px
c. Qx = f (A, B, C, D, E) d. इनमें से कोई नहीं

8. किसी वस्तु के उत्पादन की स्थिर लागत ₹ 60 है। उस वस्तु की 10 इकाई उत्पादन की औसत स्थिर लागत क्या होगी ?
a. ₹ 50 b. ₹ 25
c . ₹ 6 d. ₹ 60

9. दो समोत्पाद वक्रों के बीच की दूरी क्या व्यक्त करती है ?
a. उत्पादन स्तर में परिवर्तन b. उपयोगिता में अंतर
c. लागत में अंतर d. लाभ में अंतर

10. निम्नलिखित में से कौन सही है ?
a. TVC = TC - TFC b. TC = TFC - TVC
c. TFC = TVC + TC d. TC = TVC * TFC

11. उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन करने पर किस लागत में परिवर्तन नहीं होता है ?
a. सीमांत लागत b. कुल स्थिर लागत
c. औसत स्थिर लागत d. औसत परिवर्ती लागत

12. औसत लागत वक्र का आकार होता है
a. U अक्षर जैसा b. x अक्ष की समानांतर रेखा
c. L अक्षर जैसा d. इनमें से कोई नहीं

13. किस बाजार में AR = MR होता है?
a. पूर्ण प्रतियोगिता b. एकाधिकार
c. एकाधिकारी प्रतियोगिता d. इनमें से सभी

14. निम्न में किस बाजार में विभेदिकृत वस्तुओं का उत्पादन होता है?
a. पूर्ण प्रतियोगिता b. एकाधिकारी प्रतियोगिता
c. एकाधिकार d. इनमें से सभी

15. फार्म के संतुलन की मूल शर्त है
a. MR = AR b. MR = TR
c. AR = TR d. MC = MR

16. "पूर्ति अपने लिए मांग का सृजन स्वयं कर लेती है।" यह किसने कहा ?
a. जे. बी. से b. एडम स्मिथ
c. मार्शल d. पीगू

17. एकमुश्त कर लगाने से किसी वस्तु की पूर्ति पर क्या प्रभाव होता है ?
a. पूर्ति में वृद्धि होती है b. पूर्ति कम हो जाती है
c. पूर्ति शून्य हो जाती है d. पूर्ति अपरिवर्तित रहती है

Jharkhandlab.com

18. **बाजार मूल्य को परिभाषित किया जाता है-**

a. अल्पकालीन बाजार से b. दीर्घकालीन बाजार से
c. दीर्घकालीन बाजार से d. इनमें से सभी

19. **आधिक्य मांग की स्थिति में कीमत में प्रवृत्ति होती है-**

a. कमी होने की b. वृद्धि होने की
c. शून्य होने की d. अपरिवर्तित होने की

20. **कीमत उस बिंदु पर निर्धारित होती है जहां-**

a. वस्तु की मांग अधिक हो
b. वस्तु की पूर्ति अधिक हो
c. वस्तु की मांग और वस्तु की पूर्ति बराबर हो
d. इनमें से कोई नहीं

21. **'द जनरल थ्योरी ऑफ एंप्लॉयमेंट इंटरेस्ट एंड मनी' नामक पुस्तक के लेखक कौन है ?**

a. एडम स्मिथ b. अलफ्रेड मार्शल
c. जे. एम. केंस d. रिकार्डो

22. **GNP और NNP में क्या संबंध है ?**

a. GNP = NNP - घिसावट b. NNP = GNP + घिसावट
c. NNP = GNP - घिसावट d. GNP = GDP + घिसावट

23. **स्टॉक चर का एक उदाहरण है-**

a. मुद्रास्फीति b. पूंजी
c. आय d. व्यय

24. **राष्ट्रीय आय के आकलन में किसी वस्तु या सेवा का मूल्य एक से अधिक बार शामिल करना कहलाता है-**

a. एकल गणना b. बहुल गणना
c. दोहरी गणना d. इनमें से कोई नहीं

25. **निम्न में से किस वस्तु के निर्माण में गेहूं एक मध्यवर्ती वस्तु है ?**

a. ब्रेड b. बिस्कुट
c. चपाती d. इनमें से सभी

26. **मुद्रा का कार्य है-**

a. विनिमय का माध्यम b. मूल्य का संचय
c. मूल्य का मापक d. इनमें से सभी

27. **किसने कहा " मुद्रा वह है जो मुद्रा का कार्य करे" -**

a. रॉबर्टसन b. केन्स
c. हर्टेल विदर्स d. मार्शल

28. **भारत का एक केंद्रीय बैंक है-**

a. सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया b. भारतीय रिजर्व बैंक
c. बैंक ऑफ इंडिया d. भारतीय स्टेट बैंक

29. **केंद्रीय बैंक का मुख्य कार्य है-**

a. केंद्रीय सरकार का बैंकर एजेंट
b. बैंकों का बैंक
c. नोट जारी करना
d. इनमें से सभी

30. **उपभोग फलन C = A + bY में स्वायत्त उपभोग है-**

a. C b. A
c. B d. bY

31. **मंदी वह अवस्था है जब अर्थव्यवस्था में**

a. उत्पादन बढ़ता है
b. रोजगार बढ़ता है
c. रोजगार तथा उत्पादन स्तर बढ़ता है
d. रोजगार तथा उत्पादन स्तर गिरता है

32. **किसी अर्थव्यवस्था में यदि है MPS = 0.2 है, तो गुणांक का मान क्या होगा ?**

a. 0.4 b. 5
c. 2.5 d. 4

33. **निवेश गुणक है-**

a. $\frac{1}{MPS}$ b. $\frac{1}{1 - MPC}$
c. (1) और (2) दोनों d. इनमें से कोई नहीं

34. **निवेश के निर्धारक घटक कौन- सा है?**

a. पूंजी की सीमांत क्षमता b. ब्याज की दर
c. a और b दोनों d. इनमें से कोई नहीं

35. **निम्न में से अप्रत्यक्ष कर का एक उदाहरण कौन - सा है?**

a. बिक्री कर b. उत्पाद शुल्क
c. a और b दोनों d. आयकर

36. **राजस्व व्यय एवं राजस्व प्राप्तियों के अंतर को क्या कहा जाता है ?**

a. प्राथमिक घाटा b. राजस्व घाटा
c. राजकोषीय घाटा d. व्यापार घाटा

37. **विदेशी विनिमय दर का निर्धारण होता है-**

a. विदेशी करेंसी की मांग द्वारा
b. विदेशी करेंसी की पूर्ति द्वारा
c. विदेशी विनिमय बाजार में मांग एवं पूर्ति द्वारा
d. इनमें से कोई नहीं

38. **व्यापार संतुलन का अर्थ होता है-**

a. वस्तुओं के आयात एवं निर्यात से
b. पूंजी के लेनदेन से
c. कुल डेबिट तथा क्रेडिट से
d. इनमें से सभी

39. **निम्नलिखित में से कौन-सा मद भुगतान संतुलन के चालू खाते का एक घटक है ?**

a. विदेशी प्रत्यक्ष निवेश b. विदेशी सहायता
c. विदेशी ऋण d. वस्तुओं का निर्यात

40. **भुगतान संतुलन में असंतुलन का निम्न में से कौन आर्थिक कारण है ?**

a. राजनीतिक अस्थिरता b. व्यापार चक्र
c. अंतर्राष्ट्रीय संबंध d. इनमें से कोई नहीं

उत्तर-	1- b	2- b	3- b	4- c	5- b
	6- a	7- c	8- c	9- a	10- a
	11- b	12- a	13- a	14- b	15- d
	16- a	17- b	18- a	19- b	20- c
	21- c	22- c	23- b	24- c	25- d
	26- d	27- c	28- b	29- d	30- b
	31- d	32- b	33- c	34- c	35- c
	36- b	37- c	38- a	39- d	40- b

Jharkhandlab.com

ECONOMICS
Science/Commerce
SOLVED PAPER

विषयनिष्ठ प्रश्नोत्तर

भाग - B

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (उत्तर अधिकतम 30 शब्दों में)

1. समष्टि अर्थशास्त्र से क्या समझते हैं ?

उत्तर- समष्टि अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र की वह शाखा है जिसमें अर्थव्यवस्था की किसी विशिष्ट इकाई का नहीं वरन् सभी इकाइयों का समग्रता के रूप में अध्ययन किया जाता है। जैसे - कुल राष्ट्रीय आय , कुल उत्पादन एवं कुल रोजगार आदि ।

2. मध्यवर्ती वस्तु क्या है ?

उत्तर- मध्यवर्ती वस्तु वे वस्तुएँ हैं जो उत्पादन की सीमा रेखा के अंदर होती हैं और अंतिम प्रयोगकर्ताओं द्वारा प्रयोग के लिए तैयार नहीं होती । यह उत्पादकों द्वारा कच्चे माल के रूप में प्रयोग की जाती है । जैसे - ब्रेड के उत्पादन में प्रयोग किया जाने वाला गेहूं मध्यवर्ती वस्तु होता है ।

3. औसत उत्पाद क्या है ?

उत्तर- परिवर्तनशील साधन के प्रति इकाई उत्पाद को औसत उत्पाद कहते हैं ।

$AP = TP / L$

4. बाजार से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर- बाजार से अभिप्राय सामान्यतः वैसे किसी भी स्थान से है जहां वस्तुओं या सेवाओं को बेचने एवं खरीदने की प्रक्रिया संपादित की जाती है ।

5. मुद्रा की परिभाषा दीजिए ।

उत्तर- एक वस्तु जो विनिमय के माध्यम के रूप में सामान्य रूप से स्वीकार की जाती है , उसे मुद्रा कहते हैं।

6. राजस्व प्राप्ति से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर- राजस्व प्राप्तियां वह प्राप्तियां हैं जिनसे न तो कोई देयता उत्पन्न होती है और न ही परिसंपत्तियों में कमी आती है । जैसे - कर ,शुल्क आदि ।

7. आयात - प्रतिस्थापन से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर- आयात - प्रतिस्थापन वह नीति है जिसमें किसी वस्तु के आयात करने के बदले घरेलू उत्पादन द्वारा ही उसकी पूर्ति की जाय , जिससे उद्योगों को प्रोत्साहन मिल सके ।

खण्ड – B

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (उत्तर अधिकतम 50 शब्दों में)

8. मांग के नियम से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर- अन्य बातों के समान रहने पर, यदि किसी वस्तु की कीमत में कमी होती है तो उसकी मांग में वृद्धि होती है एवं कीमत में वृद्धि होने पर मांग में कमी आती है अर्थात कीमत तथा मांग में विपरीत संबंध होता है।

$D = f(P)$

जहां, D = वस्तु की मांग, f = फलन तथा P = वस्तु की कीमत।

मांग के नियम की मान्यता -

(i) उपभोक्ता की आय में कोई परिवर्तन न हो

(ii) संबंधित वस्तुओं की कीमतों में कोई परिवर्तन न हो

(iii) उपभोक्ता की रूचि स्थिर हो

(iv) सरकार की नीति में कोई परिवर्तन नहीं हो ।

9. अल्पकालीन उत्पादन फलन और दीर्घकालीन उत्पादन फलन में अंतर स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर- अल्पकालीन उत्पादन फलन और दीर्घकालीन उत्पादन फलन में अंतर निम्नांकित बिंदुओं के आधार पर दर्शाया जा सकता है -

(i) **समय अवधि** - अल्पकालीन उत्पादन फलन समय की एक छोटी अवधि से संबंधित होता है जबकि दीर्घकालीन उत्पादन फलन समय की एक लंबी अवधि से संबंधित होता है।

(ii) **परिवर्तनशील साधनों की संख्या** - अल्पकालीन उत्पादन फलन में केवल एक साधन परिवर्तनशील होता है तथा अन्य स्थिर होते हैं जबकि दीर्घकालीन उत्पादन फलन में उत्पादन के सभी साधन परिवर्तनशील होते हैं।

(iii) **उत्पादन का पैमाना** - अल्पकालीन उत्पादन फलन में उत्पादन के पैमाने में कोई परिवर्तन नहीं होता जबकि दीर्घकालीन उत्पादन फलन में उत्पादन के पैमाने में परिवर्तन होता है।

10. पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की तीन विशेषताओं को बताइए ।

उत्तर- पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की तीन विशेषताएं -

(i) **क्रेता तथा विक्रेता की संख्या अधिक** - पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में क्रेताओं तथा विक्रेताओं की संख्या अत्याधिक होती है जिस कारण कोई भी क्रेता या विक्रेता मूल्य को प्रभावित नहीं कर सकता है ।

(ii) **वस्तुओं की समरूप इकाइयाँ** - विक्रेताओं द्वारा बाजार में बेचे जाने वाली सभी वस्तुएं एक समान होती है ।

(iii) **फर्म का स्वतंत्र प्रवेश एवं बहिर्गमन** - पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में कोई भी नई फर्म उद्योग में प्रवेश कर सकती है तथा पुरानी फर्म उद्योग से बाहर निकल सकती है ।

11. सकल घरेलू उत्पाद (GDP) और सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) में क्या अंतर है ?

उत्तर -

सकल घरेलू उत्पाद (GDP)	सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP)
(i) एक लेखा वर्ष में देश की घरेलू सीमा के अंदर उत्पादित सभी वस्तुओं तथा सेवाओं के मौद्रिक मूल्य को सकल घरेलू उत्पाद कहते हैं ।	(i) सकल राष्ट्रीय उत्पाद देश में सामान्य निवासियों द्वारा उत्पादित सभी वस्तुओं तथा सेवाओं का मूल्य होता है
(ii) GDP = GNP - विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय	(ii) GNP = GDP + विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय
(iii) यह संकीर्ण अवधारणा है।	(iii) यह विस्तृत अवधारणा है।

Jharkhandlab.com

12. मुद्रा विनिमय का माध्यम है स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर- मुद्रा के माध्यम से एक वस्तु का दूसरी वस्तु में सरलतापूर्वक विनिमय किया जा सकता है। वस्तु विनिमय प्रणाली में आवश्यकता के दोहरे संयोग का अभाव पाया जाता था। मुद्रा ने इस कठिनाई को दूर कर दिया । आज किसी भी वस्तु को बेचकर मुद्रा प्राप्त की जा सकती है तथा आवश्यकतानुसार वस्तुओं को खरीद सकते हैं। इस प्रकार, मुद्रा विनिमय के माध्यम का कार्य करती है ।

13. प्रभावी मांग से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- प्रभावपूर्ण मांग केन्स के रोजगार सिद्धांत का प्रारंभिक बिंदु है। अल्पकाल में अर्थव्यवस्था में आय, उत्पादन एवं रोजगार का स्तर प्रभावपूर्ण मांग पर निर्भर करता है। प्रभावपूर्ण मांग का निर्धारण समग्र मांग एवं समग्र पूर्ति के द्वारा उस बिंदु पर होता है, जहां यह संतुलन में होते हैं। यह संतुलन अपूर्ण रोजगार संतुलन होता है,यह केवल समग्र मांग एवं समग्र पूर्ति के बीच संतुलन को बताता है ना की पूर्ण रोजगार संतुलन को।

चित्र

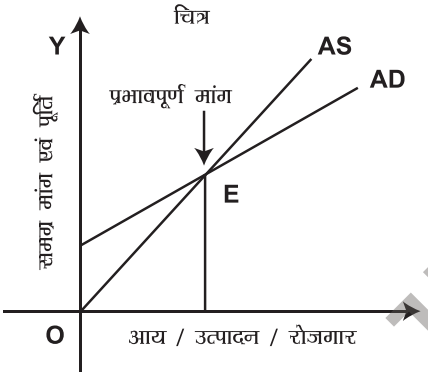

14. सरकारी बजट के उद्देश्य को लिखिए ।

उत्तर- सरकारी बजट के उद्देश्य –

(i) **साधनों का पुनः आवंटन** – जब बाजार अर्थव्यवस्था देश के सामाजिक एवं आर्थिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में विफल हो जाती है , तब सरकार बजट के माध्यम से साधनों का पुनः आवंटन इस प्रकार करती है कि सामाजिक आर्थिक उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके ।

(ii) **आय एवं संपत्ति का पुनः वितरण** – प्रत्येक सरकार समाज में आय एवं संपत्ति के वितरण की विषमता को कम करने के उद्देश्य से बजट के द्वारा आय एवं संपत्ति का पुनः वितरण करने का प्रयास करती है इसके लिए सरकार सामाजिक सुरक्षा , आर्थिक सहायता आदि पर व्यय करने के लिए बजट में प्रावधान लाती है ।

(iii) **आर्थिक स्थायित्व** – आर्थिक उथल-पुथल से आर्थिक विकास पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। अतः सरकार बजट के माध्यम से आर्थिक स्थायित्व लाने का प्रयास करती है और रोजगार के पर्याप्त अवसरों का सृजन करती है।

(iv) **सार्वजनिक उपक्रमों का प्रबंधन** – सरकार सार्वजनिक हित एवं सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए कई उद्योगों की स्थापना की है तथा उनका प्रबंधन एवं नियंत्रण भी करती हैं । इन सबों के सफल संचालन एवं प्रबंधन के लिए बजट में प्रावधान किए जाते हैं ।

खंड - C

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर (उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में)

15. निम्न तालिका से मांग की कीमत लोच की गणना कीजिए :

वस्तु की कीमत	वस्तु की माँग
8	32
6	42

हल - दिया हुआ है कि,

P = 8

P1 = 6

Q = 32

Q1 = 42

अतः $\Delta P = P - P1 = 8 - 6 = 2$

$\Delta Q = Q - Q1 = 32 - 42 = -10$

हम जानते हैं कि,

कीमत लोच $(Ed) = -\frac{P}{Q} \times \frac{\Delta Q}{\Delta P}$

सूत्र में संबंधित मान रखने पर,

$Ed = -\frac{8}{32} \times \frac{(-10)}{2}$

या, Ed = (-) 0.25 x (-5)

या, Ed = 1.25

या, Ed > 1

इस प्रकार, कीमत लोच; इकाई से अधिक अथवा सापेक्षिक लोचदार है। उत्तर

16. परिवर्तनशील अनुपात के नियम की तीन अवस्थाओं को बताइए।

उत्तर- अन्य बातें समान रहने पर, परिवर्तनशील अनुपात का नियम यह बतलाता है कि अन्य साधन को स्थिर रखकर एक साधन में निरंतर वृद्धि की जाती है तो उत्पादन एक सीमा तक बढ़ने के पश्चात घटने लगता है।

यह अल्पकालीन उत्पादन फलन से संबंधित होता है।

प्रो० बेन्हम के अनुसार - "उत्पादन के साधनों के संयोग में एक साधन का अनुपात जैसे-जैसे बढ़ाया जाता है वैसे-वैसे एक बिंदु के बाद उस साधन का सीमांत और औसत उत्पाद घटता जाता है।" यह परिवर्तनशील अनुपात का नियम को बतलाता है।

नियम की मान्यताएं -

i) उत्पत्ति का अन्य साधन स्थिर तथा एक परिवर्तनशील है।

ii) स्थिर साधन अविभाज्य होते हैं।

iii) परिवर्तनशील साधन की समस्त इकाइयां समरूप होती हैं।

iv) तकनीकी स्तर में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

परिवर्तनशील अनुपात के नियम की मुख्यतः तीन अवस्थाएं होती हैं, जिसे निम्नांकित चित्र द्वारा दर्शाया जा सकता है -

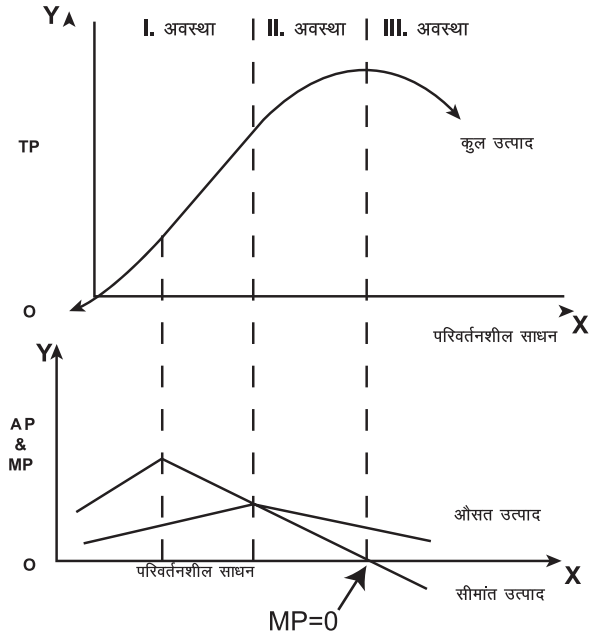

Jharkhandlab.com

A) **बढ़ते प्रतिफल की अवस्था** - प्रथम अवस्था में स्थिर साधन के साथ जैसे-जैसे परिवर्तनशील साधन की इकाइयों में वृद्धि की जाती है, हमें बढ़ता हुआ उत्पादन प्राप्त होता है। परिवर्तनशील साधनों में वृद्धि होने पर स्थिर साधनों का पूर्ण विदोहन संभव होता है परिणाम स्वरूप आरंभ में कुल उत्पाद, औसत उत्पाद तथा सीमांत उत्पाद तीनों बढ़ते हैं। अतः इस अवस्था को बढ़ते प्रतिफल की अवस्था कहा जाता है।

B) **घटते प्रतिफल की अवस्था** - द्वित्तीय अवस्था में औसत उत्पाद तथा सीमांत उत्पाद दोनों घट रहे होते हैं किंतु धनात्मक होते हैं। इस अवस्था का समापन बिंदु उस बिंदु पर होता है जहां कुल उत्पाद अधिकतम एवं सीमांत उत्पाद शून्य होता है, परिणाम स्वरूप कुल उत्पाद बढ़ता है किंतु घटती दर से बढ़ता है। अतः इस अवस्था को घटते प्रतिफल की अवस्था कहा जाता है।

C) **ऋणात्मक प्रतिफल की अवस्था** - तृतीय अवस्था में सीमांत उत्पाद शून्य से कम अर्थात ऋणात्मक हो जाता है, जिसके कारण कुल उत्पाद घटने लगता है। इस अवस्था में औसत उत्पाद भी घटता है किंतु धनात्मक होता है। घटती कुल उत्पादकता तथा ऋणात्मक सीमांत उत्पादकता के कारण इस अवस्था को ऋणात्मक प्रतिफल की अवस्था कहा जाता है।

उपर्युक्त तीनों अवस्थाओं के कारण इस नियम को 'परिवर्तनशील अनुपात का नियम' अथवा 'उत्पादन का घटता बढ़ता नियम' के नाम से जाना जाता है। इसे उत्पत्ति ह्रास नियम का आधुनिक दृष्टिकोण भी कहा जाता है।

17. एकाधिकार बाजार में मूल्य निर्धारण कैसे होता है ?

उत्तर- एकाधिकार, बाजार की वह स्थिति है जिसमें किसी वस्तु अथवा सेवा का एकमात्र उत्पादक एवं विक्रेता होता है। निकट स्थानापन्न के अभाव के कारण उद्योग में अन्य फर्मों के प्रवेश पर कड़ा प्रतिबंध होता है।

एकाधिकारी बाजार में वस्तु का एक अकेला उत्पादक होने के कारण फर्म तथा उद्योग में कोई अंतर नहीं होता अर्थात एकाधिकार में फर्म ही उद्योग है अथवा उद्योग ही फर्म है। एकाधिकारी बाजार दशा में वस्तु का एक अकेला विक्रेता होने के कारण विक्रेता का वस्तु की पूर्ति पर पूर्ण नियंत्रण रहता है।

- **एकाधिकार बाजार में मूल्य निर्धारण** -

एकाधिकार में मांग वक्र ऋणात्मक ढाल वाला होता है। एकाधिकारी के लिए सीमांत आगम, औसत आगम से कम (MR < AR) होता है। एकाधिकारी पूर्ण प्रतियोगिता के उत्पादक की भांति कीमत-प्राप्तकर्ता नहीं होता बल्कि कीमत-निर्धारक होता है। एकाधिकारी किसी वस्तु का मूल्य तथा उस वस्तु की पूर्ति दोनों को एक साथ नियंत्रित नहीं कर सकता है, यदि वह वस्तु की बिक्री को बढ़ाना चाहता है तो उसे कीमत कम करनी पड़ेगी। इस प्रकार, एकाधिकारी बाजार में मूल्य निर्धारण स्वयं एकाधिकारी करता है।

18. राष्ट्रीय आय की गणना की आय विधि और उत्पाद विधि का वर्णन कीजिए

उत्तर- किसी देश की अर्थव्यवस्था द्वारा एक वित्तीय वर्ष के दौरान उत्पादित अंतिम वस्तुओं व सेवाओं के शुद्ध मूल्य के योग को राष्ट्रीय आय करते हैं इसमें विदेशों से अर्जित शुद्ध साधन आय भी शामिल होती है।

राष्ट्रीय आय का लेखांकन संबंधी अवधारणा सर्वप्रथम साइमन कुजनेट्स महोदय द्वारा प्रतिपादित की गई है। राष्ट्रीय आय के मापन हेतु तीन प्रमुख विधियों का प्रयोग किया जाता है, ये विधियां हैं-

A) आय विधि,

B) उत्पादन विधि तथा

C) व्यय विधि।

राष्ट्रीय आय की गणना की आय विधि -

- आय विधि के अंतर्गत राष्ट्रीय आय की गणना उत्पाद कारकों के लिए भुगतान के आधार पर किया जाता है।
- राष्ट्रीय आय की गणना के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों तथा व्यवसायिक उपक्रमों की शुद्ध आय का योग प्राप्त किया जाता है जो कि सभी उत्पादन साधनों की आय का योग होता है। इस योगफल को घरेलू आय कहते हैं। यदि इस योग में विदेशों से अर्जित शुद्ध साधन आय को जोड़ दें तो वह राष्ट्रीय आय बन जाती है।

आय विधि से राष्ट्रीय आय की गणना का सूत्र निम्न है -

राष्ट्रीय आय = मजदूरी + लगान + ब्याज + लाभांश + अवितरित लाभ + निगम लाभ कर + सार्वजनिक क्षेत्र का अवशेष + मिश्रित आय + विदेशों से अर्जित शुद्ध साधन आय।

राष्ट्रीय आय की गणना की उत्पादन विधि -

- इस विधि को वस्तु-सेवा विधि भी कहा जाता है। इसके अंतर्गत यह गणना किया जाता है कि अंतिम उत्पाद में प्रत्येक उद्योग ने अलग-अलग क्या योगदान दिया है।
- इस विधि के अंतर्गत किसी देश में एक वित्तीय वर्ष में उत्पादित अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं का मूल्य बाजार मूल्यों पर ज्ञात किया जाता है।
- इस प्रकार उत्पादन विधि के अंतर्गत राष्ट्रीय आय की गणना किसी देश में एक वर्ष में उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य बाजार मूल्य पर किया जाता है।

इस विधि से रास्ट्रीय आय की गणना का सूत्र निम्न है-

राष्ट्रीय आय = बाजार कीमत पर (प्राथमिक क्षेत्र + द्वितीयक क्षेत्र + तृतीय क्षेत्र) द्वारा मूल्य वृद्धि + विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय - घिसावट व्यय - शुद्ध अप्रत्यय कर

19. संतुलित बजट, आधिक्य बजट तथा घाटे के बजट की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- बजट एक वित्तीय वर्ष में सरकार के आर्थिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है। इसके अंतर्गत सरकार के समस्त आय-व्यय का अनुमानित विवरण होता है। यह देश की आर्थिक स्थिति एवं सरकार की प्राथमिकताओं का सूचक होता है।

बजट के प्रकार को मुख्यतः दो भागों में बांटा जाता है -

A) संतुलित बजट तथा

Jharkhandlab.com

B) असंतुलित बजट।

आधिक्य बजट तथा घाटे का बजट असंतुलित बजट के मुख्य दो प्रकार हैं।

◊ **संतुलित बजट -**

संतुलित बजट वह बजट है जिसमें किसी वित्तीय वर्ष में सरकार की आय तथा व्यय दोनों बराबर होते हैं। अर्थात,

संतुलित बजट : सरकार की आय = सरकार की व्यय

संतुलित बजट का आर्थिक क्रियाओं के स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इसके कारण ना तो संकुचनकारी शक्तियां काम कर पाती हैं और ना ही विस्तारवादी शक्तियां काम कर पाती हैं।

◊ **आधिक्य बजट -**

आधिक्य बजट वह बजट है जिसमें किसी वित्तीय वर्ष में सरकार की अनुमानित आय, सरकार के अनुमानित व्यय से अधिक होती है। अर्थात,

आधिक्य बजट : सरकार की अनुमानित आय > सरकार का अनुमानित व्यय

आधिक्य बजट को अतिरेक बजट अथवा बचत का बजट भी कहा जाता है। यह असंतुलित बजट का एक मुख्य प्रकार है।

◊ **घाटे का बजट-**

घाटे का बजट वह बजट है जिसमें किसी वित्तीय वर्ष में सरकार की अनुमानित व्यय, सरकार के अनुमानित आय से अधिक होती है। अर्थात,

घाटे का बजट : सरकार की अनुमानित व्यय > सरकार का अनुमानित आय

यह परंपरागत बजट का ही स्वरूप है। आधुनिक युग में प्रायः सभी अल्पविकसित देश घाटे के बजट का प्रयोग करते हैं, क्योंकि उनके व्यय, आय की तुलना में अधिक हैं।

भारत जैसे विकासशील देश में घाटे का बजट एक अनिवार्यता हो जाती है क्योंकि इससे मुद्रा का अतिरिक्त प्रवाह उपलब्ध होता है।

Jharkhandlab.com

jharkhandlab.com

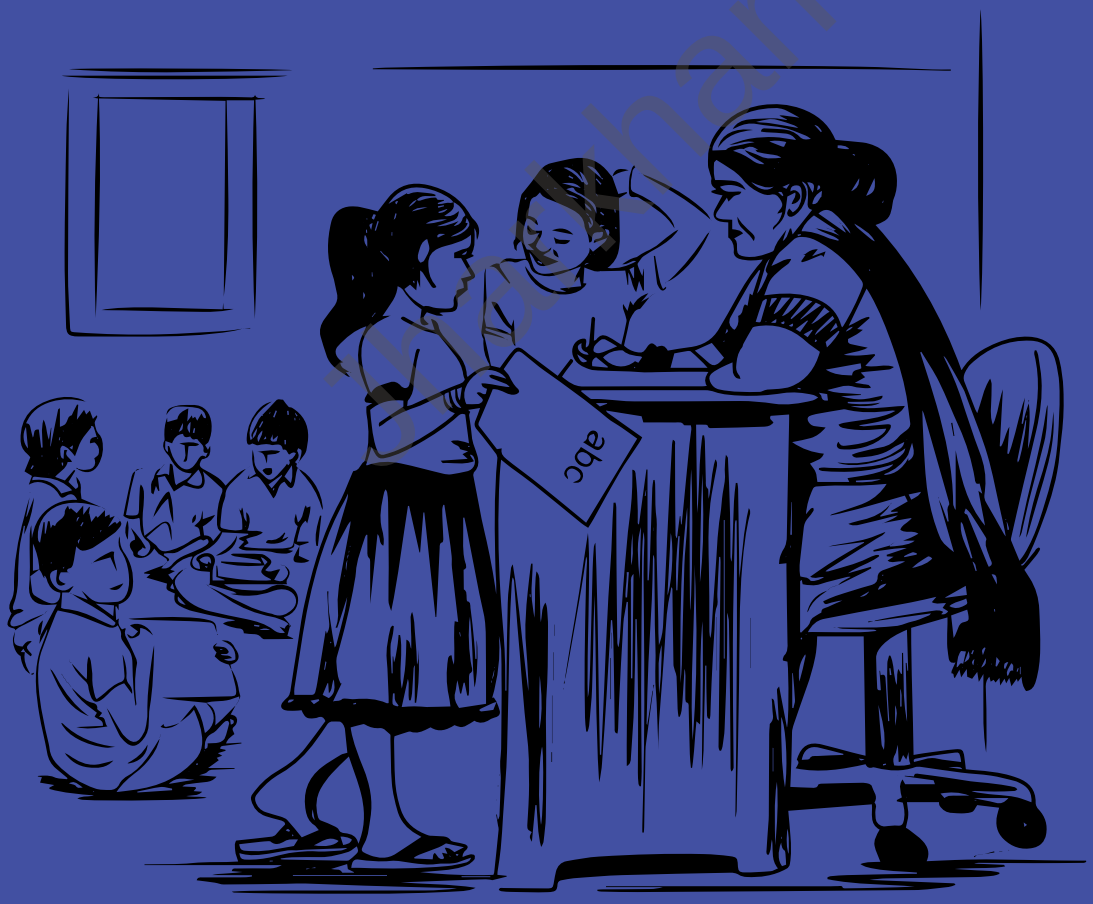

झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi